श्री
माधव
चंचलाक्षी

श्री माधव चंचलाक्षी
प्रथम प्रकाशन 1996

मूल्य: **50.00** रुपये

प्रिंटर्स
एलीगेंस एडवरटाइज़र्स एण्ड प्रिंटरस
505, शिव मार्किट, अशोक विहार, फेज़-I , दिल्ली-110052

लेज़र टाईपसेटिंग
फ्लैश फोटोकम्पोज़रस
37, वज़ीर पुर कमर्शियल कॉम्पलेक्स, दिल्ली-110052 • फोन: 7249527

जय श्री बिहारी जी की॥
जय श्री बिहारी जी की॥

श्री माधव चंचलाक्षी

श्री हरिमोहन मालवीय जी
को
सादर भेंट
कौशलेन्द्र बली
06/08/2000

कौशलेन्द्र बली

ारनन वन्दो सुखदाई

चरनन द्युति बृज मंडल रज अबहिं आज दरसाई ॥

जमुना तट जेहि रमन रेति कन ज्योतिर्गंग बहाई
वन वन कुंजन दूब पुन्य पद तन स्पर्श कराई
जिन चरनन रज यमुना चंचल अविचल सुखद सुहाई
जेहि रस पुन्य कीच गलियन बसि छवि आनन्द मिलाई

परम पुन्य पावन नित हरि चरनन वन्दो सुखदाई ॥

बाल रूप जिन चरन कमल गहि हरि चूसन मुख लाई
जिन चरनन नित पैंजनि झनझन यसुदा चित्त चुराई
धरि धरि चरन ग्वाल कंध जेहि माखन ग्वालि चुराई
जिन चरनन धरि नृत्य ताल हरि कालिय फन हरसाई

उमंग प्रतिरूप तरंगित हरि चरनन वन्दो सुखदाई ॥

जेहि पद चाप सुनत हिय विस्मित राधा चेत कराई
चरन चरन मिलि नृत्य कर्‌यो दुई हरि राधा हुलसाई
जिन मृदंग ताल हरि नाचत धरती चरन धराई
जेहि पद पैंग जोर भरि श्री हरि राधा झूलि झुलाई

प्रीत प्रतीत पयोनिधि हरि चरनन वन्दो सुखदाई ॥

जेहि पद बाँक भंग अंग धरि हरि त्रिभंग हुलसाई
जेहि पद परम प्रेम पथ चलि चलि सुषमा गंग बहाई
जेहि पदकमल कमल छवि लाजै रसिकन भ्रमर बनाई
चरन कमल जेहि बन्दि बन्दि हरि प्रगट रूप दरसाई

परम अनंदित "कौशल" हरि चरनन वन्दो सुखदाई ॥

२

परम रूपमय विश्व विमोहिनि
गौर अंग चंचल छवि कामिनि
ज्योति अंग झंझावत दामिनि
स्वयं प्रभा नव रस उन्मादिनि
अनुपम श्री छवि शरणं शरणं मधुराकृति राधा श्रृंगार ॥
इन्दु ज्योत्सना वदन विलासिनि
ज्योतिर्गंग निरंतर पावनि
सुषमा आदि रूप शुचि भामिनि
लावण्य शक्ति द्रुत कर्षण मोहिनि
ललितम् श्री छवि शरणं शरणं मधुराकृति राधा श्रृंगार ॥
अनुपम् रूप श्रृंगार विमोहिनि
केसर, चंदन, सुमन तरंगिनि
सलज मंद संकोच सुहासिनि
खंजन शावक चपल विलोचनि
"कौशल" श्री छवि शरणं शरणं मधुराकृति राधा श्रृंगार ॥

चरन गहौं राधे सुकुमारी

बरसाने जिन चरन धूलि महि, हिय रस रसिक सुखारी।।

जिन चरननि बसि इन्दु ज्योत्सना, बृज वन भरत उजारी

जिन चरननि गहि श्याम सफल मन, नाचत भुवन बिहारी.

ऐसो दुर्लभ अमिय गंग रस, चरन गहौं राधे सुकुमारी।।

जिन चरननि बसि पैंजनि चंचल, हिय तरंग सुखकारी

मधुर धंटिका मंद मंद स्वर, नाचत अंग बिहारी

ज्यौं हिमगिरि छुई प्रथम किरन रवि, शुभ उजियारि निखारी

त्यौं चरननि जिन गौर लालिमा, मोहन हृदय उजारी

ऐसो पावन परम पुन्यमय, चरन गहौं राधे सुकुमारी।।

जिन चरननि इठलनि द्रुत ड़ोलनि, सरसिज लजत निहारी

जिन चरननि रसपान मधुर रस, हरि रस रसिक सुखारी

जिन चरननि हरि नित करि सेवा, पावत भीख भिखारी

जिन चरननि मिलि कॉन्ह चरन दुई, नाचत थिरकि बिहारी

ऐसो परम भाग्य मन "कौशल", चरन गहौं राधे सुकुमारी।।

चलु सखि नंद यशोदा द्वारे

सोवत जँह घनश्याम लाड़लो, नयन उनींद मूँदि मतवारे।।

ज्यौं प्रभात थिर नील सरोवर, अलसत पंकज पंख सुखारे

तैसो ही पलकन हरि नयना, चंचलता बसि बंद किँवारे।।

नहिं चंचल छवि रूप मोहिनी, थिरकनि पुलकनि चरन सुखारे

नहिं पल पल स्वर वाँसुरि निर्झर, नहिं रुनझुन पद नूपुर प्यारे।

नाँहि सुहाय सान्त रूप बृज, बिन हलचल छलबल रसधारे

चलु सखि श्याम जगावहिं निंदिया, भोर भयो अब उठहिं पियारे।

फिर ते मचे उधम्म चौकड़ी, झूँमि नचैं नयना कजरारे

फिर ते मधुर चलन इठलावन, "कौशल" नचैं कृष्ण मतवारे।।

भोर भयो अब उठहु कन्हाँई

सांत सरोवर लहरि उठत अब, हिलि मिलि कमल गुच्छ मु

और और रस पवन बहत नभ, औरे मंद गंध बरसाहीं

पंछी उड़त छुअत नभ पल पल, रस संगीत मधुर स्वर ग

गैया जागि हुँकार भरत नव, बछुही उदरि दौरि पुलकाहीं

पंख झारि अब उठ्यौ मयूरी, नाच्यो मोर पंख फहराई।।

पूरब रंग कछु गौर साँवरो, नव अनंद पुलकित अमराई

जागहु "कौशल" परम लाड़लो, खोलहु नयना कुँवर कन्

३

जागहु मदन गोपाल आदि छवि
संसृत करहु सृंगार
भोर नाद उन्माद चेतना
नूतन सबहिँ तैयार ॥
नव प्रकाश भरि सृजन सरोवर
तरल तरंग अपार
अरुन कमल सौं दिनकर जाग्यो
क्षितिज प्रबुद्ध प्रसार ॥
नूतन नव पल्लव चहुँ जाग्यो
बसत बसंत बहार
चेतन ते नव जीवन जाग्यो
जाग्यो नवल उद्‌गार ॥
उत्कंठित अनुराग भाव नव
ठहरि विलोकत द्वार
आतुर बाट जोहती अँखियाँ
तुम्हँरी ओर निहार ॥
त्यागि योगनिद्रा तुम जागहु
करहु रूप विस्तार ॥
आकर्षन "कौशल" छवि कर्षण
नँचहु नचावनहार ॥

४

जागहु श्री गोविंद आदि कवि स्वर आनंद विहार
नवल कल्पना लहरि चेतना भोर नाद झंकार ॥
जागहु प्रथम छंद अन्दोलन पावन रस उद्गार
स्वर लय कम्पित संसृत झंकृत नव उन्माद निखार ॥
जागहु रूप आदि छवि निर्झर अंग रंग चितकार
नव सुषमा छवि कर्षण मंथन अलंकार श्रृंगार ॥
उठहु श्याम बृजराज लाड़लो जाग्यो प्रकृति निखार
नव आदित्य कमल दल प्रमुदित अमिय गंग विस्तार ॥
बाट जोहतो थम्यो कल्पना चेतन ठहरि निहारि
जागि मुरलि धुन टेरि नचावहु "कौशल" मद रस धार ॥

५

उद्भव नवल छन्द आनन्द
ज्यौं ज्यौं हरि जगि नयन उघारन
आदि कल्पना थिरकि तरंग ॥
प्रथम कल्पना आदि भाव रस
उद्गम छवि अनुराग उमंग
नव अनुभूति आदि जल कलकल
चंचल चेतन चलित तरंग ॥
नवल शब्द गुन्थन रस "कौशल"
उतरि चढ़न बहि गंग उद्दंग
लय प्रवाह रस माधुरि निर्झर
अलंकार लालित्य उमंग ॥
भोर नाद आह्लाद नृतन मन
थिरकन मृदुल छन्द सानन्द
पुलकन पलपल मोहन चंचल
जागि कल्पना तीर तरंग ॥

६

प्रकृति अंग चेतन उजियारी
श्री हरि नृत्य करन ते पहिले, पूरब दिसि मार्‌यो पिचकारी ॥
हरि आह्लाद लास उत्साही, प्रकृति उमंगित अंग सँवारी
स्वर श्रुति झंकृत पवन झँकोरन, भोर नाद उल्लास हुँकारी ॥
झूल्यो पवन हिँड़ोरे पंछी, चंचल लय पल पल किलकारी
हरसिंगार छवि छिटकि सुमन वन, रंग भूमि हरि नृत्य सँवारी ॥
हरि पद छुअन आस भरि अन्तर, नव तुषार चढ़ि दूब कगारी
"कौशल" मुसकनि पुहुप प्रफुल्लित, हरि उमंग नृत करऱ्यो तैयारी ॥
सुरभित चंचल पवन हिँड़ोले, हरि झूलनि रस टेरि पुकारी
जागहु मोहन नाचहु वन वन, नव चेतन पुलकित उजियारी ॥

७

भोर नाद सुनि जग्यो श्याम हरि
परम प्रफुल्लित नयन मुखाकृति अंग अंग उत्साह मधुर छवि ॥
नव उमंग हिय केलि कलोलन ज्यों ज्यों अम्बर उठ्यो बाल रवि
नव श्रृंगार नव हृदय कल्पना जाग्यो भावुक परम रसिक कवि ॥
नव मृदंग मुरली स्वर झंकृत नवल लास नव नृत्य अंग हरि
नव कटाक्ष हरि रूप रिझावन "कौशल" तन्मय मधुर रूप छवि ॥
नव अनुराग उमंग चेतना नव श्रुति लय अनुरूप लास करि
वन वन कानन नच्यो अनंदित आज भोर ते नृत्य बस्यो हरि ॥

८

भोर भयो हँसि जागि कन्हाँई
अलसि कमल कजरारी अँखियाँ बदन उँनींद भरत अँगराई ॥
जलज नयन हरि जलज मुखाकृति जल भरि अंजुरि धोवत माँई
छोटो पाग बसंत काछनी अंग अंगरखा मातु धराई ॥
पीत वसन पग नूपुर झंकृत क्षुद्र घंटिका शब्द लुभाई
बाजुबंध मोतिन लघु माला कानन कुंडल सहज सुहाई ॥
चंदन केसर तिलक लगावन मोर पंख लघु आनन लाई
यसुदा माँई सज्यो सँवरिया निखरो अंग अंग तरुनाई ॥
ललित रूप हरि अनुपम सुन्दर छवि उमंग सागर लहराई
बाल श्रृंगार निरखि छवि "कौसल" यसुदा मोँह्यो कुँवर कन्हाँई

९

प्रमुदित हृदय उमंग अंग हरि नवल कमल सजि सुन्दर झाँकी
नील श्वेत छवि उज्वल निर्मल अरुन पीत नव पंकज बाँकी ।।
घनो बेलि चहुँ अगनित सरसिज व्यापो सौम्य ज्योति छवि जार्क
स्वयं प्रभा दिव्य योगेश्वर तेहि के मध्य आदि अविनासी ।।
कमल नयन कर कमल मुखाकृति अरुण पद्म पद नवल प्रभासी
बाँको पाग श्रृंगार कमलदल पंकज कुण्डल चपल विलासी ।।
धवल कमल नव पुष्पमाल उर कटि पर कमल मेखला जाकी
कंगन सरसिज, चंचल मनसिज, नूपुर कंज घंटिका बाँकी ।।
पद्म सहस्त्रदल दिव्य छत्रधर पद्मपाणि छवि उज्जवलता की
शुभ्र कमल पर चरण कमलधर त्रिगुण त्रिभंग अंग अविनासी ।।
पद्म अधरधर वेणु मधुर स्वर नाद आदि कम्पन उद्भासी
बाँक अधरदल अरुन रेख नव कमल हास मुसकान सुधासी ।।
सुषमा मुक्त विलासित "कौशल" हरि सुन्दर हरि सुन्दर झाँकी
जनम लेन ते पहिले इन्द्रिय दिव्य लोक प्रगटे अविनासी ।।

१०

झननि झननि झन पैंजनि बाजत
लय ठुमकनि सुकुमार
पद अम्बुज लघु पग पग ड़ोलन
ललित चपल लरिकारि ॥
वदन कारि उज्ज्वल अरुनाई
हरि पद ललित अकार
नील कलिन्दी जल ज्यौं लहर्यो
अरुन कमल उजियारि ॥
पदरव मुखरित मोहिनि अविरल
बालक कृष्ण बिहारि
ताल ताल हरि नव प्रयास करि
नाचन चहत खिलारि ॥
नाचत कृष्ण नचावत मैंया
बार बार किलकारि ॥
पैंजनि धुनि रव थिरकनि "कौशल"
झन झन झनि झंकार ॥

११

आज सुनी रुनझुन सुखदाई
मंद चेतना कम्पन पलपल हरि पद पैंजनि सरस सुहाई॥
लघु पदचाप बाल कवि थिरकनि अन्तर हिय आह्लाद नचाई
तेहि संग छुद्र घंटिका रुनझुन चेतन बावरि कियो सवाई॥
नाचन चहत छोट पग थिरकन पल पल पद इत उत परि जाई
जैसो हरि हिय बाल कल्पना तैसो नहिँ पद चलत कँन्हाई॥
नृत असंग संग रुनझुन अंतर रुकि रुकि बजत बनत बिगराई
"कौसल" हिय आह्लाद चेतना हरि चरनन संग लहरत जाई॥

१२

लसि धूलि रंग श्री बाल अंग
        द्युति श्याम संग उजियारी की जै जै
अंतर उछंग हरि ललकि अंग
        मुसकनि सुढंग किलकारी की जै जै
नैना उमंग अवलोकि गंग
        लोचन तरंग निरखारी की जै जै
धावन सुढ़ंग कलकल तरंग
        ठुमकनि सुअंग लयकारी की जै जै॥
यसुदा उछंग छवि देखि दंग
        हरि रूप रंग बलिहारी की जै जै
गोपिन सुअंग दर्सन उमंग
        पुलकित अनंग मनहारी की जै जै
रसिकन अनंद लखि बाल अंग
        मुख गोल संग टुनिहारी की जै जै
"कौशल" तरंग लालित्य गंग
        उन्मुक्त रंग रिझवारी की जै जै॥

१३

छवि श्यामल सुन्दर रूप अलंकृत केस लटैं लय घूँघरवारी
दुई नैन बड़े मुसकान भरे हरि गोल मुखाकृति शोभनकारी
हरि कंठ मैं कोकिल केलि करे किलकारि कलोल विमोहनकारी
अधरान पे मुसकनि चारु सुधा रुक जाय कबहुँ छवि छिटकनवारी॥
कर कंगन झंझन मंद बजे पग छोटो पैंजनि झंझनवारी
हरि कंठ पे झूलि नचे थिरके नख केहरि माला मोतिनधारी
सिर पाग बनी लघु रूप छबी तेहि सारंग पंख विमोहनकारी
छवि देखत "कौशल" नाचि उठे हरि वेष बाल सुन्दर सुखकारी॥

१४

सखि हरि देखहु सुन्दरताई
जो कछु बुधि मन नयन परे ते, प्रकट आज दरसाई ॥
नयन उघारे नयन मूँदि जेहि, सुन्दरता उलचाई
सुषमा सागर रूप मोहिनी, गागर भरि ढ़रकाई
जेहि अरूप अनुभूति चेतना "कौशल" मन मड़ँराई
तेहि अनंद अह्लाद आदि छवि, प्रगट अंग दरसाई॥
जेहि सुषमा संसृष्टि सृजन नित, सकल सृष्टि बौराई
कन कन अंतर पल पल नर्तन, लघु विसाल भरमाई
गंग अंग हिम तुंग विराजत, नव प्रभात हुलसाई
तेहि लावण्य ज्योति छवि निर्मल, प्रगट आज दरसाई॥
जेहि छवि परे कल्पना सागर, मानस पकरि न पाई
जेहि संगीत झननिझन निर्झर, कलकल हृदय समाई
जेहि सुंदरता सुषमा दीन्हीं, रूप को रूप बड़ाई
सर्वरूप तेहि परम रूपमय, जेहि जसुदा के जाई॥

१५

कीन्हो चपल मधुर रस पान ॥
सुन्दर रूप सुलोचन चंचल
नयनन भाव अलोकन चंचल
मादक सरल प्रलोभन चंचल
चंचलता रसखान ॥
कानन कुण्ड़ल ड़ोलन चंचल
ड़ोलन झाँई कपोलन चंचल
गोलहिँ गाल सुकोमल चंचल
निश्छल लजत अजान ॥
कोमल अधर मनोहर चंचल
हर्षित तरल सरोवर चंचल
छलकत प्रीत पयोधर चंचल
मदन मंद मुसकान ॥
मोर मुकुट दल पल पल चंचल
लहरत फहरत अंचल चंचल
नूपुर गुंजन हलचल चंचल
चंचल मुरली तान ॥
देख्यो हरि नर्तन जब चंचल
रूप रासि छवि पायो "कौशल"
चंचल रूप धर्यो जब अविचल
चंचल चित्त उफान ॥

१६

लखि न सकौं हरि सुन्दरताई
कहाँ दीठि यहि परम पराक्रम जिन असीम छवि नयन समाई ॥
कहाँ कल्पना अकथ सरोवर नयन सीप छवि भरन न जाई
"कौशल" परम ज्योति जगत छवि, पल पल नयन पकरि नहिँ पाई ॥
अंग अंग हरि मनज मनोहर, केवल रूप रूप समुदाई
छवि लावण्य रूप रस बूँदन, छिटकि छिटकि अंतर मंड़राई ॥
दिव्य दृष्टि यहि नयन देहु हरि लखहुँ रूप पूर्ण प्रभुताई
अरु लघु रूप प्रगट अंग छवि नयन बसहु लघु कुँवर कँन्हाई ॥

१७

संसृत सुषमा छलकि छलकि रस आज बनी हरि सुंदर झाँकी
रसिकन को अनुराग बढ़्यो लखि मादक चपल ज्योति अविनासी ॥
केसर तिलक भाल सम्मोहन ज्योति पुंज ज्यौं प्रगट प्रकाशी
नयन वाण चढ़ि भ्रकुटि सरासन हृदय भेदि व्यापो अविनासी ॥
सलज कपोल गोल द्युति चंचल अधर सरल मुसकान सुधासी
सुधड़ नासिका चिबुक चारुतम कानन कुण्ड़ल प्रगट प्रभासी ॥
लहरत पीरो पाग लहरिया टेड़ो मोर पंख छवि बाँकी
पीरो फैंटि बाँध कटि पटका "कौशल" पुष्प माल दुति जाकी ॥
सकल सृष्टि छवि सघन समोहित सुषमा प्रगट रूप रस रासी
हरि की बाँकी सृंसृत झाँकी, झाँकि झाँकि तेहि देखहु झाँकी ॥

१८

हरि दर्सन को लाग्यो भीर
उमगत सब उमंग रस मादक अंतर अनत अधीर ॥
कोऊ कहत श्याम है ऐसो सुन्दर सहज सरीर
कोऊ नटवर चंचल नटखट, बाल रूप बलबीर ॥
लखत अनत छवि दिव्य रूप हरि, अमित अखण्ड गम्भीर
कोऊ निमिश विलोकत हरि छवि, पल पल चपल सरीर
नयन एकटक देखि अटकि दृग, पियति अमिय रस नीर
कोऊ सबहिँ समर्पित तनमन, कर्षन खिँचत अधीर ॥
कोऊ कहत मोँहि सौ है के, झाँकहु पुलक सरीर
जैसो कह्यो श्याम है वैसो, सुंदर सहज अहीर ॥
एक छोर लुकि सकुचि मनहिँ मन "कौसल" झाँकत भी
हरि दृग कृपा कटाक्ष पाय हिय, पल पल पुलक सरीर ॥

१९

सुन्दर सजग सुहावनो, शोभित सहज शृंगार
मधुर अंग उन्माद छवि, मंमद कृष्ण बिहारि ॥
मधुर अंग कटि काछनी, कुसुम कदम उर हार
तुलसि माल पद भृगु ललित, कौस्तुभ हृदय निर
संसृति सुषमा सिमटि छवि, बृज झर निर्झर धार
एक अंग हरि अंग लखि, प्रगट विलोकहु पार ॥
यहि छवि नहिँ नयनन भरी, नयन विलोकनि हा
देखि देखि हरि अंग छवि, जीवन जीव सुधारि
छोटो सौँ दृग वापुरो, छोटो दीठि निहारि
कहाँ कहाँ छवि देखि हरि, "कौशल" कृष्ण बिहारि ॥
ना जानो अनुपम नयन, कितनो रसिक उजारि
छलकि छलकि छवि अमिय रस, पियत छकित
ऐसो बानक मोहिनी, मोहिनि तेज प्रहार
गिरत, भरत, छकि छकि उठत, देखि अंग अवतार ॥

२०

कैसो अंग रूप सखि साँवरि
नयन परे ते पहिरे जेहि छवि, हिय अंतर करि बावरि ॥
कैसो अंग रंग सुघराई, केहि श्रृंगार नट रूप उजागरि
बहुत सुन्यो जेहि सुन्दरताई, देखि समय नहिँ देख्यो साँवरि ॥
हृदय बावरो कह्यो नयन सौं, खोजहु परम रूप छवि सागरि
नयन पर्‌यो छवि पकरि सक्यो नहिँ, पल पल छवि नव उलच्यो गागरि॥
सखि तेहि देखि सक्यो पूर्ण छवि, भरि नयनन "कौसल" बिन बावरि
कहहु कौन छवि नित्य बावलो, कैसो अंग रूप हरि साँवरि ॥

२१

प्रेम रस उजासी यहाँ कुंजन निवासी
अरे कौन् अविनासी जेहि घूम घूम खोजती
जँह सब सुख रासी छवि पूनम प्रभासी
श्री कृष्ण सुषमा सी छवि और नहिँ बूझती
क्यों करे उपहासी तेरी मति गति नासी
हरि नित बृजवासी छवि और नहिँ सूझती
श्री राधा उल्लासी नित परम प्रकासी
रस रसिक हुलासी हिय भरि झकझोरती॥
नव कुंजन हिन्डोली बृजराज छवि झूली
रस पैंगन हिंडोलन श्री राधिका भी झूलती
छवि अंग मतवारी, धानी चुनरि किनारी
गौर रूप को निखारी तरुनाई नित फूलती
लय वेणु मदमाती घूम घूम लहराती
बृज आनन्द डुलाती मन बस करि झूमती
"कौशल" रस रासी प्रेम वस बृज वासी
तेहि हरि को न जानो अविनासी कहाँ ढूँड़ती॥

२२

हरि अंग उजियारी, छवि रूप को निहारी
सखि सुख दुख हारी, तू न बूझती न बोलती
अंग अंग पुलकारी, तन चेतन निखारी
अरी कैसो छविधारी, भरि नैनन निहोरती
हिय आनंद प्रसारी, तन मन सुध हारी
सब रूप को बिगारी, घन केस को मरोरती
हँसि हँसि किलकारी, फिर रोदन दुखारी
कैसो चित ठगकारी मन प्रीत झकझोरती ॥
रस भरि भरि गागर, उलचायो छवि सागर
कैसो रूप नटनागर तू बोल क्यों न बोलती
अनजाने जेहि जानी, बिन यतन लुभानी
तन मन अकुलानी, सखि मुँख क्यों न खोलती
निज आनंद विभोरी, कैसो मन बृज गोरी
सुख नैनन सिकोरी नहिँ खोलती न ड़ोलती
यहि कैसो सुख पायो, नहिँ बाँटन सुहायो
हिय अन्तर छिपायो, मन मन कलकोरती ॥

२३

गोरी नयन चख्यो रूप हरि
नयन मिल्यो तेहि नयन अर्‌यो हरि, अंतर नयन नयन एक छवि ॥
सोवत उठत जागते अंतर हिय कल्लोलन चपल नयन छवि
नयन उघारे नयन चहूँ छवि, नयन मूँदि पल लख्यो नयन हरि ॥
सखि केहि रूप लख्यो तेहि मोहन, कैसो रूप अकार अंग भरि
मोसो है के नयनन देखहु, नहिँ नयनन कछु और रूप हरि॥
कहाँ रह्यो इतनो दिन साँवरि, "कौसल" लख्यो आज रूप छवि
कैसो जियो जियो बिन नयननि नयन अंग रम बिना लखे हरि

२४

ऐसो हिय बावरि कियो, बावरि नयन बिहारि
नहिँ बावरि छवि लखि सकौँ, "कौशल" अंग निखारि ।।
दीठ परत पल पल मुरत, तीखो नयन उजारि
पकरि परत नहिँ रूप हरि, नयन नयन टकरार ।।
केवल हिय अनुभूति छवि, कल्पित अंग अकार
ना जानो कैसो बन्यो, पूर्ण रूप शृंगार ।।
हिय अंतर कल्लोल छवि बिगरत बनत अकार
मंथन हिय दधि प्रगट नहिँ माखन रूप बिहारि ।।

२५

गोरी बूझत को श्यामल हरि
जमुना तट जेहि लख्यो एक पल, नयन मिल्यो छवि बावरि हिय करि॥
नहिँ लखि सक्यो रूप श्याम तन, छायो मोहनि हृदय रंग भरि
जेहि पल सोच कियो हरि देखन, मिल्यो नाहिँ पल कपट छिप्यो छरि॥
तुम देख्यो श्यामल तन "कौशल", कैसो रह्यो अंग सुन्दर छवि
कौन शृंगार कौन छवि माधुरि, कैसो रसिया अमिय छन्द कवि ॥
पल पल पलक परे ते पहिरे जानि पर्‍यो केहि छुयो हृदय छरि
स्वप्न प्रगट केहि प्रगट स्वप्न है, तेहि अंतर बसि नृत्य कर्‍यो हरि॥

२६

रस प्रीत को पुजारी, छवि सुषमा सुखारी
अंग अंग ज्योति न्यारी, बृज खण्ड उजियारी है
अंग अंग तन पावन, नव चेतन सुहावन
छवि गंग मनभावन, सर्वरूप से भी न्यारी है ॥
श्याम अंग पे सुहानो, कंज श्रृंगार मन मानो
"कौशलेन्द्र" ललचानो, न्यारी छवि प्यारी है
रस भरि भरि गागर, यहि नैना उजागर
सारो जग छवि सागर, छलकायो छलकारी है ॥
ज्योति रूप को प्रसारी, चित्त मोहनि सिकारी
हृद कुंजन खिलारी, नित प्रीत को भिखारी है
चित्त चित्त चितकारी, बनि बनि के बिगारी
नित नूतन विचारी, प्रति छन छवि धारी है ॥
वन गोधन हँकारी, धुन बाँसुरि सुखारी
नव आनंद प्रसारी, बनि ठनि बनवारी है
केलि कुंजन खिलारी, कल्लोल किलकारी
ऐसो रूप अवतारी, बृज कानन बिहारी है ॥

२७

सखि नव देखहु सुन्दरताई
कल यहि रूप रह्यो नहिँ हरि जो, अबहिँ आज दरसाई ॥
पल पल पलक परत रस अंतर छिन छिन छनि छवि छाई
एक रूप नहिँ दृष्टि टिकत पल तुरत नवल प्रगटाई ।
कौन रूप हरि कौन भाव छवि कौन रंग उँमगाई
हिय ते अधिक रूप हरि चंचल, पकरि परत नहिँ पाई ॥
रस आनन्द नवल पल चंचल "कौशल" हिय उँमगाई
धन्य दृगन हिय चपल कुतूहल छन छन रस ललचाई

२८

टेड़ो चाल चले भ्रकुटी, हरि नयनन दीठ तिरीछनवारी
अधरान पे टेड़ो केलि करे, मुसकान प्रसन्न अधीरनवारी
सिर सुन्दर टेड़ो पाग बनी, जेहि बाँक सौं फैंट जंजीरनवारी
पग टेड़ो चाल चले मतवारी, टेड़ो गति हरि टेड़ बिहारी ॥
हरि टेड़ो बँतियाँ मंत्र पगी, जेहि बुधि टेड़ नचावनहारी
मुरली स्वर कछु ऐंठ मनोरन, टेड़ो लहर चले मतवारी
टेड़ो पग धरि टेड़ बदन कर, अष्टभंग नाचन लयकारी
टेड़ोपन को टेड़ करे हरि, "कौशल" करतब टेड़ खिलारी ॥

२९

चपल नयन श्याम सुन्दर छवि ॥
कैसो बस्यो अधर मुरलीधर
श्याम श्याम रतनार नयन हरि ॥
अँखियाँ इत उत हरि संग ड़ोलत
देखत अनत अंग रंग धरि ॥
नयन अड़्यो मृदु अनत लाड़लो
श्याम श्याम मोहन मोहिनि हरि ॥
कैसो हिरदय मधुर माधुरी
नयनन हिय ड़ोलत इत उत छवि॥
"कौशल" नयन हृदय भयो लखि
हृदय नयन नयन रूप हरि ॥

३०

नयनन सौं नयनन चली

अमिय गंग रस धार

कौन विलोकत कौन छवि

कैसो रूप निहारि ।।

कौन कहे कैसो कहे

कितनो पकर्‍यो धार

अनत गंग रस रूप छवि

"कौशल" कृष्ण बिहारि ।।

कैसो छवि रिझवान हरि

मुसकनि नयन उजारि

जेहि जैसो घट भरि सक्यो

छलकनि पारावार ।।

भँवर पर्‍यो नयना नच्यो

फँस्यो रूप मजधार

कर्षन बस नाचत नचत

नहिँ बाहरि निकरन द्वार ।।

ऐसो ही निरखत रहौँ

रूप रूप अवतार

नयन विमोहन नयन छवि

अंतर हृदय उतारि ।।

३१

ऐसो बावरि अनारि, तन मन सुधि बुध बिसारि
नयना हरि देखि देखि नयनन सौं बूझती ॥
नयना केहि कहत बोल, इकटकि लखि नयन गोल
नयनन मुसकानि घोलि, नयनन सौं चूमती ॥
नयनन सौं नयन खींचि, नयनन फँसि नयन कीच
नैन ड़ारि नयन बीचि, मथि मथि के घूमती ॥
"कौशल" दृग थकि विलोकि, नयनन गति रोकि रोकि
नयनन को मूँदि मूँदि नयनन को ढूँढ़ती ॥

३२

देखि लेहु हरि नयनन की छवि
अविरल नयन निहारि
जहाँ बसति हरि मोहिनी
कर्षण अंग बिहारि॥
नयन कहहु नयना लखहु
नयन अधिक उजियारि
नयन टिक्यो नहिँ नयन छवि
नयन नयन टकरार॥
"कौशल" नहिँ नयनन चल्यो
हरि नयनन की चाल
ज्यौं ज्यौं चलि चलि पकरि छवि
हरि छवि पहुँचत पार॥
पुनि नयना नयनन अर्यो
नयन न निकरन हार
हरि नयनन सौं देखु अब
हरि छवि रूप निखार॥

३३

देखि लेहु निज नयनन भरि भरि आज अबहिँ जो हरि की झाँकी
फिर नहिँ प्रगट होयगो या छवि मादक चपल ज्योति अविनाशी ॥
हरि मंथन करि सुषमा सागर नव तरंग नव रंग प्रकासी
पल पल अंतर छवि परिवर्तन ज्योति पुंज कम्पन अविनासी ॥
श्री राधा उन्माद प्रेरणा संग नचत नाचत उल्लासी
''कौशल'' नवल भाव मोहनी पल पल प्रणय प्रयास उजासी ॥
नव उमंग रस रूप कल्पना नव श्रृंगार उन्माद विलासी
जेहि छन जेहि छवि पकरि लेहु तेहि गंग अनंत रूप अविनासी ॥

३४

ऐसो हरि नयन ढ़ीट इकटक देखत अनीत
मुसकनि अधरान बंद नयनन सो बोले ॥
नयना नयनन मिलाय, नयना गरुता बढ़ाय
नयनन ही नयनन मैं नयनन को तोले ॥
नयना मग धँसत गोल, हिरदय चंचल कलोल
चढ़ि चढ़ि चेतन हिँड़ोल नयनन छवि ड़ोले ॥
अंतर घुलि बसत नयन, देखत चहुँ नयन नैन
''कौशल'' बृज दिवस रैन, नयनन ही ड़ोले ॥

३५

नयनन मोहन देखि रह्यो मुँहि, नयनन की छवि देखनवारी
नयनन होड़ विलोकन को नहिँ जीत सक्यो अवलोकनहारी
केवल नयन नयन चहुँ देख्यो, अरुन श्याम चंचल उजियारी
''कौशल' मोहिनि नयन बस्यो करि देखन ते पहिरे मतवारी ॥
पकरनि छवि हरि नयनन की नहिँ जानो केहि छवि नयन बसी
छवि मुसकनि की, छवि चंचल सी, अलसत धीर अधीर छबी
छवि तीखो नयन कटाक्षन की, हिय नयनन भेदन जोर चली
छवि दीर्घ सुधीर सुनयनन की, या ठीट अहीर हठील बली ॥

३६

हरि छवि नयनन आनि अड़ी ॥
नयन बस्यो यहि साँवरि सूरत
पलकन बीच खड़ी ॥
जित देखौं हरि डोलन चंचल
मूरति छोट बड़ी ॥
झाँकत हिरदय नयन झरोखे
अँखियाँ बड़ी बड़ी ॥
कैसो देखूँ नयन विलोकनि
नयनन नयन जड़ी ॥
''कौशल'' अब नहिँ और राह कछु
मूँदहुँ नयन घड़ी ॥
जो छवि बसे. बसे हिय अंतर
मोहन श्याम हरी ॥

३७

नयनन मैं मुसकान भरि, खीचँत हृदय निकारि
नयन कूप हिय ड़ालि के, मंथन करत बिहारि ॥
एक बार देख्यो नयन औरे देखन चाह
नयन भँवर "कौशल" फँस्यो, सागर दीठि अथाह ॥
नहिँ औरे कछु देखती, हरि के नयनन देखि
नयन नयन नयना लखैं, लंगर नयनन पैंचि॥
पहिरे सौँ जो जानती, चित्त चुरावत चैन
नयन मूँदि नहिँ खोलती, देखन हरि को नैन ॥

३८

नींद अँधियारी रात कारी ओढ़ि कामरी
सोवत सकोर अंग बोलती न ड़ोलती
"कौशल" सुहानो मधुमास अलसानो अंग
घूम पुरवइय्या भी तरंग संग झूमती
ऐसो अलसानो तन नयन उनींद भरो
सोयो कछु जागो मन चेतन न चूमती
हरि द्वार आयो ते उमंग रास बावरो
टेरि के बुलायो नहिँ चेत आयो आँघती ॥
बोल रस बोल्यो उमगायो चित्त चेतना
नींद ते जगायो रस अधर को चूम चूम
मुरली बजायो हिय बसि लहरायो धुन
कल्पना हिंड़ोरे स्वप्न बार बार घूम घूम
सुरगंध हुलसायो स्वास स्वास लहरायो नेक
तरंगन मृदंग नाचि अंग ताल झूम झूम
उँनींद भरी बावरी न जान्यो आयो साँवरो
भोर पचतायो हरि खोज वन घूम घूम ॥

३९.

क्यौं हरि बाँधि मौंहि पग पैंजनि सोवत कियो शृंगार
भोर उठे धुन मधुर घंटिका झननि कर्यो झंकार ॥
कब हरि रात्रि प्रहर प्रगट छवि खोल्यो अंतर द्वार
स्वप्न गंग धँसि प्रगट रूप धरि सहज चेत ललकार॥
क्यौं धुन मधुर वेणु स्वर बुनि बुनि लहरत पारावार
हृदय कोन बसि मधुर कल्पना अन्तर हाहाकार॥
"कौशल" यहि कैसो रस चंचल केलि करे करतार
सोवत हूँ नहिँ चैन बावरो रसिक मनज अवतार ॥

४०

धुन बाँसुरि सुखारी प्यारे रूप ते भी प्यारी
उतरनि चढ़ि न्यारी बृज व्योम झकझोरती.
चढ़ि पवन हिन्ड़ोरी झूलि तानन मरोरी
मन्द स्वर चलि जोरी मन चेतन को चूमती
सुख दुख रस भूली बृज ग्वालिन सलोनी
शुचि लवंग लता मैं लुकि ललिता भी झूमती
लय नाद झकझोरी धुन कल्पना मरोरी
वेणु स्वर बरजोरी जेहि भोर ते ही गूँजती॥
पल पल लयकारी, चित आनंद सुखारी
नित प्रीत को भिखारी सखि बोलती न ड़ोलती
सुनि गैयन बिचारी, नभ नयन निहारी
धुन धुन पे हुँकारी हरि नाम मुख बोलती॥
घन गगन हिंड़ोले झूलि झूलि कछु बोले
तरु तरु तरुनाई फूल फूल बनि फूलती॥
रस "कौशल" सिखायो कौन मोहन को बाँसुरी
ऐसो मंत्र मोहिनी जो शीश चढ़ि बोलती॥

४१

कर बाँसुरी पियारी
श्रुति स्वर लयकारी
झूम झूम के बिहारी
अधरान रस घोलती ॥
सुनि सुनि मतवारी
बृषभानु की दुलारी
नैन मूँदि के बिचारी
कछु बोलती न ड़ोलती ॥
सब गोपिन कुँवारी
लय नाचत सुखारी
सुध बुध तन हारी
नहिँ और कछु बूझती ॥
बृज गैयन सुखारी
स्वर स्वर पुलकारी
लय लय पैं हुँकारी
कछु और स्वर बोलती ॥
मति "कौशल" बिगारी
हरि छवि कारी कारी
मृदु धुनन निकारी
कैसो श्वेत रंग घोलती ॥
झन झन झनकारीं
फन फन फुफकारी
लय लय ललकारी
नवरस रस ड़ोलती ॥
बहु जतन निकारी
स्वर बाँधि रसधारी
बुनि बुनि धारी धारी
स्वर अग को मरोरती

ऐसो परम पियारी
　　हरि अंतर सुखारी
प्रिय बाँको बिहारी
　　यहि बाँको वेणु बोलती ॥

४२

टेढ़ो सौं हरि बावरो, टेढ़ो अंग श्रृंगार
पंख मोर "कौशल" सज्यो, टेढ़ो मुकुट बिहारि।।
टेढ़ो मुसकनि बावरी, कुंड़ल बाँक निखार
टेढ़ो भ्रिकुटि नचावनौं, टेढ़ो नयन निहारि॥
टेढ़ो कटि ग्रीवा भली; तुलसी सरसिज हार
टेढ़ो पग अगुँली खड़्यो, बाकँ त्रिभंग बिहारि॥
टेढ़ो कटि कसि काछनी, पाग फँट श्रृंगार
टेढ़ो लटकनि नासिका, छवि रस छलकनधार॥
कर मुरली टेढ़ो पकरि, टेढ़ो फूँक बिहारि
टेढ़ो स्वर श्रुति बावरी, सुननिहार मतवार॥

४३

ज्यों मैं झुकि टेढ़ो भयो, लखन रूप अवतार
तुरत और टेढ़ो कियो, अपनो अंग बिहारि ॥
दाँए बढ़ि बाँए झुक्यो, देखन रूप श्रृंगार
चहुँ दिसि ते टेढ़्यो दिख्यो, बाँको कृष्ण बिहारि ॥
घूमि मोरि नयनन लख्यो, नयनन हरि कजरारि
जँह जाऊँ तँह मोड़ि दृग हरि मोंहि टेढ़ निहारि ॥
अंतर छवि टेढ़ो वस्यो कबहिँ न निकरनहार
टेडो काँटा हिय फँस्यो "कौशल" हरि टुनिहार

४४

तन कामरि पसारी
मुख साँवरि निकारी
हरि नैन उजियारी
तेहि झाँकि झाँकि ड़ोलती ॥
माथ "कौशल" सुखारी
ज्योति चंदन उजारी
बूँद बूँद चितकारी
श्याम रूप कलकोरती ॥
रेख काजर विहारी
ज्योति लटकनि पियारी
कंज अधर सुखारी
छवि और स्वर बोलती ॥
गलमाल सुकुमारी
कंज रंग फुलवारी
मिलि मोतिन की धारी
हिलि मिलि अंग ड़ोलती ॥

४५

श्री हरि मेरो एको है एको है माँई ॥
बहुत श्रृंगार सज्यो चातुरी एको कुँवर कँन्हाई ॥
नहिँ पहिचानि पर्‍यो जब गिरधर अँगुरी सृष्टि उठाई
अँखियाँ चकित भई लखि सावन संसृति झूलि झुलाई ॥
फागुन रस जब रंग्यो बावरो चेतन होलि रंगाई
आदि नाद भरि सरल मुरलिया सकल सृष्टि बौराई ॥
सकल जगत करि केन्द्र भूमि बृज सबहीं नाच नचाई
"कौशल" सुधा रूप लास नव बृज वन रास रचाई ॥
बूझि बूझि अब जानि सक्यो मन याहि अहीर ठगाई
एको है सावरिया मेरो जेहि जसुदा क जाई

४६

कारो हरि कर्षन गहराई
ज्यौं ज्यौं खिँचत रूप हरि लखि लखि कारो कूप समाई ॥
जब लगि हरि नहिँ तेहि सुधि लीन्हौं तब लगि तोहि भलाई
एक बारि हरि दृष्टि परे ते सबहिँ परे रहि जाई ॥
''कौशल'' प्रबल रूप छवि कर्षन मोहिनि मंत्र चलाई
सबहिँ छूटि अंग खिँचत खिँचत चलि हरि छवि कूप समाई ॥
चक्रवात सौं कारि वेष धरि हरि कर्षन मँड़राई
''कौशल'' देस काल चेतना, नहिँ प्रकास दरसाई ॥
एक बार जेहि कारि कूप धँसि भयो लीन भरमाहीँ
निकरि सक्यो नहिँ प्रगट सृष्टि महिँ कितनो जोर चलाई ॥

४७

रूप रूप को लालसी अंग अंग श्रृंगार
रसिकन को रिझवान छवि बानक रूप बिहारि ॥
युगति कियो अंग अंग सज्यो तरुन रूप आकार
चाहत हरि रसकनि ललकि जो छवि तरसि निहारि ॥
नयनन छवि नयनन अरी दीठि दीठि टुनिहार
एक बार बसि हृदय छवि पकरि न निकरनहार ॥
टेड़ो पग कटि कंध छवि ''कौशल'' टेड़ खिलारि
टेड़ो काँटों छवि फँस्यो हृदय न निकरनहार ॥
ऐसो मनमोहन भलो, भलो रूप अवतार
को जाने कब कौन छवि कहाँ प्रगट उद्‌गार ॥
कौन कहे कैसो कहे कितनो रूप प्रसार
सो जाने पैरत छक सागर रूप बिहारि

४८

मनज अंग बाँको नयो, अमित कल्पना सार
लहरत छवि उन्माद रस कल्पित पारावार ॥
हरि हिँन्डोरे कल्पना पैंग पैंग भरमार
''कौशल'' उठि बढ़ि लहर छवि अमिय कल्पना धार ॥
कौन कल्पना कौन छवि प्रगटत रूप निखार
कौन स्वप्न केहि प्रगट छवि कौन रूप अवतार ॥
लहरत नयननि कल्पना पकरि रूप शृंगार
निज हाथन शृंगार हरि पल पल नवल निखार ॥

४९

हरि पहिरे ते बावरो, बावरि रूप निखार
क्यों दुगनित करि रूप छवि, बावरि कियो श्रृंगार ॥
बाँको सों चितवन भली, नयन सजग कजरार
धार कटारी तीख करि, नयनन काजर डारि ॥
पहिरे ते कुंतल रह्यो नागिनि घूँघरवार
मोर पंख क्यों टेढ़ सों, सज्यो केश श्रृंगार ॥
सुघड़ नासिका चारुतम ललित रूप आकार
छवि छलकनि दुगनित करी लटकनि दामिनि धार ॥
अधर मधुर मुसकान छवि चंचल धीर बिहारि
अरुन रेख तम्बूल रस, लालहिँ लाल निखार ॥
सुभग मुखाकृति रूप घन, घनो श्याम उजियार
''कौशल'' कुंडल झाँई दुति, धूप छाँव खिलवार ॥
रूप सलोनो साँवलो, साँवर अंग निखार
क्यों पीरो पट बावरो, सावन सज्यो बहार ॥

५०

देखु सखी मग आवत हैं धुन बाँसुरि तान तरंग हरी
थिरकन चाल चलै पद अम्बुज मृग शावक द्रुत ताल भरी
नयनान के बान चलै दुई छोरन रसिकन हिय हिंड़ोल छबी
नृत हरि ड़ोलन हलचल पलपल "कौशल" कंज श्रृंगार भरी॥
मोहन तान बज्यो मुरली तेहि संग नच्यो अँखियाँ कजरारी
द्रुत चाल नयो लहराय चल्यो हरि अंग मरोरन रूप सुखारी
हुलसाय रह्यो बल खाय रह्यो हरि अंग भंग सुन्दर लयकारी
इतराय रह्यो कछु गाय रह्यो उल्लास भरो उत्साह खिलारी॥

५१

मुक्त भाव प्रीत भरि आज बृज भूमि पर
संसृत समोहित अनंत रास देखि ले
सर्वरूप आदि हरि सृष्टि सौं श्रृंगार करि
सबहिँ समेटि बृज लायो वास देखि ले
तैसो ही अनन्द रस बृज रज कण बसि
परे ते परे भी आज आस पास देखि ले
वेणु स्वर आदिनाद लघुतर विराट वास
अनंत काल पल भरि रूप रास देखि ले ॥
चेतन उमंग हास शुभ्र ज्योति को विलास
वन वन "कौशल" तरंग लास देखि ले
पाति पाति तरुवर जल भरि सरुवर
सुमन नवोदित उमंग हास देखि ले
ऐसो अनुहोनी होय, सुध बुध मन खोय
गैयन हुँकारी हरिनाम त्रास देखि ले
गोप ग्वाल केलि कुंज छवि सुख उधार माँगो
देनदार आज हरि अह्लाद रासि देखि ले ॥

५२

आज बृजमंड़ल चेतन अनंदरास
चंचल अनुराग लास चेतन चितकारी है
मोहन उद्‌गार संग मन उमंग कल्पना
नूतन स्पन्दन चित चेतन खिलवारी है
चेतन रस सागर नट नागर उमंग नृत
उच्छल तरंग लय गंग सुखकारी है
हुलसित हरि लास नृत्य चेतन लय अनित्य
चेतन ही चेतन चंचल छविधारी है ।।
झंकृत मन अंग अंग चेतन अनुरक्त लास
स्तब्ध चित्त हिरदय नव चेतन ललकारी है
"कौशल" दृग चेतन तरंग अंग चेतना
अन्तर दिग चेतना अनन्द लयकारी है
बीन राग चेतन झनझन झंकार मारि
कन तरु पाति पाँति चेतन उजियारी है
ऐसो बृज आज रास वन वन आस पास
चेतन मिलि चेतन हरि चेतन खिलवारी है ।।

५३

आज बृज मंडल नव मंगल अनंद रस
बुनि बुनि धागो हरि मोहिनि के जाल की ॥
"कौशल" सुनि गाथा हरि रसिक लुभानो रस
दौरि दौरि आयो बैठि घोड़ा हाथी पालकी ॥
रस ललचायो छवि देखन लुभायो दीठि
रंक राजा तापसी भूलि देस काल की ॥
जग को नचैया नंद राय को कन्हैया आज
झूमि झूमि नाचै मृदंगन के ताल की ।

५४

घननि घननि घन आदि नाद तन नर्तन भाव उद्दंग
गुंजत कन कन वन वृंदावन ले हरि हाथ मृदंग॥

तमतम तम ताल देत, मधुर मधुर मृदंग बोल
झनझन झन कम्प करत अम्बर बसुधा कलोल
नव गान करत स्वर गम्भीर अंतरतर हरि अनंद॥

नाचत हरि ताल संग, सम मृदंग सम तरंग
पुलकित नव अंग अंग, लहरत हरि नृत्य गंग
पद पटकनि ताल संग, कर नचाय नाच्यो सुडंग॥

किंकिनि कंकनि धुननि रंग, छुद्र घंटिका ललित बोल
बाजत हरि ताल संग, झुननि झुननि शब्द घोल
गहन मृदंग स्वरन रंग, तीव्र मंद रस तरंग॥

देखि देखि हरि अनंद, गरज्यो घन श्याम रंग
नाच्यो जग सम तरंग, चंचल रस नव अनंग
उन्मुक्त काल ताल अंग, बाजत जब हरि मृदंग॥

रसिकन अनुराग रास, अनत लास आस पास
देखि देखि हरि विलास, प्रमुदित चेतन विकास
"कौसल" अनुरक्त भाव, छवि अनंद बहति गंग॥

५५

ताण्ड्व नृत अंग अंग
मुद्रा लय अष्टभंग
धृकांग धृक स्वर मृदंग
नाचत बनवारी॥
ताल ताल पद उमंग
झन झन नूपुर सुढ़ंग
ग्रीवा कटि लोच अंग
नाचत बनवारी॥
पुलकित मुख नृत्य रंग
नयना भृकुटी उढ़ंग
मुसकनि बहि रूप गंग
नाचत बनवारी॥
कर करतल नचत संग
मुद्रा अंगुली सुढ़ंग
"कौशल" दृग देखि दंग
नाचत बनवारी॥

५६

देखहु सखि नाद ब्रह्म
नाचत मृदंग संग
लय लय लहराय गंग
वन वन हुलसाँई॥
अनहत्त अंतर अभंग
लौकिक रस गीत संग
यमुना सुरसरि तरंग
पल पल लहराई॥
दोऊ रसलीन लिप्त
मानस हिरदय अतृप्त
स्पन्दन अनुरक्त चित्त
अन्तर सुखदाई॥
कैसो अनुभूति आज
"कौशल" बृजवन विलास
पारब्रह्म आस पास
सुषमा मँडराई

५७

वृन्दावन रस अनंद नाचत बनवारी ॥
क्यों अनंत छवि उजास, ज्योति शुभ्र आस पास
देखि देखि हरि विलास, नैननि दुति हारी ॥
क्यों छवि अनुरक्त रास, नर्तन रस लिप्त लास
नवल स्वांग नव अभास, सुषमा छवि न्यारी ॥
पद पटकति ताल देत, नर्तन अनंद लेत
अभिनय चंचल सुचेत, बनि ठनि बनवारी ॥
"कौसल" सुख वेणु नाद, कल्लोलन हिय अगाध
नव तरंग रस अनादि, कर्षन लयकारी ॥
क्यों प्रभु चंचल सुडंग, नाचत तन अष्टभंग
नव तरंग चपल गंग, ललकन छविधारी ॥
क्यों नहिं धरि सौम्य रूप, निज सम्भारि शुध स्वरूप
बैठत निर्गुन अरूप, निर्मल तनधारी ॥

५८

ताण्डव नृत् रंग अंग नाचत बनवारी ॥
तम् तम् तम् ताल संग, धृकांग धृक स्वर मृदंग
मंथन लय नाद गंग, नाचत बनवारी ॥
रसना कालिय भुजंग, फन फन फुफकार ढ़ंग
पटकनि पद ताल संग, नाचत बनवारी ॥
उछरि उछरि नचत अंग, इक फन ते दुसरि संग
उठि उठि पुनि नमत अंग, नाचत बनवारी ॥
थिरकन अंग लोच संग, कम्पन नर्तन तरंग
"कौशल" अतृप्त रंग नाचत बनवारी

५९

वन वन विचरि रह्यो बनवारी
सुंदर बाँक पाग काछनी दिव्य रूप छवि न्यारी॥
कानन विचरि चरावत गइय्या, गौर सिंधौरी कारी
ज्यों हरि त्रिगुन सृष्टि नित हाँकत दुहत पियत रस न्या
वेणु नाद गम्भीर मधुर स्वर गोधन कबहिँ हँकारी
सबहिँ नचायो नाच्यो तन्मय, गोप ग्वाल सुधि हारी॥
अंग श्रृंगार नवल सरसिज तन अपनो रूप निखारी
केलि करत संग ग्वालन उरझत हारत हारि पछारी॥
कबहिँ ग्वाल को झूँटो खावत मुँख सौं कौर निकारी
कानन दूध भात मिलि खायो मँइय्या दियो दुलारी॥
झाँकि करहु यहि "कौशल" दर्सन खेलत नित्य बिहा
वन वन संसृत लीला झाँकी प्रगट कर्यो अवतारी॥
जो जेहि दसा दिसा सौं झाँकत देखत रूप बिहारी
तेहि को तैसो दरस होय जेहि जैसो रस अधिकारी॥

६०

दिव्य रूप सुषमा को सागर बन बन विचरि रह्यो बनवार
मानहु कारो घटा छाँटि नव दिनकर झाँकत रूप निखारी
कुसुम मनोहर अरुन शुभ्र संग नूतन करत श्रृंगार बिहारी
पीरो पाग बाँक सौं पटको केसर तिलक भाल उजियारी
कारी गौर सिंधौरी गइया सुंदर गोधन सबहिँ हँकारी
संग ग्वाल कल्लोलन हलचल प्रेम सुधा छवि रस अधिक
तेहि छन गरजि श्याम घन बरस्यो शुभ्र सुधा बूँदन रस
गोधन ग्वाल ग्वालि हरि लायो सिमटि सबहिँ कदम्ब क
"कौशल" तानि तंत कामरिया तेहि अंतर राधा छवि न्
ससृत सिमटि प्रगट हरि लीला मधुवन कुजन कुज बिहा

६१

कारो वनकारी घटा, कारो कारि बिहारि
दुई नयना उज्वल विमल, दामिनि ज्योति निखारि॥

भूमि लखैं अम्बर लखैं, तरुवर पुहुप सुखारि
बड़ो बड़ो नयना सकल, ड़ोलहिँ ड़ोल खिलारि॥

नयन तराजू तोलि के परखे सबहिँ बिहारि
गुरुता बाढ़े प्रेम जहँ और बढ़ाय निहारि॥

चंचल दृग इत उत नयँ जीव अजीव निहारि
कब मुरिहैं यहि ओर मम, "कौशल" नयन भिखारि॥

६२

बार बार करि श्रृंगार सुषमा औरे निखार
पाछलि छवि झारि झारि हुलसत बनवारी॥

पल पल हरि कारि कारि, नूतन छवि जलध ज्वार
स्पन्दन प्रतिछन उजारि, प्रगटत बनवारी॥

आर पार नैना निहार, टेड़ो दृग नवल वार
लोचन मुसकनि प्रहार, पुलकत बनवारी॥

नव उमंग नव हुँकार "कौशल" छवि दौरि धार
हरि सकार नव अकार ललकति बनवारी

६३

गृह ते निकरी बृषभानु सुता नव अंग श्रृंगार स्वरूप निखारी
मुख कंज कलोल विलोचन द्वै भ्रमरान सौंचंचल चेतनधारी
मद यौवन रस उन्माद भरो मृगशावक चंचल चाल सुखारी
रस अंग अनंग सम्भालि चल्यो अनभिज्ञ तरुन रस प्रीत कुँवारी॥
न्हाय के यमुना नीर सुधा छवि गौर सुअंग बनाय भली
निज रूप पे रूप लुभावन को श्रृंगार कियो बृषभान लली
नव चंदन अंगन चित्र खँच्यो सिर वेणि गुथ्यो नव पुष्प कली
मंद मादक बिन्दी माथ सज्यो नयनान मैं काजर डालि भली॥
शुभ नूतन अंग निखार लख्यो हरि रूप ठग्यो राधा छंवि गोरी
"कौशल" नव अनुराग जग्यो हरि चित्र लिख्यो सौं देखत भोरी
हिय चेत जग्यो पग स्वयं बढ्यो मुसकाय के नैनन नयनन जोरी
लोचन सयनन बूझत माधव केहि की छोरी सुन्दर गोरी॥
लाज नयन मुसकाय चली शुभ अंग सिकोरि अनंदित ग्वारी
दुई चार चल्यो पग रूप लख्यो मुरि नंद कुँवर नव अंग निहारी
रूप को रूप विलोकन अविरल चाव भरो हिय अंग सुखारी
मोहन हारो मोहिनि हारो मोह निहारो मोहन प्यारी॥

६४

श्याम लख्यो छवि राधा गोरी
नयनन दीठ अटकि ज्योति छवि चेतन चकित रूप लखि
बावरि नयन और बावरो लखि लखि रूप मनोहर छोरी
बिसरि गयो दृग चंचलताई नयन अर्यो छवि राधा गोरी॥
केवल एक एक छवि दीख्यो सुदर छवि सुन्दरता बोरी
नव लावण्य कमल हास छवि नयन टिकट नहिँ चितवन
"कौशल" कछु अघाय दृग चंचल नयन अधर मुसकनि
बूझत मोहन कौन गाँव की केहि की छोरी सुन्दर गोरी

६५

राधे! देखि लेहु मन मोहन
जेहि बृज मंडल उधम मचायो अपनो रूप प्रलोभन ।।
जेहि ग्वालिन नित चोरि छकायो ढ़रकायो दधि माखन
यहि अहीर नित ग्वाल बाल संग नच्यो नचायो बुधजन ।।
जेहि बृज केलि उठाय अँगुरिया थाम्यो गिरि गोवर्धन
जेहि नृत कुंज मोहिनी व्यापो मोह्यो हाँक्यो गोधन ।।
तेहि छवि नयन अघाय देखु तुम, बाँधि बाँध हिय बंधन
"कौशल" याहि अहीर ढीट हरि, पकरि परे नहिँ मोहन ।।

६६

सकुचि खड़ी वृषभानु दुलारी॥
हरि देखन अंतर अभिलाषा, लहरनि उठत सुखारी
चंचल वेग ज्वार कल्लोलन, कलकल अनत प्रकारी
नयन उठत नहिँ पलक उधारन, सकुचि खड़ी वृषभानु दुलारी॥
भूमि गाढ़ि दृग भूमि खोदि पग, अंगुलि चलत बिचारी
अंचल खींचि सिमटि वसन तन, लिपटि लजति सुकुमारी
लाज बाँध दृढ़ और जोर करि, सकुचि खड़ी वृषभानु दुलारी॥
प्रथम दरस अवलोकन आकुल, लुक छुप नयन उघारी
नयन कोन कछु रूप लख्यो हरि छवि छनि हृदय उतारी
हृदय मौन स्वर झंकृत "कौशल" सकुचि खड़ी वृषभानु दुलारी॥

६७

सखि तुम लख्यो श्याम रूप हरि
लाज नयन भरि बूझत राधा कैसो लग्यो मोंहि प्रीतम छवि॥
जैसो निज नयनन मैं देख्यो लख्यो वदन तुम सरल रूपहरि
मेरो हृदय बस्यो जेहि मोहन सखि बोलहु तेहि कैसो हरि छवि॥
सकुचि सिमटि राधा आतुर हिय और ओर लखि कान कस्यो सखि
पद अंगुलि सौं भूमि खोदि छन सखि उत्तर सुनिबे आतुर ड़रि॥
ललिता बोल्यो पुलकि प्रेम बस कैसो बन्धन बन्ध्यो आज हरि
मोहन राधा छवि परिपूरक आज गुँध्यो दुई प्रथम प्रीत सखि॥

६८

कहत श्याम गोरी सुकुमारी
ज्यौं ज्यौं देखि रूप मुख सुन्दर तेहि प्रतिपल नव भाव निखारी ॥
कबहिँ प्रीत रंग चढ्यो मुखाकृति, नयन अधीर नवल उजियारी
आतुर हिय चंचल छवि पल पल, कम्पन अधर स्वास फुफकारी ॥
कबहिँ लाज उन्माद थाम हिय, नयन मूँदि मुसकान सुखारी
अंतर ज्वर पल प्रगट मुखाकृति, मंद मंद दुई नयन उघारी ॥
कबहिँ प्रफुल्लित नयन अधर छवि "कौशल" चेतन धार प्रसारी
इन्दु ज्योति पुलकित उज्वल मुख, सुषमा रस छन छन छितकारी ॥
इकटक देखि देखि तेहि मुख छवि, पल पल अनुभव नवल प्रकारी
सबहिँ रूप भोरी सुकुमारी वृषभानु लली मोंहि लगत पियारी ॥

६९

खंजनि सौं जेहि नयना प्यारी अंजन रचि छवि सोभा न्यारी
हरि के नयनन नयन निहारी राधा दुगनित नयन उजारी
इक टक देखि देखि दृग न्यारी नयनन बसि नयनन छविकारी
बह्यो नयन नयन रसधारी श्री राधा हरि कुंज बिहारी॥
राधा नयन ज्योति मतवारी लखि लखि मोहन नयन सुखारी
नयन पुजारी नयन भिखारी शोभा माँगत देत उधारी
चपल चकित कहँ रूप प्रहारी, मोहन मोहिनि नयन सिकारी
श्याम नयन बस श्यामा प्यारी राधा नयनन नयन बिहारी॥

७०

को मोहन को राधा प्यारी
बूझत सखि मिलि कुंज विमोहित कैसो यहि दुई रूप निखारी॥
ना हरि ग्वालो राधा ग्वालिन परम रूप छवि दिव्य सुखारी
पहिन पीत पट पंख मोर सिर जानि पर्यो. यहि छवि अवतारी॥
तैसो ही श्री राधा दामिनि पहिरो लँहगा चुनरि किनारी
अमिय गंग रुकि ठहरि बस्यो यहि बृज मंडल वन रूप प्रसारी॥
देखि रूप दृग चकित चेतना कैसो श्यामल गौर कुँवारी

७१

आज बनी झाँकी मनमानी
परम आदि रूप हरि मूरत तेहि छवि प्रति अनुमानी॥
सौम्य धीर सत् सुन्दर मादक मृदुल अंग सुखधाम
पुन्य ज्योति पावन सम शीतल, निश्चल सरल अकाम
दिव्य, पूर्ण, सित् मधुर एकरस, शुद्ध चेतनाखानी॥
स्वयंप्रभा, स्वतंत्र अविनाशी, निश्छल निर्मल अंग
त्रिगुणहीन, मौन, समदर्शी, शाश्वत, अटल अभंग
स्वान्तःसुखी, प्रसन्न योगेश्वर, नित्य परमसत् ज्ञानी॥
प्रगट तबहिँ राधा तरुनाई, दामिनि दमकि अजान
नव उमंग कल्लोल चित्त हरि, मन्थन अंग सकाम
चपल अधर धरि मधुर मुरलिया, लहरि प्रीत मनमानी॥
नाच्यो चेतन "कौशल" चंचल आकुल कम्पन प्रान
नव शृंगार नव रूप विमोहन, सुखद प्रणय अनुमान
झाँकी चंचल पल पल हलचल, प्रगटत राधा रानी॥

७२

कारो शून्य अंधकार जग मंथन कारि
हरि कर्षण करि देस काल पल संसृति अवनि
केवल कारो छवि हरि दर्सन कम्पन ज्योति प्र
झनझन गहन श्याम स्पन्दन श्यामल सृष्टि
घुल्यो सबहिँ छवि भेदन अंतर हरि छवि कारि
संसृत सागर मंथन हलचल कारि तरंग अहीर
छाँड़ि सृंगार प्रसाधन हरि बस कामरि कारि
प्रगट तबहिँ श्री राधा सुषमा रंजित रंग शृंगार
झाँक्यो रवि साँ बदरी अंतर विलग्यो रूप अक
"कौशल" व्योम घेरि छवि लहरन इन्द्र सरास
राधा रंग शृंगार लहरिया इत उत लहरि हिंडोर
जग क्रम शक्ति चेतना कम्पन अनु परमाणु वि
देसकाल बुनि वेणि रग बहु राधा सज्यो

७३

अंतर हिय राधा अकुलानी
जब जब श्री हरि नृत्य सृजन रस कर्‍यो अपन मनमानी॥
मुरलि अधर धर शुद्ध नाद स्वर लय तरंग लहरानी
दिगति दिगन्तर कन पल अंतर छवि सागर इठलानी॥
नृतन तरंगन नच्यो शुभ्रतम पुण्य ज्योति अनुमानी
सत् चित सौम्य प्रताप प्रकाशित नित अखण्ड़ अनुगामी॥
श्री राधा शृंगार दामिनी ओढ़ि चुनरिया धानी
सुषमा प्रगट प्रीत नव छलकन रस उमंग उलचानी॥
कटि कसि पीत फैंटि अटपटो पाग बाँधि मनमानी
बाँको बनरा हरि सजि मोहनि बान तान संधानी॥
प्रणय पयोनिधि दोऊ डूब नव नित्य प्रीति अकुलानी
चेतन चंचल रस भरि अंचल सृजन गंग इठलानी॥
नित्य नयो शृंगार कल्पना हिय उमंग अकुलानी
सब रस उलटि फेरि हरिनर्तन प्रगटत राधा रानी॥

७४

हरि इठलायो अपनो छवि रस ॥

वेणु धुननि स्वर अपन मगन हरि
दिव्य मधुर शृंगार मोह भरि
हिय स्वतंत्र जेहि चह्यो नृत्य करि
छवि निर्झर झकझोरन बरबस ॥

नित मुद्रा अभिनय रस नूतन
अपनो रचि संसृष्टि मगन मन
स्वयं सुखी हुलस्यो अंतरतन
नव उन्माद शृंगार नवल रस ॥

कौन समय कब कहाँ कौन विधि
चपल राधिका प्रगट्यो छवि निधि
प्रेम दामिनी दमकि स्वयं सिधि
"कौशल" हरि हिय करि अपनो बस ॥

हरि चपलामय हरिमय दामिनि
रस उमंग हरि संग सुहागिनि
युगल अंग अभिलाष लुभाविनि
प्रीत जाल बन्धन अंतर फँसि ॥

श्री राधे अनुरूप नचत हरि
आकर्षन सम्मोहन छवि भरि
समअंग शृंगार नवल रूप छवि
केवल एकल नृत्य विसरि रस ॥

७५

जब लौं हरि नहिँ कीन्ह शृंगार
प्रेम प्रमत्त नहिँ राधा अपनो कियो प्रगट उद्‌गार॥
पल पल श्री हरि बाट जोहतो राधा आवनहार
तेहि अनुरूप स्वरूप भाव तेहि करिहौं तन शृंगार॥
श्री राधा मन सोच पर्‍यो छन करिहौं रूप प्रहार
जैसो हिय उमंग केलि रस जैसो हरि शृंगार॥
दुविधा दोऊ झूलनि अंतर बहु छन काल विचार
स्वयं प्रगट मन उमंग चेतना, फूट्यो प्रीत फुहार॥
दमक्यो प्रणय दामिनी अंतर दोउन रूप प्रहार
राधा भाव बन्यो मोहन सौं, मोहन त्यौं शृंगार॥
चंचल केलि करत कल्लोलत, छन छन नवल अकार
प्रीत शृंगार, शृंगार प्रीत बनि, "कौशल" लहरि अपार॥

७६

प्रमुदित परम प्रसन्न आज हरि राधा छवि शृंगार करत हैं
तन मन प्रीत अनंग, देखु सखि, राधा छवि शृंगार करत हैं ॥
उद्‌गम आदि उमंग आज हरि राधा छवि शृंगार करत हैं
भरत अनेकन रंग स्वयं सिध, राधा छवि शृंगार करत हैं ॥
सुषमा ज्योतिर्गंग आज हरि, राधा छवि शृंगार करत हैं
माल पुष्प बहुरंग परम छवि, राधा छवि शृंगार करत हैं ॥
कनक मेखला अंग आज हरि, राधा छवि शृंगार करत हैं
कंकनि नूपुर संग रसिक मन, राधा छवि शृंगार करत हैं ॥
ललित घंटिका अंग आज हरि, राधा छवि शृंगार करत हैं
गूँधत वेणु सुडंग आदि कवि राधा छवि शृंगार करत हैं ॥
बिन्दी भाल उमग आज हरि राधा छवि शृगार करत हैं

७७

करत श्रृंगार राधिका पावन अपनो हाथन हरि मन भावन
नव पल्लव भरि वेणि गूँथ हरि अधिक लुभावन सहज सुहावन
निर्मल प्रीति उमंग चाव हिय सुन्दर सुमन माल पहिरावन
ललित पुष्प नव कुण्डल गुंथन कर्ण झूलि उमगन लहरावन॥
कुंचित केश जड़त नव कलिका "कौशल" लटकनि लटनि
धानी ललित उढ़ाय चुनरिया सुषमा गौर अंग लहरावन॥
श्वेत पुष्प गढ़ि कंगन हरि कर निज हाथन राधा पहिरावन
पुष्प माल जंजीर करधनी ऊपर पुष्प घंटिका पावन॥
ललित रंग गढ़ि सुमन घंटिका चरनन नूपुर नाच नचावन
निज अंगुलि लै चंदन श्री हरि राधा आनन तिलक लगावन॥
नव श्रृंगार छवि सज्यो राधिका सुंदर सुषमा सरस सुहावन
कियो प्रगाढ़ भाव आलिंगन युगल प्रीत नव रंग प्रसारन॥
दोऊ मिल्यो गुथ्यो छवि उरझ्यो केलि चंचला रस संचालन
गौर श्याम दुति एक उलझि छवि प्रगट्यो मनु फागुन पे सा

७८

हरि नव कर्‍यो श्रृंगार आज छवि राधा पावन ॥

प्रथम श्रृंगार राधिका आनन
केसर चंदन तिलक लुभावन
बूँदनि बूँदनि चित्र सुहावन
शुभ्र भ्रमर भ्रकुटी मँडरावन
वेणि गूँथि तेहि अंतर गुंथन वैजन्ती नीरज उरझावन ॥

सरसिज कंगन बाजुबंद धरि
कमल हस्त चित्रित मेंहदी करि
बनज मेखला पुष्प घंटि लरि
सुमन माल उर कंध अंगधरि
नूपुर झनझन "कौशल" अंगन चुनरिधानि राधा पहिरावन ॥

परम अंग लावण्य रूप धरि
गौर इन्दु श्रृंगार ज्योति भरि
नयन दीर्घ मादक मोहित हरि
प्राण बल्लभा अर्पन हिय करि
मोहन मोहिनि रूप विमोहित इकटक नयन विलोकन पावन ॥

७९

पल पल नयो रूप हरि पावन
ज्यों ज्यों राधा सजि श्रृंगार हरि निज हाथन नव रूप निखारन
प्रथम श्रृंगार हरि केश बाँधि तेहि ऊपर टेड़ो पाग सुहावन
घन कुंतल केशनि धँसि टेड़ो पंख मोर सुषमा लहरावन ॥
कंज कली सित नील अरुन सजि पाग माँग अंतर मनभावन
केसर चंदन रोलि बूँद धरि श्यामल आनन तिलक लगावन ॥
कजरारी अँखियाँ भरि काजर सुघड़ नासिका लटकनि पावन
पुष्प माल बैजन्ती सरसिज मोति प्रवाल माल पहिरावन ॥
पुष्प पुरोहित बाजुबंध हरि शोभा कंगन पुष्प सुहावन
पीत वसन तन सुमन करधनी क्षुद्र घंटिका पुहुप लुभावन ॥
रजत पैंजनी सुमन सुशोभित सरस तम्बूल अधर मुसकावन
वृषभानु सुता हरि सजि श्रृंगार नव "कौशल" नृत्य अंग उरः

८०.

सखि चलि देखहु नवल रूप हरि
सुन्दर अंग सुरंग मनोहर, राधा तेहि श्रृंगार कर्‍यो छवि ॥
निज हाथन वृषभानु दुलारी अलंकार हरि अंग अंग धरि
नयो भाव हिय नयो कल्पना रच्यो नयो आनंद छंद कवि ॥
केसर चंदन अंगराज नव धातु रंग घिसि घोलि घोलि करि
हरि वल्लभ माधव अंग राधा चित्त रम्यो तेहि चित्र खँच्यो छ
सरल रंग हरि रंग्यो मुखाकृति मुख तम्बूल नैन काजर भरि
केसर चंदन तिलक मनोहर आनन सुंदर बूँद बूँद धरि ॥
कुंतल केस मोर पंख सजि कंज मनोहर पाग फेंट भरि
अरुन पुष्प गूँधि बैजन्ती बनज मेखला माल कंठ हरि ॥
परम रूपमय सज्यो राधिका निज अनुरूप उमंग भाव छवि
चित्र लिख्यो सौं तक्यो एकटक कौशल राधा नयन रूप

८१

अंग अंग चितकारी गौर रंग को निखारी
सारो जग उजियारी छवि और न बचत है
द्युति नूतन निखारी राधा चंचल सुखारी
नहिँ दामिनि बिचारी उजियारी यौँ करत है
जेहि रूप को पुजारी हरि प्रीत को भिखारी
घन श्याम जू की प्यारी लखि सुषमा लजत है
वृषभानु की दुलारी श्यामा कुंजन खिलारी
तेहि रूप को निहारी बृजराज भी नचत हैं॥
जेहि चूनरी किनारी धारी रेसम निखारी
चाँदी स्वर्ण तार तारी छवि छलकि अकथ है
केस झूमर निखारी माँग चोबा मोति धारी
बिन्दी भाल उजियारी इन्दु मुख पै नखत है
कर्णफूल फुलवारी, नौ रतन निखारी
राधा नासिका पे प्यारी लौंग हीरक जड़त है.
लटकनि दुनिहारी लघु अंधर सुखारी
दुति दामिनी की धारी लिखि लिखि के नचत है॥

८२

मुसकान भरी बृषभानु सुता छवि
 प्रीत नयन अवलोकन की
जेहि ओर मुरे छवि धार बहे
 रसमत्त पयोधि विलोचन की
अनुरक्त सुरक्त छवी अधरान
 अनुरूप उमंग हियो मन की
छवि रूप अनन्द मुखाकृत सुन्दर
 हरि चित्त प्रवृत्ति प्रलोभन की ।।
नव इन्दु छवी प्रतिबिम्ब घनी
 नव कंज शृंगार प्रलोभन की
छिटकान छवी मुसकान सनी
 उजियारी घनी झकझोरन की
मुख देखन दीढि गड़ी सो गड़ी
 मन चित्त न और प्रयोजन की
छवि "कौशल" मंत्रन शीश चड़ी
 वृषभानु सुता अवलोकन की ।।

८३

इन्दु ज्योति निर्मल उजियारी
लखि लखि व्योम चकित भ्रकुटि
 पलकन रेख नैन कजरारी ।।
बूझत श्री हरि ललिता सौं यहि
 कैसो नयन सैन मजधारी
कैसो अरुन कमल पल्लवन
 अधर मनज नव रूप निखारी
ललिता कहि श्री राधा गोरी
 इन्दु ज्योति धुलि धुलि उजिय
शुभ्र मुखाकृति शुभ्र तन निर्मल
 चन्दन ललित बिन्दु चितकारी
गौर अंग शुचि ओढ़ि चुँनरिया
 सुन्दर धारी रजत किनारी
शुभ्र पुष्प शृंगार माधुरी
 मोतिन माला लहरन वारी ॥
सबहिँ प्रगट, नहिँ प्रगट गौर अ
 इन्दु ज्योति संग घुल्यो कुमारि
"कौशल" देखि देखि हिय हुल
 राधा अदभुत रूप बिहारी

८४

देखहु सखि आयो बृजरानी
रोम रोम तन ज्योति प्रफुल्लित सुषमा बहति नचत मनमानी॥
नाग अंग बलखाय लचत बहु पुष्प गूँधि वेणी इठलानी
मुक्त अनल प्रवाल माल संग कंजमाल उलझन अकुलानी॥
पवन हिंड़ोरे झूलि बावरी अंचल लहरि धान सी धानी
कंगन नूपुर मृदुल मंदतर झंनझन झंकृत चंचल वानी॥
पुलक्यो देखि रूप लहरि छवि दामोदर सुषमा अभिमानी
बिसर्यो सबहिं रूप सम्मोहन "कौशल" देखि देखि बृजरानी॥

८५

कमल नयन हरि कमल मुखाकृति अमल कमल श्रृंगार धनी
मोर मुकुट नव कंज सुकोमल कैसो रूप निखार बनी
केसर चन्दन मन्मद मंथन तिलक भाल उजियारि घनी
कमल गुंथ बैजन्ती माला मोतिन जाल प्रवाल सनी॥
इन्दु नयन बसि इन्दु मुखाकृति ज्योति पुंज उजियारि घनी
इन्दु ज्योत्सना बिन्दी आनन राधा श्री श्रृंगार बनी
हीरन जड़ि मोतिन गल माला हीरन कंगन ज्योति कनी
रेसम तारी रजत किनारी चुनरी दामिनि ज्योति घनी॥
श्री राधा हरि कुंज बिराज्यो कुंजन बरसन पुष्प कली
श्री हरि पुलकन पुहुप पुहुप लखि पुलकि अंग वृषभानु लली
कजन सुमन श्रृगार राधिका मोहन मोहिनि रूप भली

८६

मन्मद श्याम रूप छवि न्यारी
छवि देखत दर्पन इतरावन निज हाथन श्रृंगार सँवारी ।।
केसर तिलक चंद्र सुन्दर हरि चंदन बूँदन भाल निखारी
काजर नयन कारि करि भ्रकुटी बान सरासन प्रमद प्रहारी ।।
कुंतल केस मोर पंख सजि पाग फेंट, फेंट की धारी
कर्ण फूल कुंड़ल लहरावन सजि श्रृंगार लटकनि उजियारी ।।
बैजंती उर मोतिन माला ''कौशल'' गुंथन तुलसी प्यारी
सुघड़े पिताम्बर सुघड़ काद्नी कंगन नूपुर झंकृत न्यारी ।।
परम रूप हरि रूप लुभावन दर्पन निज श्रृंगार निहारी
श्री राधा छवि मिलन विलय ते पहिरे अपनो अंग सँवारी ।।

८७

लहरन लहरनि होड़ लगाई
राधा लहरनि धानि चुनरिया, नयना लहरि कन्हाँई॥
पवन जोर लहरन आगे बढ़ि वेणु तान लहराई
वृषभानु लाड़ली झननि झननि झन, पैंजनि होड़ जताई॥
श्री राधा कल कंठ माधुरी, मधुर तान उमगाई
हरि गायन स्वर गहन गम्भीरो, नचत लचकि लहराई॥
हरि मुसकनि लहरनि संग थिरकनि, राधा लय मुसकाई
''कौशल'' कौन दौर केहि आगे, लहरनि उधम मचाई॥

८८

पाग फेंट बाकौं नयो
नयो अंग श्रृंगारि
ललकि ललकि लखि अलख छवि
सुन्दर कृष्ण बिहारि ॥
बाँक टिपारो इन्दु छवि
केसर तिलक उजारि
मोर पंख बाँको नयो
कुण्डल बाँक निखारि ॥
निज नयनन करि एकटकि
नयनन रूप उजारि
हरि नयनन निज नयन भरि
हरि छवि रूप निहारि ॥
श्री श्यामा सम अंग नव
बिन्दी माल उजारि
सलज नयन मुसकान छवि
अधर कपोल निखारि ॥
गौर अंग लावण्य छवि
ललित इन्दु उजियारि
हरि छवि श्यामा रूप धरि
श्यामा रूप बिहारि ॥
सुखद युगल छवि रूप नव
युगल नवल श्रृंगारि
दौरि रूप छवि लूटि ले
"कौशल" बारम्बारि ॥

८९

युगल रूप चंचल छवि न्यारी॥
नील शुभ्र ज्यौं कंज गुँथ्यो छवि
त्यौं श्याम राधिका प्यारी॥
नील तुंग तन लसत शुभ्रतर
ज्यों हिम अंग पसारी
ज्यौं अनंत नील सागर तन
नचत तरंग अनारी
ज्यौं प्रयाग शुचि गंग तरंगित
यमुना घुरत सुखारी
त्यौं श्यामा सुषमा कल्लोलत
श्यामल अंग बिहारी॥
नव यौवन उन्मुक्त लस्यो छवि
नव उमंग छलकारी
माँनहु घन घमंड सावन तन
रंग बसंत चितकारी
ज्यौं श्यामल रजनी तन अंतर
इन्दु ज्योति उजियारी
त्यों ही नव बृज मंड़ल कुंजन
राधा कुंज बिहारी॥
छवि सागर मंथन अन्दोलन
सुषमा छलकि पसारी
ज्यौं दुई ध्रुव दामिनि मिलि कौंधत
ज्योति पुंज उजियारी
प्रीत कुंज धनि धनि वृंदावन
जँह हरि श्याम दुलारी
पावन प्रणय पयोनिधि छलक्यो
जेहि रस बृज अधिकारी

९०

कौन श्याम को राधा प्यारी
दोऊरूप प्रगट छवि पल पल अनुपम रूप सुखारी ॥
नयन विमोहित देख्यो मोहन तुरत रूप सुकुमारी
मानस पट छवि खँचित भयो नहिँ दूजो रूप निखारी
मोहन राधा, राधा मोहन दुई छवि प्रगट खिलारी
दीठ जमैं नहिँ चित्त थमैं नहिँ प्रति पल नवल उजारी
नव अनुभूति चपल चल चेतन गौर श्याम उजियारी
एक रूप दुई, दोऊ भिन्न छवि "कौशल" एक बिहारी ॥

९१

जग माँहि अलख ललक क्यों आज
पुलकित कमल गुच्छ क्यों कम्पित भ्रमरहिँ राज समाज ॥
उमड़्यो मेघ गगन घन छायो छितरायो रस राज
बक शुचि पंक्ति बद्ध ह्वै नाच्यो चढ़ि चढ़ि पवन जहाज ॥
बाज्यो शंख मृदंग बीन चहुँ लहर्यो चेतन राग
पुलकि पुलकि धरती नभ चूम्यो ना जानो केहि काज ॥
जान्यो आज कृष्ण पुनि नाच्यो चंचलता रस राज
नाच्यो जीव नच्यो जड़ चेतन अणु परमाणु समाज ॥
सबहीं हरि चंचल रस चाख्यो मोहिनि को सरताज
"कौसल" रस आकर्षण नाच्यो, छाँड़ि लाज मर्जाद ॥

९२

कैसो सुन्दर रूप दिखाई
प्राण वल्लभा राधा के संग नाचत श्री हरि कुँवर कँन्हाई ॥

मधुर रास लय लास मधुर स्वर
अष्टभंग नृत भाव अंग भर
नव मुद्रा द्रुत ताल नृत्य करि
युगल रूप अनुरूप स्वांग धरि
तम् तम् धृकम् मृदंग बोल संग युगल अंग अंग हुलसाई ॥

हस्त नृत्य मुद्रा रस मंथन
श्री राधा संग हरि पद नर्तन
कटि ग्रीवा पलं मोरि लोच तन
भ्रकुटि मरोरन नर्तन नयनन
द्रुत उमंग हरि नृत्य अंग सम राधा नाचत कुँवर नचाई ॥

कबहिँ बाम अंग हरि नर्तन
श्री राधा दक्षिण नृत झनझन
बोल बोल स्वर नचत एक रंग
उलटि स्वरूप लहरि एक मन
कमल हस्त गहि खींचि जोर भरि मंडल बसि नाचत तरुनाई ॥

९३

बृज मंडल रास नृत्य नाचत बनवारी
तरल इन्दु शुभ्र हास, अमिय गंग शुचि विलास
संसृति छवि आस पास, लहरत उजियारी॥
अनत गोपि अनत रंग, अगनित हरि रूप अंग
अपनो हरि नचत संग, बहुछवि बनवारी॥
झंझन नूपुर सलोल, मंथन किंकिनि कलोल
ललित अंग मृदंग बोल, बाँसुरि लयकारी॥
रस मंड़ल गोपि संग, नाचत हरि रस उद्दंग
सम उमंग सम तरंग, लहरन मतवारी॥
चेतन सुधि बुदि बिसारि, नाचत सब हरि नि
बहु मंड़ल नृत निखारि अनुपम लयकारी॥
राधा तब जग्यो चेत, कृष्ण अंग दृगनि टेकि
अनुभव अनुभूति एक, चेतन चकित कुमारी

९४

महारास नर्तन लयकारी
तन अनंत परिवेष वेष धरि नाचि रह्यो हरि चतुर खिलारी ।।
जेहि नित पियत छकत नहिँ छवि रस मधुमय भाव भिखारी
तेहि संग अंग उमंग नाचि हरि प्रीत प्रतीत खिलारी
नित अनंद उल्लास प्रफुल्लित रसिकन रसिक बिहारी ।।
मुरली धुनि सुनि प्रीत नाद गुनि चेतन भाव सुखारी
गोपिन बनि ठनि नचत मगन धुनि तैसो रूप बिहारी
रास लास छवि प्यास त्रसित मन अनुपम प्रेम पुजारी ।।
आदि नाद स्वर नृत्य लास हरि रस अनंद किलकारी
प्रथम गीत संगीत लीन चित मृदंग संग लयकारी
पियत रसिक कवि हरि छवि भरि भरि छलकत छन्द सुखारी ।।
हरि चंचल संग "कौशल" नाच्यो ताल लास लयकारी
चंचल गति समवेग नच्यो दुई बिसरि चेतना सारी
दोऊ नर्तन चचल दीख्यो अविचल रूप बिहारी

१५

विस्मित पल देस काल छन
सकल नियम लय उलटि मेलि जब हरि नाच्यो कानन वृन्दावन॥

कबहिँ त्रिताल काल नृत्य हरि तम तम बोल मृदंग
चतुरंगी लयकारी झंकृत वेणु लास नव रंग
उत्कंठित भरि भुवन गूँज हरि गावत झंकृत वन वन कानन॥

सकल सृष्टि भ्रम भँवर खिँचत नृत सम्मोहित बृजधाम
झुकत देस सापेक्ष केन्द्र धुरि गोवर्धन अभिराम
कमल हस्त हरि मुद्रा जैसो नाचत भुवन लास तन कन कन॥

हरि नव भाव लहरिया जैसो गुंथन वेलि निमित्त
बुनत बढ़त छवि उलटि सूध करि हरि कल्लोल चरित्र
''कौशल'' बृज हरि आज रास नव जटिल सृजन शक्ति लय मंथन॥

केवल एक रूप सम्मोहित राधा चपला गंग
जैसो नयन कटाक्ष दसा दिसि तैसो हृदय उमंग
वेणुनाद लय नृत्य लास हरि राधा ताल चाल परिवर्तन॥

९६

दौरि चलहु रस कुंज आज हरि संसृत रास रचावैं
झाँकी ज्योतिर्पुंज चारु तम रजनी रजत सुहावैं॥
सौम्य भाव हरि सौम्य राधिका सौम्य प्रेम सरसावैं
मदन मधुर हिय तरल तरंगन, सम उमंग लहरावै॥
श्वेत वसन हरि श्वेत पाग धरि शुभ्र ज्योति बरसावै
अमल कमल दल नूपुर कंगन मुकुट माल लहरावै॥
शुभ्र तिलक मद नयन रजत सम अधर मंद मुसकावैं
चिबुक ज्योति नव हीरक निर्मल रजत रश्मि बरसावै॥
श्याम अराधित राधा रानी चंद ज्योति बिखरावैं
रस कुंज रंग अनुरूप सँवरि तन चपला चपल सुहावै॥
रूप अलंकृत हरि छवि सिंचित "कौशल" चेत प्रभावै
नृत्य करत हरि आदि रूपधरि सृजन श्रृंगार सुहावै॥
ज्वार रूप धरि सहस रूप हरि कर्षन नृत्य रचावै
हरि छवि मंडल धँसत ज्योति पल काल चक्र मँड़रावै॥
एक धुननि हरि वेणु नाद सुनि तन्मय तन विसरावै
श्रुति स्वर कम्पित नाद अकम्पित चढ़ि तरंग लहरावै॥

१७

प्रबुद्ध शुद्ध चेतनं सुसौम्य कान्ति सुन्दरम्
स्वरूप एक केवलं अनंत रूप सम्भवम् ॥

नृतत् जगत सृजन कृतं अनंत रंग शोभितम्
नवं श्रृंगार ते धरं सुसज्जितम् सुसुन्दरम् ॥

कलोल लास तत्परम् प्रफुल्ल रास आतुरम्
वनं वनं नृतं कृतं विनोद केलि कुंजनम् ॥

सुकंज माल सुन्दरं किरीट कंज शोभितम्
सुउज्वलम् सुलोचं ललाट चंदनं शुभम् ॥

सुकंज पाद नूपुरं सुमंद घंटिका स्वरम्
तरंगितम् पीताम्बरं सुश्याम अंग सुन्दरम् ॥

नवीन गंध मादकं बसंत रंग शोभितम्
सुवेणु नाद वादितं सुराधिका अनंदितम् ॥

सुलोल लोल नूपुरं तरंग ताल झंकृतम्
मृदंग शब्द कम्पितं धृकम् धृकम् धृकम् स्वरम् ॥

धृकत् धृकत् धृकत् ध्वनी सुमंद शब्द किंकिनी
नृतं नृतं नृतं कृतं सुताल लास अद्भुतम् ॥

अनंग रंग चंचलं तरंग गंग लोलितम्
नवं प्रमोद केलिकं प्रसन्न चित्त राधिकम् ॥

समस्त सृष्टि कौशलं अनंद लास चंचलम्
सुकंम्पितं सुझंकृतं सुचेतनं तरंगितम् ॥

जगत सुकेन्द्र नूतनं सुनंद ग्राम मंडलम्
सुभ्राम्यतां सुसंसृतां स्वरूप एक विस्मृतम् ॥

९८

हुलसो नाचि नाचि बृजनारी
ज्यौं सागर लय लहरि लहर त्यौं, छवि सागर लहरत सुकुमारी ॥
प्रीत अनंदित मधुर ज्योत्सना,, शुचि तन प्रति पल उज्जवल नारी
प्रेम अनंद ज्योति बनि छलकनि, ललकन रस बृजराज सुखारी ॥
"कौशल" तरल ज्योति इन्दु छवि लखि लीला हरि रूप निखारी
एक भाव रस एक ज्योति चहुँ ज्वार अंग उन्माद बिहारी ॥
श्री राधा छवि गौर अंग दुति प्रमुदित नचत बहत रसधारी
खंजन रजत नयन हरि चंचल प्रतिपल चहुँ लहरत उजियारी ॥

९९

सबहिँ नचाय रास मंडल हरि रस अनुभूति अनंद
परम चेतना भँवर फँसायो अनत रूप सुख कंद
राधा गोपि रसिक तन भूल्यो लांध्यो माया फंद
प्रगट अंग हरि रूप दुरायो "कौशल" केलि कलंद ॥

१००

कैसो या हरि ढ़ीट ढ़िटाई
हिय आकुल छवि लीला दर्सन हरि नहिँ दरस दिखाई॥
ह्रदय दियो आदेश नयन को तुरत देखि हरिराई
पकरि रूप हरि छवि हिय लावहु अंतर जाहि बसाई॥
थक्यो नयन चँहु घूमि खोज नहिँ हरि छवि देखन पाई
नहिँ मधुवन नहिँ जमुना तट हरि बृजमंड़ल अमराई॥
अम्बुआ ड़ारी थम्यो हिंड़ोलो झूलत नाँहि कँन्हाई
पवन चकित थमि सुरभि समेट्यो मेघ गरजि नहिँ पाई॥
प्रकृति मौन विस्मित पल ठहरो चंचल अचल कराई
कैसो यहि प्रपंच हरि लीला सून्य जगत बौराई॥
ह्रदय सून्य गति प्राण अनियमित स्वास स्वास अकुलाई
कौशल करत नमन हिय नयनन प्रगटहु कुँवर कँन्हाई

१०१

कहाँ छिप्यो मधुकुंज कँन्हाई
बाट जोहतो नयन थक्यो मग कनकन पल गिनि नयन गढ़ाई॥
नयन लख्यो नहिँ श्याम मुखाकृति चंचल सरसिज नयन नचाई
नहिँ श्रृंगार माल उर पंकज कमल पत्र नहिँ छत्र धराई॥
नहिँ मुलरी धुन छल नट लीला नृत्य अंग हरि थिरकि नचाई
नहिँ मृदंग धृक धृकंग बोलन नहिँ करतल हरि ताल धराई॥
नहिँ नृत बोल कंज मुख बोलन नहिँ अनंद राग हरि गाई
जहँ देखहुँ सखि लखो श्याम नहिँ केवल सून्य सून्य जग पाई॥
ठहरि दिसा दिग पल छन ठहरो चंचल जग अब ठहरि रुकाई
नहिँ हलचल नहिँ ललकन पुलकन कैसो यहि हरि ढ़ीट ढ़िटाई
"कौसल" हिय मन त्रसित्त पुकारो प्रगट दरस हरि रूप दिखाई
करि अनंद हिय मधुवन चंचल एक बार फिर नँचहु कँन्हाई॥

१०२

कहाँ छुप्यो साँवरिया माँई
खोज्यो कुंज कुंज बृज मंड़ल, दरस भयो नहिँ कुवँर कँन्हाई॥
खोज्यो पुष्प पल्लवन मधुकर, जेहि हरि रूप चुराई
रमन रेति कन यमुना "कौशल", कमल गुच्छ सुघराई
खोज्यो छवि घन धनि गोवर्धन, बरसाने मड़ँराई
झाँकि गोप गोपिन गृह अंतर, नहिँ हरि पकरन पाई॥
चहुँ हरि छवि लावन्य रूप पर, हरि तन नहिँ दरसाई
पवन झँकोरन हरि सुगंध तन, रस अनुभूति कराई
कुंज कुंज जागृत अह्लाद रस, चपल चेतना पाई
माँई कहाँ लुक्यो साँवरिया, तुम्हँरी बात सिखाई॥
हृदय वेदना जानि सक्यो नहिँ, यहि अहीर लरिकाई
मानत नहिँ नयना बिन दरसन, झरि झरि नीर बहाई
अब करि कृपा यशोदा मैया, टेरहु कुँवर कन्हाँई
प्रगट रूप तन दरस देहि तेहि जेहि तुम्हरे तन जाई

१०३

खोजत राधा कुँवर कन्हाँई॥
मुरलि नाद तन मन अन्दोलन मोहन टेरि बुलाई
सुध बुध हरन दीर्घ कोमल स्वर चेतन मन बौराई॥
बह्यो मुरलि स्वर ह्रदय तरंगन सुरभित पवन सहाई
नव स्पन्दन रग रग मोहन प्रीत गीत हुलसाई॥
अब केहि वन यहि छुप्यो साँवरो नयन दरस ललचाई
"कौशल" नयन थक्यो खोज करि तरु लतिका अमराई॥
ह्रदय ज्वार ज्वर बाड़्यो पल पल टूटि बाँध उलचाई
पूँछत राधा पुष्प मल्लिका केहि दिसि कुँवर कन्हाँई॥
पद अंगुरि तन उचकि उचकि तरु पल्लव झाँकि हटाई
देखन चहत राधिका मोहन नयन भीख नहिँ पाई॥
कर्ण सुनत स्वर नयन दीठि नहिँ अंतर जटिल लराई
ह्रदय वेदना जानि सक्यो नहिँ कैसो काँन्ह ठिटाई॥

१०४

कुंजन खोजत कुंज बिहारी
असह वेदना अंतर व्याकुल प्यासो मन वृषभान दुलारी॥
अंग स्वेद अस्थिर मन "कौशल" जलज नयन जलधार दुखारी
खोजत इत उत नयनन कम्पन दरस तरसि दुई नैन भिखारी॥
झाँकत तरु पल्लव लतिका वन कहाँ छिप्यो बृज कुंज बिहारी
नयन एक टक अटकि मदन वन श्याम श्याम दुई नयन पुकारी॥
अंतर ज्वर बृषभानु लाड़ली काँपन धावन पग दुईचारी
ह्रदय वेदना मुख अम्बुज कर प्रगट कँपत पग तन सुकुमारी॥
नहिँ मुरली धुन केलि नहिँ नाचन प्यारी

१०५

सरन सरन बृज कुंज बिहारी, वनज श्रृंगार रूप उजियारी
सरन सरन नित केलि पुजारी, अंग अंग ललकन किलकारी ॥
सरन सरन सुषमा अवतारी, "कौशल" ज्योतिर्गंग सुखारी
सरन सरन चेतन लयकारी, नवल कल्पना चेत खिलारी ॥
सरन सरन श्रुति स्वर रसधारी, तरल नृत्य अंतर लयकारी
सरन सरन आह्लाद सुखारी, सरन सरन बृजकुंज बिहारी ॥

१०६

सारो जग हुलस्यो उजियारी
पात पात तरुवर सित उज्ज्वल पुलकित ज्योति नचत बँसवारी॥
गगन श्यामघन द्युतिमय कम्पन, पवन झँकोरन ज्योति प्रसारी
कन कन जल थल पाति ड़ाल तरु गगन मेघ निकरत ध्वनि न्यारी॥
"कौशल" चपल चेतना थिरकन लहरन इत उत सहज सुखारी
नूतन कम्पन जग स्पन्दन पल पल घन सुषमा छवि न्यारी॥
सबहिँ ज्योति स्वर चेत सिमटि पल घनो पुंज सुन्दर सुखकारी
एक एक अंग प्रगट रूप हरि मुखरित सजग रूप छवि कारी॥

१०७

परम प्रफुल्लित अनुपम मधुरं, हरि गोविन्दं आनन्दम्
चपल चारु नव नृत्य तरंगं, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥
ज्योति शुभ्र उत्ताल तरंगं, हरि गोविन्दं आनन्दम्
परम सत्यवर मौन अनन्दं, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥
चेतन चारु प्रबुद्ध अंगं, हरि गोविन्दं आनन्दम्
सहस्त्र शुभ्रदल सरसिज अंगम्, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥
वेणुनाद लय लास अनन्दं, हरि गोविन्दं आनन्दम्
परम गीत संगीत तरंगं, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥
सुषमा सागर ललित अनंद, हरि गोविन्दं आनन्दम्
"कौशल" केलि कलोल अनन्दं, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥
राधा छवि अनुरक्त अनंगं, हरि गोविन्दं आनन्दम्
श्री बृजधाम अनंदित मधुरं, हरि छवि केवल आनन्दम् ॥

१०८

श्री मोहन सुखारी सारो जग उजियारी
रिमझिम द्युति न्यारी छिटकारी की जै जै
मुख श्यामल बिहारी द्युति नैना उजारी
श्वेत रंग संग कारी लयकारी की जै जै
माथ तिलक निखारी दृग काजल की धारी
पान अधर किनारी रंगवारी की जै जै
सिर मुकुट टिपारी कर्ण कुण्डल उजारी
लटकनि द्युतिधारी झुलवारी की जै जै ॥
केलि कुंजन खिलारी बनि ठनि बनवारी
कंज कोमल श्रृंगारी छविधारी की जै जै
वेणुनाद लयकारी उतरनि चढ़ि न्यारी
चित्त चित्त को पुकारी ललकारी की जै जै
श्री राधिका दुलारी प्रीत कुंजन खिलारी
फाग सावन सुखारी गुँथवारी की जै जै
रस रसिक भिखारी "कौशलेन्द्र" सुखकारी
खुलि खुलि बाँट डारी रसधारी की जै जै

१०९

देखु सखी यहि सौम्य चपल हरि
चंचल चितवन कलकल ड़ोलनि
मुसकनि धीर सुधीर अधर धरि ।।
उड़रनि उढ़ि नभ अंचल लहरनि
ऊँचो पवन झँकोरनि चढ़ि चढ़ि
सरस नचावत पैंजनि नूपुर
चंचल गुँजन झनझन पग धरि
योगिराज सौं धीर मुखाकृति
ज्योतिर्पुंज शुद्ध निखरि हरि ।।
ज्यौं सुषमा कल्लोलत सागर
पल पल ऊँचो नचत लहर भरि
तेहि के मध्य परम पावन छवि
तुंग अड़िग पिण्ड दृढ़ हिमगिरि
एक रूप हिमखण्ड नीर त्यौं
तरल ठोस इक संग प्रगट हरि ।।
चेतन देस काल लय "कौशल"
जोर तरंग वेग संसृत भरि
आदि रूप हरि उद्‌गम अविरल
युगल स्वरूप नचत ठहरि करि
नाचत लोहचक्र सौं पल पल
लौह धुरी अच्युत निश्चल हरि ।।
चपल अंग सखि सुषमा चंचल
अमित सौम्य गम्भीर हृदय हरि
नाचत वेणुनाद उन्मादन
योगी स्वयं सुखी अंतर थिर
बाँको चंचल बाँको अविचल
दुगनित सुन्दर प्रगट रूप हरि

१९०

राधा छवि सूधो भली टेढ़ो कृष्ण बिहारि
पूरक परिपूरन बुन्यो टेढ़ो सूध अकार॥
शुभ्र क्षार रस राधिका तीखो अम्ल बिहारि
रूप रसायन घोलि छवि समस्वभाव रसधार॥
ललित राधिका इन्दु छवि दिनकर अंग बिहारि
अनुपम द्युति समरंग भुवि ब्रह्मवेलि उजियारि॥
श्री राधा नित शान्ति रस वीर अधीर बिहारि
मिलि "कौशल" दुई प्रेम रस मधु लालित्य 'श्रृंगार'॥

१११

कान्हाँ नाचत सुघड़ सुडंग
बिन विकार हरि चहुँ सुचारु छवि लहरत निर्मल गंग॥
नित्य दिसा विचारि अंग हरि नाचत ज्वार उमंग
जटिल कठिन कँह सलिल सुकोमल अविरल व्यापन अंग
उठि उठि नमन लचकि पुनि धावन "कौशल" सृजन तरंग ॥
हरि श्रृंगार बाँक छवि जैसो चित्त प्रवृत्ति उमंग
तैसो दसा दिसा रुचि नाचन अमिय लास रस गंग
नित्य नवल अभिव्यक्ति प्रगट रस जैसो भाव उछंग ॥
मधुर ताल रस लय स्वर झंकृत प्रमुदित शब्द मृदंग
वेष भेद रस किंचित अंतर नृत्य श्रृंगार उछंग
नर्तन रत अनवरत झरत छवि नूतन तबहिँ अभंग॥

११२

सखि देखहु सुन्दरता धाई
प्रथम किरन द्युति प्रगट रूप हरि दौरि दौरि सुषमा छवि छा
उत देखहु जँह रह्यो कुंज घन हरि छवि पहुँच्यो जाई
"कौशल" हुलसि उमंग चेतना सुमन अंग बौराई॥
देखहु सखि छवि पहुँच्यो सरवर घुलि तरंग लहराई
पुलकित सरसिज कम्पित मनसिज भ्रमरन पाँति लगाई॥
देखहु यहि दिसि पीत हरित छवि धान तरंग नचाई
घूँघरवारी घन परछाँई दौरि दौरि मँड़राई॥
छवि दौरन नहिँ पकरि सक्यो सखि सुषमा गंग बहाई
उरझि उरझि जब दीठि बढ़्यो छवि औरे बेगन धाई॥

११३

संसृत सलिल कलोलन पल पल हरि चंचल उद्गार
"कौशल" अबहिँ भाव जेहि हरि हृद पँहुचो सागर
नव आकृति नव रूप कल्पना पल पल सूक्ष्म विचार
हरि उमंग संग तुरत प्रगट छवि लहरत पारावार ॥
परम रश्मि हरि छवि द्रुत धावन आर पार रसधार
सुषमा नवल तरंगन हलचल प्रगट भाव साकार ॥

१९४

हरि नव केलि रास उत्साही
नृतन उठत हिय जोर लालसा फिर कछु सूझत नाहीँ॥

ऐसो नृत्य केलि अनुरागी ऐसो ठीट अहीर
नचत नचावत उरझि सृष्टि नव पुलकित अंग अधीर
सृजन तरंगन प्रेरि जोर रस नचत चपल अविनासी॥

परम स्वतंत्र एकात्म रूप धरि नाचत केलि अकेल
राधा सुषमा सृष्टि विभाजन कबहिँ नचत दुई मेलि
अगनित प्रेम पुजारिन गोपिन रसिक रास उरझाँही॥

कन कन कंगन झनझन नूपुर शुद्ध घंटिका बोल
घननि घननि घन धृकन् धृकन् धन नवमृदंग कल्लोल
अभिनय नवल लास्य तन प्रमुदिन लय तरंग हरसाहीँ॥

होरिधार भरि शुद्ध चेतना नाचत चेत फुहार
रूप भाव श्रृंगार लहरिया झूलनि तेज प्रसार
ठसक ठाठं कहँ मेघ मल्हारहिँ रस फागुन भरमाहीँ॥

कबहिँ नृतन तन पवन झँकोरन बदरी गहन गम्भीर
धानी धान तरंग हिंडोले धरती डोल सरीर
दोऊ झूलि झुलावन सावन लहरन रस बरसाहीँ॥

कबहीँ नृत्य करत वृन्दावन दे दे ताल मृदंग
वेणु नाद उन्माद बहत नव छवि रस छकित तरंग
कुंजन केलि करत कल्लोलत, लखि "कौशल" ललचाहीँ॥

११५

अबके बादर बरस्यो सावन
अम्बर घेर्‍यो बहु अषाढ़ घन अब तेहि निर्झर झरि मन
चहुँ अकाल बरि काल नृतन करि दावानल हुँकारन
तरप्यो पल पल थल पर जलचर तरुवर नगन पुकारन॥
चक्रवात हुंकार लेत लव लौकत वायु झँकोरन
धाँ धाँ अम्बर धरती ज्वाला रसना अगिन प्रसारन॥
अति उत्पात रगन ज्वर अंतर धरती अंग तपावन
नगन अंग चहुँ चिटकि पर्‍यो तन जीवित प्रान नसावन॥
तबहिँ गरजि घनश्याम श्याम तन दामिनि कौंधि पुकारन
अमिय प्रेम जल छलकि छलकि घट जीवन बरस्यो साव
जद्यपि कुटिल ताप संचालित धरती उमंगि लुभावन
प्रथम बाढ़ि ज्वर तन रग व्यापन शीतल चेत प्रसारन॥
"कौशल" उलटि फेरि परिवर्तन विषम श्रंगार सुहावन
पतन उदय नित सृजन तरंगन हरि आनंद नचावन॥

११६

छहरि छहरि हँसि बादर बरसन
मॉनहु हरि मुसकान मनोहर तरल रूप धरि नर्तन॥
घनश्याम श्याम छवि रूप मधुर धरि घेर्‍यो सकल अका
पवन झँकोरन बहत झरत छवि कोमल हास विलास
तरल तुषार मंद रस छिटकन, तरल लय पवन कम्पन॥
धुंधुर धवल कल्पना कोमल, चंचल केलि कलोल
ओढ़ि श्वेत नव भीनि चुनरिया, धरती लजत सलोल
लहर चूनरी पवन लहरिया, अंग कामिनी अलसन॥
इत उत इत उत छहरत बरसत निर्मल धवल तरंग
जेहि दिसि पवन हिंड़ोल झूलनो तेहि दिसि बहत उद्दंग
हरि छवि बरसन झूलि तरंगन बादर धुंधुर छलकन

११७

हरि जब नाच्यो मेघ मल्हार
एक ओर स्वर छवि रस लहर्‍यो दूजे नच्यो फुहार॥

ज्यों रस बीना धमक गूजँ स्वर गरज्यो तरज्यो मेघ
झंकृत स्वर रस उठि उठि लहर्‍यो धायो मेघा वेग
जेहि दिसि बीना लय रस फँक्यो बरखा कर्‍यो प्रहार॥

तीखो स्वर झनझन लय गूँजन बीना बज्यो गम्भीर
उमड़ि उमड़ि रस गूँजत गर्जत आकुल मेघ अधीर
मादक मधुर अलाप चाप द्रुत तैसो मेघ पुकार॥

धृकम् धृकम् धृक् तम् तम् झंकृत तीखो गहन मृदंग
लहरन मेघा नाच्यो बरखा कम्पन ताल सुडंग
मेघा ताल देत इतरायो रस मृदंग छलकार॥

हरि समरूप मेघ बीना स्वर पुलक्यो ललित सरीर
घननि घननि घन नूपुर धुनि स्वर नाच्यो ललकि अधीर
तरल लहरिया वेणु लास्य नृत प्रगट नचत उद्‌गार॥

ऐसो रंग जम्यो हरि नर्तन लोक अलौकिक रूप
लास्य नाद रूप रस घुरि घुरि लहरन एक स्वरूप
क्यों नर्तन हरि छेड़ि दियो यहि, वीणा मेघ मल्हार॥

११८

लहरि लहरि लहराय लहरिया सावन इद्रंसरासन रंग
पीत लहरिया अरुन लहरिया हरित नीलिमा अंग तरंग॥
कारो कम्पित संसृत छवि हरि मंथन कर्षन अनत सुंडग
हिय उमग्यो श्रृंगार लहरिया उठत नचत हरि अंग अनंद ॥
प्रगट ज्योति हरि रूप लहरिया इन्द्रधनुष बहुरंग सुंडग
कम्पन अंतर क्रम परिवर्तन सृजन शक्ति उन्माद उद्दंग॥
हरि नर्तन लय लास लहरिया लहरत देस काल भ्रूभंग
चपल चेतना चढ़ि चढ़ि लहरत सृजन लहरिया अंग तरंग॥
तैसो ही लयनाद लहरिया मधुर बाँसुरी बीन मृदंग
ललकन पुलकन झंकृत गुँजन क्रम अंतर श्रुति अंग तरंग॥
हरि छवि तेहि जड़ चेत लहरिया कन कन पल पल ललित
क्रम करि अंतर जगत निरंतर इंद्रसरासन नचत तरंग॥
हरि उद्गम रस रूप लहरिया "कौशल" हरि उन्माद उमंग
केवल हरि छवि एक लहरिया सकल सृष्टि बहुरंग तरंग॥

११९

बरखा बरसन लहरन लहरन
सखि देखहु हरि रूप लहरिया, नव अनंद कल्लोलन॥
कारो घटा घेरि दिग लहरन, छलकन निर्झर नीर
मेघा देन चहत वसुधा को अपनो सकल सरीर
प्रमुदित कवि मन हृदय सुकोमल, हरि छवि भरि भरि
पवंन झँकोरन लहरि हिंड़ोले, धुंधुर तरल तरंग
केलि छेड़ि कल्लोल मधुर रस, भीजत धरती अंग
तरुवर भीजि नवल सुख उँमगन, धवल अंग मद अल
हलको पीरो गहन हरित रंग, भूतल धान तरंग
तन कल्लोलन बदरी छाया, धूप छाँव इक संग
गहन मूँज लहरन लय अंचल, हरित श्वेत रंग कम्पन॥
श्यामल घटा श्याम सौं धरती, तरुवर पीरो पाँत
तेहि सम्मुख शुचि धवल शिवालय अरुन केतु फहरात
"कौशल" मधुर रूप छवि डोलन हरि उमग रस के

१२०

दिग दिगन्त घन मेघा छायो
ऐसो दिसाहीन द्रुत धायो, मानहुँ ड़ोर छुड़ायो॥

पृथवी जाग्यो हृदय लालसा, अंतर अंग अनंग
प्रीत नेह रस रूप लालसी, देख्यो मेघ तरंग
आकुल हिरदय अधर पिपासा, धरती प्रीत जगायो॥

बादर मोह्यो वसुधा अंगन, धरती मोह्यो मेघ
पल पल बादर बिजरी कौंध्यो, भूतल अंगन भेदि
गागर सौं सागर रस उलच्यो, धरती झूम नचायो॥

इत उत चहुँ दिसि पानी पानी, वसुधा प्रीत भरी
बदरी चुम्बन चाहत धरती, धरती लजत खड़ी
धुँआधार मेघा तन ललक्यो, भूतल अंग समायो॥

धरती अम्बर एक रूप ह्वै नाच्यो एकल रंग
एक भाव रस वह्यो एक जब, उलझ्यो दूजे अंग
कँह धरती कँह अम्बर बदरी, सम स्वरूप लहरायो॥

हरि करि नवल चेतना नर्तन निर्मल गंग तरंग
"कौशल" झूम पर्‍यो तन प्रमुदित पृथवी बादर अंग
छन छन चित चेतन हरि दर्शन, अंतर पाय अघायो॥

१२१

बादर धरती बरसि पर्‍यो तन
छन भर सोच कियो नहिँ ऊपर वसुधा अंग धर्‍यो घन॥

पावन धरती अगिन पिंड़ सौं तपबल तपित सरीर
कन कन अंगन त्रसित पिपासा व्याकुल नीर अधीर
रस कल्लोलन घन आलिंगन मंमद नाहिँ जग्यो मन॥

प्रथम बूँद रस पर्‍यो त्रसित तन व्याकुल उठ्यो उद्दास
उठि नव गंध उमस चहुँ व्यापो रग रग ताप निकास
तान्यो मदन बान सन्धानो प्रमुदित भूमि हन्यो छन॥

धरती विह्वल रस तन व्याकुल दौर्‍यो प्रीत तरंग
एक ओर तप तपित तपोबल दूजे अंग अनंग
तरस्यो कबहिँ प्रीत सौं हरस्यो कबहूँ लाज भर्‍यो मन॥

चंचल धरती चंचल बदरी चंचल प्रीत प्रवाह
बदरी ड़ोलत वसुदा अंगन धरती कीँन्ह विवाह
जेहि दिसि जैसो घन आलिंगन प्रमुदित रूप धर्‍यो तन॥

आज हरी रस रूप अनोखो ''कौशल'' कियो कलोल
ड़ोलत धरती बदरी अंगन चढ़ि चढ़ि प्रीत हिंड़ोल
हरि नर्तन जेहि चाहत जेहि रस बानक ताहि बन्यो छन॥

१२२

आयो दौरि दौरि घन सावन
लखि लखि जीव अचेतन दौर्‍यो गति बौरायो तन मन॥

दौर्‍यो धूप छाँव होड़ करि श्यामल गौर तरंग
"कौशल" बदरी दुरत प्रगट तन दौर्‍यो अंग पतंग
बादर छहरि छींट द्रुत दौरन सूर्य ज्योति दमकावन॥

बरखा दौरि संग द्रुत दौरन पसुगन प्रीत विभोर
तरुवर अंतर छिप्यो सिमटि तन अपनो अंग मरोर
पंछी पवन संग उड़ि धावन अंग अंग रस सावन॥

पवन दौर संग लहरन धावन धानी धान तरंग
लहरन लचत नचत बँसवारी दौरन अंग उमंग
द्रुत गति भरि तरु दौरन चाहन पाति उड़ाय नचावन॥

सबहीं नाचि रंग हरि नर्तन धावन अपनो ढंग
दौरन भूलि गयो केहि आगे को है केहि के संग
एक दिसा द्रुत बदरी दौर्‍यो दूजे धरती धावन॥

१२३

घूमि घूमि तन गगन घेरि घन बरसन रस उल्लास
घन श्याम श्याम तन चंचल नर्तन प्रमुदित सलिल विलास॥

पूरब दिसि धँसि गगन ढकेलत व्यापत बदरी अंग
सन सन पवन लपेटन दौरन बरखा कारि भुजंग
तरुवर आकुल बरखा कम्पन झुकि झुकि नमत पि

पच्छिम झुकि छलकत छवि सुषमा दिनकर रश्मि प्रचंड़
पूरब कारी घन परछाँई दौरत पृथ्वी खण्ड
पतझड़ सूखो पात अकारज धावन चहत अकास॥

तपित त्रसित पृथ्वी रस ललकन सौंधी सलिल सुग
तपित अगिन तन रग स्पन्दन पायो प्रीत अनंद
विचलित कन कन भूतल अंतर मादक मदन विल

खरभर मच्यो ड़ाल को पंछी तन मन चंचल प्रीत
उडत पवन के संग कबहुँ तो कबहुँ पवन विपरीत
श्वेत शिवालय अरुन पताका लहरन उमंग अकास॥

पूरब द्रुत बदरी तन धावन आवन अंग मरोर
धरती वेग ढ़केलन पग सौँ "कौशल" पूरब छोर
दोनहुँ दौरि केलि उत्सही प्रकृति दौरि उल्लास॥

सावन केलि करत अनुरागी बसि बादर घनश्याम
पल पल नूतन रूप कल्पना नूतन अंग ललाम
रूप लहरिया सबहिँ छकायो पावस वेग विलास॥

१२४

रिमझिम बरसे बदरी निर्झर
निश्चल गहन पवन तन छनि छनि छहर छहर लघु बूँदन झरझर॥
तरल ज्योति सौं लहरे फहरे शुचि फुहार धरती अम्बर भरि
मॉनहु अगनित धवल पताका फहरँ शुभ्र शुद्ध रूप धरि॥
ऊँचे चढ़ि चढ़ि धवल महल शुचि झाँकि झरोखे राधा नागरि
प्रभुदित देखि देखि छवि सुन्दर धरती धवल नवल श्रृंगार करि॥
बगुला शुभ्र पाँति माल गुँथि धवल मेघ धँसि धँसि अंतरतर
धवल शिवालय अरुन पताका, "कौशल" भीजत फहरत फरफर॥

१२५

लखि लखि हरि नर्तन मन झूम्यो
परम विलास लास नृत सुषमा अम्बर धरती चूम्यो ॥
बादर घिरि तन उतरन ललकन
अंग मरोरन तरुवर चुम्बन
धरि धरि अधर धवल गिरि पुलकन
मनज अंग आह्लाद प्रफुल्लित तृप्त पिपासा झूम्यो ॥
सीतल सजल समीर झकोरन
पूरब ते घन आवन लहरन
नदी तलहटी दिसि घन दौरन
उतरन सूधहिँ सूधो नर्तन पुनि मुरि दरिखन घूम्यो ॥
नवल पतंग अरुन तरुनाई
बादर झाँकि अबीर बहाई
जल धुलि तरु पल्लव दमकाई
बदरी छाया चहुँ द्रुत दौरन माँनहु मारग भूल्यो ॥

हरित गोल गिरि सूर्य रश्मि दल
बदरी छाया गिरिवर समतल
सघन नील छवि भूधर अंचल
पर्वतमाला हरित पीत अंग निकट दूर तन घूम्यो ।।
दूर तलहटी केलि कलोलन
धूप छाँव नव लहर प्रलोभन
पतरी तरुन नदी तन ड़ोलन
लचकन श्वेत बेलि तेहि ऊपर बदरी अंचल झूम्यो ।।
कैसो रच्यो सृष्टि हरि नर्तन
जटिल कठोर अंग जड़ पाहन
घोलि प्रीत आह्लाद सुहावन
सुषमा रूप प्रसारित "कौशल" हरि तेहि सावन चूम्यो ।।

१२६

घन बूँदन भूतल बिखराई
एक एक गिनि वेग जोर भरि बूँदन दौर लगाई॥
ज्यौं निर्झर झर ब्रह्म कमंडल गंग तरंगन धाई
तैसो अमिय बूँद बूँद तन दौरन होड़ लगाई॥
तपित अंग तन बूँद परत छन व्याकुल भूमि जराई
अंग भेदि कछु धँसत बिखरि तन बूँद बूँद छितराई॥
एक ओर घन श्यामल बदरी श्यामल क्षितिज कराई
दूजे झुकि झुकि सूर्य झाँकि घन बूँद ज्योति बिलगाई॥
"कौसल" हरि कल्लोलन हलचल नूतन स्वांग धराई
बरसि रह्यो छवि बूँदन बँदन रस भूधर बिखराई॥

१२७

बादर बरबस बरस्यो सावन
हरि स्वर वेणु नाद सम्मोहन आयो घन वृन्दावन॥

जोर हुँकार लेत वेणु स्वर
गुँजन कम्पन धरती अम्बर
आज आदि स्वर लहरत निर्झर
बृजवन तरल तरंगन॥

पवन झँकोरन लहरत वन वन
तेहि पर लहर चढ़्यो स्वर कम्पन
हरि उन्माद भाव मुग्ध मन
लहरत झंकृत चेतन॥

सबहीं दौरि घेरि वृन्दावन
जड़ ते चेतन चेतन जीवन
एकै भाव मगन मन नर्तन
आह्लाद नाद सम्मोहन॥

"कौशल" दूर दौरि श्याम घन
आयो गहन गम्भीर चारु तन
घेरि बेरि नाच्यो नभ वन वन
लय स्वर मधुर तरंगन॥

सुषमा सृष्टि कर्‍यो आलिंगन
बरबस बरसि पर्‍यो सावन घन
हरि नर्तन संसृष्टि सुखद मन
नाच्यो धँसि वृन्दावन॥

१२८

बादर बरसि रहे कजरारे॥

रिमझिम रिमझिम बूँदन बरसन
पुलकि पुलकि धरती अंग ललकन
पल पल झंझावत गज गरजन
नाचत अम्बर कारे॥

अम्बुआ ड़ारी भीजि भीजि तन
पाति पाति टपकन बूँदन कन
घननि घननि घन गरजन सावन
नृत्य मोर ललकारे॥

बूँद अंग सरसिज परि पावन
पल छन रुकि तन ढुलकि नसावन
सरसिज सुषमा ज्योति निखारन
न्हाय के बूँद फुहारे॥

सरवर बूँद परन जल कम्पन
बूँद बूँद निज छवि छन छापन
मिलन विलय जल अंग बूँद कन
हरि घुरि हरि मतवारे॥

१२९

बादर बरसि रह्यो बरसाने
श्यामहिं श्याम रंग वन कुंजन
श्याम रूप घनश्याम सुहाने ।।

बरसत श्याम विष्णु पर्वत पर
शुभ्र ज्योति शंकर गिरि ऊपर
गिरिवर ब्रह्म स्नान करत झर
बरसि बरसि सनमाने ।।

आयो वेग छोर वृन्दावन
घेरि क्षितिज व्यापो श्यामल तन
हरित अंग बृज "कौशल" नूतन
भीजि भाव हुलसाने ।।

वृषभानु सुता गृह मंदिर सुन्दर
राधे चपल ललित छवि अंतर
छलकत रूपहिं भाव समुन्दर
प्रगट नचति मनमाने ।।

यहँ कहँ हरि लीलाधारी
फिरत नचत बृजवन फुलवारी
को जाने केहि रूप निखारी
झूलत रस बरसाने ।।

१३०

बादर बूझत किधर कन्हाँई
सागर जल जब रह्यो सुन्यो हरि प्रगट रूप दरसाई ॥
जलधर बनि हरि खोजन निकस्यो धरती अंग नचाई
हिम गिरि नदी तलहटी ढूँढ़्यो तरुगन अंग लगाई ॥
पूछ्यो वन मयूर नाद करि, बगुला पाँत बुलाई
खोज्यो हरि रजनी दुति दामिनि, नहिँ पायो हरिराई ॥
ले चलु पवन वाहिनी चंचल गोकुल जहाँ कन्हाँई
"कौशल" हरि लखि दिव्य रूप तेहि, बरखा अंग निल्हाँई ॥

१३१

न्हाय के मेघ फुहारन ते हरि अंग स्वरूप नयो निखरो
श्री अंग पै बूँद फुहार पर्‍यो लसि जाय कबहुँ गिरि के उबरो
नव पीत वसन तन आनि लस्यो छवि श्याम तरंगन यौं निकरो
ज्यों पीत बसन्त सुकोमल ते घन सावन झाँकि लख्यो विखरो॥

हरि बाँक स्वरूप रिझाव नयो सिर केस बनाय जंजीरन
भीजि के मेघ फुहारन सौं लट ते छिटके रस हीरन धार
नयनन कोर सुशोभित उज्वल मोतिन बिन्दु सुधीरनवारी
लटकनि सुन्दर नीर नासिका कम्पन बूँद अधीर अनारी।

रस नाद मंद उन्माद नचत नव मेघ फुहार झँकोरन सौं
हरि भीजत झूलत पैंगन सौं हिय चाव अनंद विभोरन हो
नव वेणु मृदंग सुकम्पित झंकृत जैसो वेग हिंड़ोलन को
हरि झूलि तरंगन झूलि नाद स्वर झूलि फुहार झँकोरन सौं॥

श्री राधा छवि रस भीजि चुँनरिया सुषमा अंग बनी सो बनी
न्हाय के मेघ फुहारन सौं श्री अंग तरंग घनी ते घनी
वृषभानु सुता संग नंद लला रस प्रेम सुधा सौं सनी सो सनी
छवि कोमल गौर सुसुन्दर अंगन, पैंगन होड़ ठनी सो ठनी।।
सावन तीज अनंदित लीला "कौशल" अंग कलोलन को
मोहन के संग भीजत राधा पैंगन होढ़ हिन्ड़ोलन को
रस मत्त विलोकन रूप प्रलोभन प्रीत हिंड़ोलन झूलन को
जेहि भीजि सक्यो रस पाय छक्यो तेहि और न लोभ विलोकन को

१३२

निखरो अंग रूप हरि पावन
ज्यों ज्यों पवन झँकोरन के संग झरि झरि बदरि बरस रस सावन ।।
भीजि अंग हरि नृत्य तरंगित झन झन नूपुर मंद सुहावन
रस मृदंग नव धननि धननि स्वर वेणु नाद लय भीजि लुभा
किंचित किंचित बदरी सिंचित राधा गौर रंग मनभावन
गौर श्याम नव रूप निखारन झरि झरि बरसि रह्यो घन साव
भीजि चुँनरिया भीजि अंगरखा "कौशल" भीजि शृंगार लुभावन
केसर तिलक भाल घुलिं चंदन नयनन काजर रेख सुहावन
अधर नासिका गोल कपोलन बूँदन किंचित सिँचित पावन
कुंतल केस गहन कालिमा नागिन भीजि कंध लहरावन ।।
भीज्यो हरित हरि-बाँस बाँसुरी स्वयं बजत स्वर मेघ मल्हार
भीज्यो मधुवन भीज्यो तरुगन पुष्प अंग नव रंग प्रभावन
सकल सृष्टि उल्लास नृत्य लखि दुगनित नूतन मोद मनभावन
समय भीजि अंग भीजि देस तन तेहि अंतर राधा हरि पावन

१३३

अंग अंग सुन्दर सुघराई
श्री राधा संग परम प्रफुल्लित भीजि रह्यो हरि कुवँर कन्हाँई
भीज्यो पाग अंगरखा भीज्यो पुष्प श्रृंगार सुहाई
नयन विशाल कोर काजल जल चंदन तिलक भिगाई
सुघड़ नासिका चिबुक चारुतम बिन्दु इन्दु समुदाई
अंग ज्योत्सना छलकि पीत पट प्रगट अंग तरुनाई
ऐसो नव लावण्य भीजि छवि सुन्दर कुवँर कन्हाँई

गौर अंग श्री राधा भीज्यो अधिक रूप उमगाई
सुषमा छवि रस पूर्ण सरोवर सुधा इन्दु बरसाई
बुन्दनि बूँदन छुअत गौर तन ज्योतिर्ज्योति मिलाई
रूप अनंदित अंग अनंदित भीजि भीजि हुलसाई
भीज्यो धानी रंग चुनरिया प्रमुदित कुँवर कँन्हाई॥

भीज्यो चाँप चूरि चौबिन्दी लटकनि नीर सुहाई
कर्णफूल नव खंजरी भीज्यो कंगन भीजि लुभाई
मोतिन हार नीर मोतिन सौं स्वाती मेलि जनाई
कुंचित केश लोटि नागिन सौं भीजत काँध धराई
श्री राधा लखि रूप एकटक मोहित कुँवर कन्हाँई।

प्रमुदित शंख नाद हरि स्वर भरि सकल सृष्टि कम्पाई
श्री राधा भय विस्मित चेतन श्री हरि अंग लगाई
बरसि नाद लय मेघ हुँकारन नीर जोर बरसाई
पवन हिंड़ोले नाद नीर चढ़ि नव तरंग लहराई
भीजत सकल सृष्टि तेहि अंतर राधा कुँवर कन्हाँई।

१३४

आय गयो रितु झूलनिवारी
ज्यौं बादर संग धरती झूले, त्यौं राधा संग कृष्ण बिहारी ॥
वन-वन अँम्बुआ ड़ाल ड़ाल सजि झूलत वृंद ग्राम सुकुमारी
पैंग पैंग उड़ि लहरि चुनरिया, हरित बसंती लाल किनारी ॥
भीजि रह्यो तन ''कौशल'' बूंदन, पैंग लहर संग निर्झरधारी
स्वर मृदंग संग बीन पखावज, गायन मधुर कंठ लय न्वारी ॥
एक सखी द्रुत पैंग जोर भरि, फैंक्यो माल पुष्प की धारी
एक माल दुई कंठ फब्यो छवि, श्री राधा हरि कुंज बिहारी ॥

१३५

जो हरि रह्यो अकेल आज भरि पैंगनि झूलि रह्यो॥
नव सुशमा द्युति व्यापन अविरल
मुक्त लहर संचालन पल पल
वेग पैंग उठि धावन हलचल
छवि घुलि घोलि रह्यो॥
उठत उठत पल पल अम्बर पर
वेग छोर लहि छुअत अपरतर
पुनि आवत यहि ओर जोर भरि
दुई छोरन ड़ोलि रह्यो॥
झुलनि झुलाय गोप गोपिन संग
श्री राधा उन्माद प्रेम रंग
बादर पवन झँकोर जोर अंग
चपल कलोल कर्यो॥
कौन प्रभाव सघन सावन कर
हरि को छेड़ि अर्यो अंतर तर
झूलनि ललकि चड़्यो आतुर हरि
छवि एकल भूलि गयो॥

१३६

हरि अनन्त रस झूलि तरंग
पैंगन झूलि अकेलो हरि तो कबहिँ राधिका संग ।।
छवि चंचल विस्तार दिगंचल
सिकुरि समेटन अंग जोर बल
उलटि पैंग जड चेतन दिग बल
केवल बिन्दु अभंग एक दल
दोउन अन्तर झूलि निरन्तर निश्चल चलित तरंग ।।
पैंगन द्रुत नव जोर वेग भरि
मंद सुमंद विकास कबहिँ करि
श्री राधा संग पैंग प्रीत हरि
झूलनि सम विलास मंद छवि
कबहिँ वेणु स्वर रूप लहरिया झूलन बोल मृदंग ।।
एक ओर पृथवी पल पुलकन
उमगि प्रफुल्ल अधीर मधुर मन
बदरी चुम्बन चहति भूमि तन
बरबस बरसि बरसि नीर घन
धरती अम्बर मिलनि झूलि हरि पवन झकोरन अंग ।।
नित अनित्य दुई छोरन झूलनि
सीमित कबहिँ अनत तन ड़ोलनि
चपल चेतना जड़ भरि पैंगनि
हरि छविवंत रूप कल्लोलनि
झूलनि झूलि रह्यो हरि दिसि पल काल निमित्त तरंग ।।
हरि झूलनि रस पैंग लहरिया
प्रगट दुरत कर्षण बावरिया
निर्गुन कबहिँ सकार भँवरिया
रसिकन हिय रिझवान झुलनियाँ
"कौशल" झूलनि झूलि रह्यो हरि रूप शृंगार उमंग ।।

१३७

नूतन पैंग उद्दारि आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
नवल सृजन उद्गार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
कल्पित पारावार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
चेतन सिन्धु अपार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
सुषमा पारावार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
सिकुरन व्यापनहार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
निरंकार साकार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
उद्गम रूप अकार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
बरसत नचत फुहार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
बरजोर पैंग भरमार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
झंकृत सूर मल्हार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
ताल मृदंग निखार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
पुष्प कंज श्रृंगार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
राधा संग विहार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।
प्रीत पैंग भरमार आज हरि झूलनि झूलि रह्यो
''कौशल'' चित चितकार आज भरि पैँगनि झूलि रह्यो ।।

१३८

रसिकन को भरमाय सँवरिया झूलनि झूले
सकल सृष्टि मंड़राय, हिंड़ोले पैंगनि ड़ोले
पल पल नयो उपाय, मोहिनी हिए कलोले
रसिकन रस तरसाय, सँवरिया झूलनि झूले॥
पवन झकोर सुहाय मूँदि हरि अँखियाँ खोले
बरखा बूँद नहाय अंग मन सावन घोले
''कौशल'' मन ललचाय कंठ स्वर गायन बोले
रसिक हिंड़ोल चढ़ाय सँवरिया झूलनि झूले॥

१३९

मोहन ऐसो झूलि झुलावैं
ऊँचे चढ़ि चढ़ि पैंग पैंग बढ़ि
नवल दृष्य पल पल दरसावैं ।।
'जेहि छन आयो सावन झूलो
प्रतिपल झूलनि हरि ललचावैं
एकल झूले सब संग झूले
मोहन तो बस झूलनि भावै ।।
कबहीँ पैंगनि पवन संग चढ़ि
अम्बर बदरी अंतर जावै
कबहीँ धरती ओर जोर भरि
मोहन को यहि झूलो आवै ॥
कबहीँ वनिता गोवर्धन तरु
गैयन सब लघुतर दरसावै
"कौशल" सबहिँ बड़ो तन धारैं
ज्यों झूलो धरती दिसि धावै ।।

१४०

कँन्हैया ! यहि कैसो झूलि झुलाव ॥
मोहन के संग अँखियाँ झूले
भृगुटी झूले पलकन झूले
मुसकनि झूले अधर मधुर यहि कैसो झूलि झुलाव ॥
रूप हिंड़ोले मोहन झूले
मोहिनि झूले छलबल झूलें
अंग झूलि शृंगार लहरि यहि कैसो झूलि झुलाव ॥
मधुर कंठ लय श्रुति स्वर झूले
तान कल्पना सुरसरि झूले
पैंग झूलि हरि गान संग यहि कैसो झूलि झुलाव ॥
हिये उमंगन पल पल झूले
चित्त भाव रस कल कल झूले
कौशल झूले प्रीत रग यहि कैसो झूलि झुलाव ॥

१४१

ड़ोले रे ड़ोले, श्री राधिका हिंड़ोले
छवि चंचल कलोले चंचलता पे चढ़ि चढ़ि
हिय चंचल हिंड़ोले, और जोर जोर झूले
हिय कल्पना भी झूले हिंड़ोले पे बढ़ि बढ़ि
पैंग पैंग दृग ड़ोले, मुसकनि झूलि झूले
रस आनंद भी झूले, नव चेतना को भरि भरि
"कौशल" झूलि झूले यौं राधिका हिंड़ोले
हिय झूलन जे झूले तेहि झूलन पे चढ़ि चढ़ि ॥

१४२

झूलि झूलि राधा महरानी
लहरि हिंन्ड़ोले रूप दामिनी ज्योतिर्गंग सुहानी॥
घेर्‌यो घटा श्याम घन सावन तेहि सम्मुख बृजरानी
दुई छोरन झूलनि ज्योतिर्छवि इन्दु रूप मनमानी॥
सावन पुष्प हिंन्ड़ोरे सजि सखि रेशम ड़ोर सुहानी
सुमन श्रृंगार अंग धरि पैंगनि झूलत राधा रानी॥
झूलि तरंगित तन तरुनाई नवल श्रृंगार सुहानी
झूलत पवन हिंड़ोले चंचल खंजन नयन लुभानी॥
लहरत केश पुष्प माल संग झूल चुँनरिया धानी
अरुन घाघरो पीत अँगरखा लहरत राधा रानी॥
सूर मल्हारन झूलि बीन स्वर सखि मृदंग अकुलानी
झनझन "कौशल" घुँघरू पैंजनी कंगन ध्वनि अलसानी॥
तबहिँ दूर स्वर कृष्ण मुरलिया बृजमंडल लहरानी
भूल्यो झूलनि पैंगनि चेतन आकुल राधा रानी

१४३

चालु सखि कुंजन श्याम बुलाई
लखि बादर बरसन रस आतुर, हरि उमंग उमगाई ॥
नचन चहत तेहि मोर रूप धरि "कौशल" नृत्य चुराई
कबहिँ कूक कोकिल सौं गायन पियू पपीहा गाई
अब झूलन उत्साह उठ्यो हिय झूलो डाल धराई
बाँसुरि धुन हरि टेरि पुकार्‌यो, चालु सखि श्याम बुलाई ॥
प्रेरित नवल तरंग सुगंधित पुरवइया उमड़ाई
लता हिंड़ोरे पुष्प झूलनो, तरुवर पवन झुलाई
अम्ब ड़ारि हरि झूलि झूलनो, रस उमंग अधिकाई
झूलत हिय उमंग कल्पना, चालु सखि श्याम बुलाई ॥

१४४

एक बारि तो झूलहु प्यारी
सज्यो बिछौनो सरल हिंड़ोले, देखहु कैसो झूलि झुलारी॥
हिय अंतर क्यौं झूलि ड़रानो, मारहु मंद पैंग दुईचारी
"कौशल" अति आनंद झूलनो झूलहु श्री वृषभानु दुलारी॥
बाँह पकरि मैं झूलि झुलावौं याहि पोढ़ आम की ड़ारी
नेक यतन गोविन्द मनायो तब झूल्यो राधा सुकुमारी॥

१४५

ड़रि ड़रि राधा चढ़ी हिंड़ोले
लै उह्लास पैंग पैंग संग कछु अनंद मन ड़ोले॥
वदन लसत छन उड़ि उड़ि चूनरि लहरन पवन कलोले
सकुचि सिमटि राधा ड़रि झूलै, "कौशल" कछु नहिं बोले॥
बाँह पकरि हरि झूलि झुलावैं, मदंहिँ मंद हिंड़ोले
कबहिं पैंग हरि जोर जोर भरि हँसि हँसि करत ठिठोले।

१४६

मैं नहिं झूलौं श्याम ठीट संग
बहकि चढ़्यो हरि संग हिंड़ोले,
मार्‍यो पैंग जोर जोर अंग ॥
ह्रदय ड़र्‍यो मन, स्वास थम्यो छन,
झूलनि यहि अहीर कौन ढ़ंग
नयन मूँदि तन अंग थामि छन,
जैसो तैसो झूलि श्याम संग ॥
अब नहिं भूलि चढ़ौं हिंड़ोले,
जेहि मोहन अंग जोर भरे रंग
''कौशल'' झूलौं मंद हिंड़ोले,
हिलि मिलि सहज ग्वालि गोपिन संग ॥

१४७

राधा मैं नहिं झूलि सकौं रस सावन मंद हिँड़ोले
यहि तो मुँहि बसंत रितु भावै मन रस मद्धिम डोले॥
ज्यौं ज्यौं गरजत बादर धावैं मोर जोर सौं बोले
त्यौं उमंग रस जोर पैंग भरि चंचल ह्रदय कलोले॥
बरखा बूँद बूँद बौरायो झूले पवन हिंड़ोले
प्रकृति अंग उन्माद झूलनो और जोर भरि झूले॥
मैं तो नन्द गाँव को छोरो सावन मोसौं बोले
झूलहु जोर जोर भरि पैंगनि प्रकृति संग हिन्ड़ोले॥
अब तो मानि जाहु श्री राधा, प्रीत कल्पना घोलैं
धरती अम्बर नापि पैंग भरि ''कौशल'' झूलनि झूलैं॥

१४८

नहिँ झूलौँ नहिँ झूलौँ तेहि संग
मोहन कितिक बार समझायो, तेहि संग झूलनि नाहिँ लगै मन॥
मैँ भोरी सुकुमारी ग्वारी, तेहि उद्दंड जटिल ढ़ीट घन
तेरो संग नहिँ झूलि सकौँ मैँ, नाँहि मिले मन तोहि झूलि ढंग॥
टेड़ो अंग टेड़ सौँ बतियाँ टेड़ो पैँग टेड़ स्वांग तन
झूलहु नंद गाँव ग्वाल संग, बरसाने नहिँ जोर चले छन॥
इहाँ हठी नँहि चले चातुरी, यहि राधावन नँहि गोवर्धन
जाहि उठाय अँगुरिया थाम्यो, यहाँ चले राधा अनुसासन॥
झूलि सको तो सुख सौँ झूलो, यहि नँहि नाग कालि को मर्दन
बरसाने झूलहु रस "कौशल", पैँगनि लेहु मंद गति सावन॥

१४९

नहिँ अकेल मैं झूलौँ प्यारी
क्यों हठ पकरि बैठि बृजरानी मेरो अंतर कियो दुखारी ॥
देखहु सावन गगन हिंड़ोले बादर झूलत लहर प्रकारी
बरखा झूलन पवन पैंग चढ़ि तरु वर पुहुप, पुहुप मधुचारी ॥
तुम बिन झूलन नहिँ अनंद रस नहिँ उल्लास उमंग सुखारी
दोऊ हिलमिल पैंगन झूलैं, नहिँ अकेल मैं झूलौं प्यारी ॥
सावन बीत रह्यो बृजमंड़ल व्यर्थ जाय पल झूलनवारी
"कौशल" बीतो समय न आवै छोड़हु हठ हिय प्रेम पियारी ॥

१५०

झूलनि मैं नहिँ सुखी बिहारी
कैसो यहि गँवारि खेल तेहि जेहि बिगरी बृजनारी॥
पल पल पैंगन ड़रत हृदय मुँहि चक्करि नयन दुखारी
ऐसो होड़ पवन जोर यहि अंचल बदन उघारी॥
पैंग वेग टूट्यो उरमाला गुंथन केस बिगारी
ना सुध अपनो नाँहि हृदय मन चेतन वेग निकारी॥
नयन चपल नहिँ टिकत एक पल दृग नव दृष्य निहारी
"कौशल" थक्यो चपलता सौँ मन अब थिर करहु बिहारी॥

१५१

भ्रकुटी ऐंठ भरी सुकुमारी
क्यौँ हठ कियो बैठि बृज कुंजन
क्यौँ नहिँ झूलत झूलि कुँवारी ॥
मैं तो इतनो कह्यो प्रेम बस
झूलहु संग रंग सुकुमारी
तेहि संग झूलनि रस कछु अनुपम
दोनहुँ झूलैँ पैंग सुखारी ॥
पाँव पडूँ अब माँनहु प्रियतम
छोड़हु हठ हिय प्रेम पियारी
बीत गए सावन मधु बृजवन
कहाँ हिंड़ोल आम की ड़ारी ॥
ऐसो समय कहाँ फिर आवै
हरियाली सग बदरी कारी

१५२

आज उमंग भरि राधा झूले
"कौशल" नहिँ संकोच हृदय ड़र, झूलनि पैँग पैँग कल्लोले ॥
एक ओर राधा भरि पैँगन जोर जोर अम्बर तन छूले
दूजे छोर जोर गिरिधारी हिय अनंद भरि पैँग हिंड़ोले ॥
पैँगनि होड़ देखि दुई छोरन पुलकित धरती अम्बर ड़ोले
कैसो यहि पैँगन को झूलो जेहि राधा मोहन छवि तोले ॥

१५३

अब तो झूलनि सीख्यो प्यारी
मौँसौँ होड़ लगायो झूलनि कैसो तुम कोमल सुकुमारी॥
थिरकन अंग पैँग अन्दोलन लहरनि लचकनि झूलि खिलारी
कमल हस्त सौँ ड़ोर खींचि तेहि, पद अम्बुज भरि जोरन मारी॥
अब जान्यो सुख झूलनि प्यारी, मन उन्मुक्त केलि मतवारी
सावन तीज अनंदित "कौशल" चंचल हिय बृजभानु दुलारी॥

१५४

झूलनि के संग अम्बुआ ड़ोले
हरि राधा द्रुत लहरि हिंड़ोले पैँगनि गिनि गिनि तोले॥
पैँग पैँग लचि आम ड़ाल लय कोयल पंचम बोले
बादर तरजि गरजि पैँगन सम ताल ठौँकि कल्लोले ॥
गहि गहि पवन झँकोरन पैँगन सुरभि बौर रस झूले
"कौशल" रुकि रुकि हृदय कलोले, पैँगनि अम्बुआ डोले ॥

१५५

देखहु झूलन झूलनिहार॥

पैंगन भरत हिंड़ोलन चंचल,
तेहि संग संसृत डोलन चंचल
छवि सुशमा अंदोलन हलचल
पल पल नव श्रृंगार॥

राधा रूप प्रलोभन चंचल,
तेहि दिसि हरि भरि पैंगन हर पल
पूरन पूरक कर्षन अविरल
प्रीत पैंग भरमार॥

दूजे छोर सुकोमल चंचल
राधा ठेलि हिंडोलन सम्बल
दूरहिं ते सम्मोहन छल बल
दामिनि ज्योति प्रहार॥

पैंगनि होंड़ हिंड़ोलन अविरल
बढ़्यो प्रीत कल्लोलन कलकल
झूलन मध्य झुलावन निर्मल
निश्छल प्रीत विहार॥

भगति भाव झँकझोरन चंचल
रसिकन रस घुलि घोलन-चंचल
"कौसल" चित्त प्रलोभन छलवल
छलकत रस उद्गार॥

१५६

मंथन करि हरि संसृत सागर झूलनि झूलि रह्यो मनभावन॥
पैंगन उठ्यो चढ़्यो लय लहर्यो हरि छवि चपल रूप लहरावन॥
एक ओर हरि पैंग जोर भरि उठि उठि सृष्टि छोर छवि पावन
दूजे छोर पैंग भरि ललकन तरुन राधिका ज्योति सुहावन॥
दोऊ रस उत्साह भरो नव भाव प्रभावन रूप लुभावन
नवल हिंडोल केलि भरि पैंगन झूलत झूलि झुलावन सावन॥
एक ओर घनश्याम श्याम छवि सुन्दर गहन रूप विस्तारन
दूजे चपल चंचला सुशमा उज्वल ज्योति पुंज संचालन॥
दोऊ कसत कसौटी सुशमा पैंगन भरि भरि सृजन विभाजन
एक ओर हरि सौम्य रूप छवि दूजे नवल चंचला पावन॥
दोऊ होड़ लग्यो झूलन को दोऊ पैंग जोर उत्साहन
झूलत सृष्टि दोऊ छवि अतंर देस निमित्त काल उलझावन॥
तबहिं प्रीत रस धार फूटि छवि दोऊ सुशमा मिल्यो सुहावन
मध्य हिंडोर युगल बैठि नव झूलत संग रंग मनभावन॥
"कौशल" हरि नव चपल चारुतम राधा सौम्य रूप हरसावन
नवल स्वभाव बदलि छवि प्रगट्यो उलट्यो रस फागुन को सावन॥

१५७

लहरनि छवि बलि जाऊँ कँन्हैया
लहरनि की बलि जाऊँ ।।

पाग पीत लहरानि लहरिया
पंखमोर फहरानि लहरिया
राधा चुनरी धानि लहरिया
फहरन की बलि जाऊँ कँन्हैया
लहरनि की बलि जाऊँ ।।

नयन अलोकन धार लहरिया
अधर मधुर मुसकान लहरिया
पुलकित अंग उफान लहरिया
ललकनि की बलि जाऊँ कँन्हैया
लहरनि की बलि जाऊँ ।।

हिय "कौशल" उन्माद लहरिया
नृत्य कल्पना आस लहरिया
उठन चढ़न चित लास लहरिया
मंथन की बलि जाऊँ कँन्हैया
लहरनि की बलि जाऊँ ।।

राधा मोहन स्वांग लहरिया
ज्योति लहरिया छाँव लहरिया
घन, बसंत समभाव लहरिया
गुन्थन की बलि जाऊँ कँन्हैया
लहरनि की बलि जाऊँ ।।

१५८

चंचल माधव चंचल राधा
चंचल पैंग हिंड़ोले
कैसो यहि चंचलता अविरल
जेहि अविचल को तोले ॥
चंचल लहर कल्पना सागर
राधा हिय कल्लोले
श्री हरि चुनि चुनि कंज कल्पना
राधा लहरन ड़ोले ॥
चंचल "कौशल" अंग मरोरन
झुकि झुकि पैंग हिंड़ोले
चंचल मन चंचल छवि उभरन
पैंगनि अँखियाँ ड़ोले ॥
चंचल लय हिरदय स्वर गुंजन
अधर मौन नहिं खोले
चंचल राधा मोहन मुसकनि
खुलि खुलि अँखियां बोले ॥

१५९

मंद मंद ताल संग, लहरत स्वर मृदंग
झंकृत तल अवनि अंग, झूलत बनवारी ॥
बाँसुरि स्वर बीन संग, सहनाई स्वरोद गंग
नूपुर धुनि मंद रंग, झूलत बनवारी ॥
सहस्त्र गोपि हिय उमंग, चूनरि अंग रंग रंग
गायन लय सुर तरंग, झूलत बनवारी ॥
कारो घन घननि संग, नाचत मयूर अंग
सावन बरसन तरंग, झूलत बनवारी ॥
श्री राधा चुनरि अंग लिपटनि लहरन तरंग
कौशल छवि देखि दग झलत बनवारी

१६०

मद मंद स्वर बीन विलास
ज्यौं रस लिप्त रूप हरि छिटक्यो अन्तर अवनि अकास
तेहि अनुरूप मंद स्वर बीना लय रस तरल विकास॥
निद्रा त्यागि अलसि तन रजनी "कौशल" नवल हुलास
कसक असावरि नव श्रुति झंकृत नाच्यो रास विभास॥
मंद गम्भीर तीक्ष्ण श्रुति प्रमुदित चेतन भोर विलास
मर्म भेदनी पीड़ा त्रासित मधु आह्लाद उलास॥
स्वर लघु अंतर रस परिवर्तन हरि आवन अभिलास
मंद मधुर धुनि सरल रूप बुनि हरि छवि प्रगटि प्रकास॥
भीनो पवन झँकोर क्षितिज नव भीनो मंद उजास
छिटकि प्रगट हरि रूप माधुरी भैरव बीन विलास॥
कोमल स्वर छवि कोमल हरि छवि कोमल मिलन प्रकास
बीना मंद स्वरन छवि उरझ्यो हरि स्वर नर्तन लास॥

१६१

सरल सुकोमल सलिल तरंग
शशि प्रकास बसि धवल सलिल तन कम्पन कुमुद उ
चन्द्र हास उल्लास चतुर्दिश ज्यौं ज्यौं उठ्यो अकास
श्यामल रजनी अमिय ज्योति भरि निखर्यो रजत प्रका
धूमिल धवल धुँध लहरावन तरुवर रंग अरंग ॥
मंद मंद लय पवन झकोरन लहरन कम्पित वेष
गौर कुमुदिनी ललित लहरिया मिलन चहत राकेश
प्रमुदित प्रकृति उद्दंग चेतना हुलस्यो नवल तरंग ॥
नवल सृष्टि लखि हरि सम्मोहित अंग उमंग चढ़्यो
सहज नृत्य नव हरि अभिलाषा मोहन मोह भर्यो
अपनो छवि विस्तार फँस्यो हरि अपनो चेत उमंग ।

हरि छवि छठा छिटकि चहुँ छहरत लहरत सृष्टि अपार
चंचल दिव्य सौम्य अंग छवि पैरत बारम्बार
नव छवि घुरत दुरत हँसि प्रगटत रस कल्लोल तरंग ।।
ऐसो रूप लास जेहि उरझ्यो प्रमुदित मोह भर्‍यो
जानि सकै जेहि फँस्यो नच्यो संग "कौसल" रंग चढ्यो
परम उमंग रास रस चाख्यो हरि छवि नृत्य अभंग ।।

१६२

नव दीप जल्यो चहुँ रूप सज्यो नव साँझ सौं आज नई तैयारी
तन भूतल प्रीत शृंगार तरंगित बूँद बूँद चंचल चितकारी
दिग क्षितिज स्वरूप नयो निखरो जेहि पल पल पलक परत उजियारी
ज्यौं ज्योति सँवारी रूप बिहारी श्री श्याम अंग नयनन उजियारी॥
तन बूँद बूँद तारागन "कौशल" दमकि दमकि पुलकित किलकारी
ज्यौं स्वर्ण खँची कन रजत टँकी दुति झिलमिल राधा चुनरि किनारी
ज्यौं गहन अंधेरो इन्दु ज्योति सित गंग तरंग दमकि उजियारी
त्यौं बूँद बूँद दुति दीप जल्यो घन साँझ सौं आज नई चितकारी॥

१६३

दिव्य कान्ति नृत अगहन पूनम चन्द्र चाँदनी लास
शशिरस बरसन मधुमय शीतल धरती धवल अकास
पाला परत परत सौं छायो श्वेत नील अभिराम
वसुधा धवल खींचि दुति चादर ओढ़्यो श्याम ललाम
चंद मंद दुति ओस बिंदु घुलि दमक्यो ज्योति विकास
चपल पल्लवन झाँकि रश्मि सित छाया संग प्रकास
तरुवर तल नव श्वेत कालिमा छाप्यो रूप उजास
श्वेत श्याम चलचित्र कथा सौं जड़ चेतन उल्लास ॥

सहज मंद गति हरि छवि झूलनि मंद ज्योति कल्लोल
अमिय चारुतम हरि छवि पैंगन मधुमय धवल हिंड़ोल
जहँ देखूँ तहँ हरि छवि "कौशल" चन्द्र चाँदनी हास ॥
टेरि बुलावहु राधा रानी सुषमा होड़ उजास
रूप रूप मिलि नचै चाँदनी दुगनित ज्योति प्रकास
गौर श्याम उल्लास अनंदित सुषमा मंथन रास ॥

१६४

प्रमुदित धवल श्रृंगार सुहासिनि धरती लास उछंग
दिव्य चेतना मधुर कल्पना कम्पित अंग तरंग ॥
तरल चाँदनी छिटक्यो रजनी निश्चल गहन अकाश
वसुधा चंचल छाया तरुवर जँह तँह छनत प्रकास
"कौशल" श्याम हरित बँसवारी लहरन मधुर तरंग ॥
निश्चल चकित चारु तन कदली अविचल नीम विकास
गहन गम्भीर वृद्ध बढ़ तरुवर ताक्यो सकल अकास
छन भर हरि तजि चपल नृत्य, धरि निर्मल वेष अरंग ॥
धूमिल धवल रेख सौं सीसम बाँधत क्षितिज प्रसार
जँह तँह हरित श्वेत मूँज छवि घेर्यो भूमि कतार
रजत खेत चँहु इत उत बिखर्यो गैंहू बोझ सुड़ंग ॥
चँहु दिसि मौन सौम्य सन्नाटा निश्चल बिना बयार
समय देखि हरि सौम्य रूप धरि नाचन कियो विचार
मधुमय सरल सौम्य हरि झाँकी सुंदर स्वांग प्रसंग ॥

१६५

सरल सुकोमल छवि रस बरसन॥
मंद प्रसार रूप ज्यौं पावन
निर्मल रस अनुराग सुहावन
सरल लालसा ललकि लुभावन
छहरि छहरि हरि छवि मद छलकन॥

इन्दु ज्योत्सना सरस सौम्यतर
जैसो पावन रूप आज हरि
"कौशल" प्रकृति चेत मंदतर
विमुग्ध मौन अनुभूति मगनमन॥

ज्यौं उत्साह उफान उठ्यो मन
शशि उजास वन उठत मधुर तन
आतुर हिय जल खिल्यो कुमुदगन
कम्पित नीर तरंगित नर्तन॥

शुभ्र कुमुदनी ललकि प्रीत बस
सौम्य अंग शशि छलकि अमिय रस
परम वासना व्याकुल बरबस
प्रीत ज्वार नव अविरल कर्सन॥

हरि आनंद कलोलन कन कन
शशि उजास जल कुमुदिनि कम्पन
हिय उद्गार प्रीत आलिंगन
हरि आह्लाद लास नव नर्तन॥

१६६

अणु परमाणु झाँकि ज्यौं छनि छनि चेतन लहर अनंद
गहन श्याम कदली तन झाँकन उज्जवल बाँको चंद्र॥
बिँहसि बिँहसि तन कदली कम्पन लहरन इन्दु उजास
शशि चल झिलमिल रश्मि चेतना जहँ तहँ नचत प्रकास
रजनी छाया शशि प्रकास नव ज्योति छाँव को द्वन्द॥
हिय उल्लास अनत छवि लखि लखि प्रकृति अनोखो वेष
केहि विधि तम हिय शुद्ध भावना मिलन चहत राकेश
खिल्यो अनेकन भाव कुमुद जो रह्यो हृदय तल बन्द॥
हरि छवि "कौशल" रूप छिटकि तन प्रगटत बारम्बार
सो हिय पाय सके छवि अमृत जो छवि देखनहार
मधु रस रूप लालसी अँखियाँ प्रति पल पियत अनंद॥

१६७

मौंन अंधकार नभ कम्पन प्रकृति चेत उल्लास
सून्य हृदय नव आस कलोलन हरि दर्सन अभिलास
शुभ्र नील साँवर साँ धुँधुर कोमल गहन गम्भीर
नव कपास ज्यों श्वेत वसन तन लसि लसि पाला च
जँह तँह धुंध भेदि तन उभर्‌यो तरुवर नील उजास॥
निकट ताल जल निर्मल अविचल धवल श्याम गम्भ
वनमुर्गी कछु उड़त छुअत पग जल महँ खींचि लव
नीलो फूल विहइय्या जाग्यो घेर्‌यो ताल विकास॥
जल ह्वै तरल ओस टप टपकन बाँस पाँति की नोक
टिटुऊँ टीऊँ टिटहरी बोलन घाँ घाँ शब्द महोक
ठाकुर खंजन चपल तिलोरी जाग्यो नवल उजास॥

जनम बाल रवि क्षितिज दूर तरु अंतर धुंधुर चीर
ऊपरि वृत्त कगार नरंगी रंग सलेटी धीर
मंद मंद धरि अरुन रंग रवि ज्यों ज्यों उठ्यो अकास
सिमटी सिकुरी जाग्यो धरती दूर पास करि भेद
अंतर गुप्त रह्यो तम धुंधुर प्रगट नयो अनुवेस
तरुवर पात पाँति विलगानो उभर्‍यो ड़ाल विकास॥
हरि छवि चतुर चारु सौं नर्तन प्रकृति खिलावत खेल
सून्य हृदय अँखियाँ मन प्रमुदित देखि चातुरी केलि
तरुवर पाला धुंधुर खग रवि हरि नित केलि विलास

१६८

मिथुन रासि शुचि पूर्ण चन्द्र नभ अमिय गंग रस बरसन
नव रस अनुभव नवल गीत स्वर धरती नभ आलिंगन ।।
घेर्‍यो दिगति अंधकार घन पूरब इन्दु उजास
शिशिर समीर बह्यो तन सन सन पाला जकरि अकास
दूर गाँव ते उठ्यो धूम्र घन थम्यो अनेकन परतन ।।
"कौशल" सघन मौन सन्नाटा सन सन बोल समीर
जल तल निकट टिटहरी बोलन तीखो शब्द अधीर
कदली त्रसित पात तन फरकन पवन झकोरन झंझन ।।
धुँधुर घुलि शुचि चन्द्र चाँदनी रजत धवल आकास
मूँज गुच्छ पुष्प लय लहरन धूमिल शुभ्र विलास
नील श्वेत उभर्‍यो नभ तन तन निकट विकट सौं तरुगन
हरि नव मंद मंद पग रुनझुन शीतल नृत्य विलास
धुंधुर पाला घोलि चाँदनी नर्तन तरल प्रकास
कदली मूँज टिटहरी त्यागो शब्द पवन को सनसन ।।
निश्चल चकित विलोक्यो इक टक हरि छवि निर्मल नृत्य
छन भर समझि पर्‍यो नहिँ लीला चेतन मंथन कृत्य
जाग्यो जबहिँ मोह निद्रा ते हर्षित धरती कनकन ।।
रूप पयोधर अमिय चाँदनी लहरन बारम्बार
रस आनंद रूप छवि घुलि घुलि चेतन लहर अपार
नव उमग उल्लास प्रेरणा प्रीति पयोधि हिलोरन

१६९

धारत पग हरि धीरहि धीरे
नृत्य कमल चरनन पंकज पर, जमुना चंचल तीरे॥
बालक रवि उजास नभ मंडल क्षितिज ओढ़ि तम चीरे
उठत प्रभात मंद रश्मि संग वाष्प नदी नद नीरे।।
तेहि नव धुँधुर ओट प्रफुल्लित 'कौशल' कम्पित धीरे
बिन्दु ओस कन रवि छवि प्रमुदित उज्वल मोतिन हीरे॥
कंज शुभ्र नव नचत तरंगनि यमुना चंचल नीरे
तेहि पर नृत्य करत नंद नंदन पग धरि धीरहि धीरे॥
चंचलता तजि सौम्य रूप हरि ओढ़ि धवलतर चीरे
कैसो शुभ्र रूप हरि नर्तन बिन पीताम्बर पीरे॥

१७०

लखि धरती हरि हृदय अनंद ॥
अनत अघोर कोटि ब्रह्माण्डन
मौन शून्य श्यामल घन भीषन
अति शीतल आकाश शुष्क तन
गोल पिंड तन चंचल धरती नाच्यो सूर्य प्रचंड॥
नीलो पीत बदामी भूतल
लसि बदरी तन लहरि श्वेत जल
रवि प्रकाश भू गौर श्याम दल
अरुन रश्मि रवि चूमत अलसत जागृत पुलकित अंग॥
यद्यपि कोमलांगिनी भूतन
नगन वेष तन नीरस निर्जन
घोर अघोर नन बिन स्पन्दन

हरि करि कृपा लख्यो भूमि छवि
अपनो हाथ पसारि अंग हरि
तन स्पर्श अँगुरिया करि करि
कम्पित धरती नव स्पन्दन चेतन गंग तरंग॥
रह्यो जाहि तन अबहिँ रसायन
तड़ित बह्यो तेहि अंतर चेतन
धरती जाग्यो पुलकित जीवन
कन कन काया नच्यो प्रेम रस नव आह्लाद उमंग॥
एक ओर अम्बीबा नर्तन
कोटि कीट ''कौशल'' रस थिरकन
काई झाड़ नचत मन तरुगन
जलचर थलचर अम्बर पंछी अविरल प्रकृति अनंद॥
पंक बीच जाग्यो पंकज छन
पाहन भेदि जम्यो घास तृन
चेतन अमिय नच्यो धरती तन
हरि स्पर्श बीज छवि व्यापो भूमि सुहागिनि अंग॥

१७१

सुन्दर धरती माँग भराई
प्रीत मुग्ध हरि निरखि रह्यो छवि वसुधा विँहसि लजाई॥
निज हाथन हरि चेतन चन्दन वसुधा भाल धराई
हरि स्पर्श चित्त चेतना कन कन कम्प कराई॥
कौन पुराकृत पुन्य जग्यो हरि वसुधा रूप लुभाई
अपनो हाथ उढ़ाय चुनरिया ''कौशल'' अंग सजाई॥
पुष्प रतन तन कर्‌यो अलंकृत हुलसि रूप तरुनाई
प्रणय चेतना नव स्पन्दन भूमि सुहाग धराई॥
सरसिज कमल नयन सौँ विँहसौँ अलसत खुलत लजाई
चन्द्र चाँदनी सावन बरसन, बसि बसंत बौराई॥
उत्कंठित हिय ललक लालसा मनसिज नृत्य लुभाई
हरि श्रृगार रस रूप लालसी धरती सज्यो कन्हाई

१७२

हरि जब चरन धर्यो धरती तल
जाग्यो जीवन चेतन संसृत नूतन छन्द जग्यो पल ।।

कोटिन तारापुंज सृजन हरि शीतल कबहिँ प्रचंड
चक्रवात लघु नित विसाल तन उदित अगिन को अंड़
धूमिल धूमकेतु नव चक्रन तारापुंज नच्यो बल ।।

अधिक निकटतर घेरि नच्यो तन कोऊ अगिन पतंग
दूर दूरतर मंद रश्मि भरि सिकुरत शीतल अंग
नीरस नीर जीव बिन भटक्यो नंगो नृत्य कर्यो थल ।।

हरि चित धरती अधिक लुभायो ताप शीतला थोर
चेतन जीवन बिखरि ललकि हरि अपनो छवि झकझोर
तरुवर नृत्य नच्यो नव सरवर पंकज हास कर्यो जल ।।

बदरी घूमि घूमि नित नाच्यो नाच्यो धरती अंग
कौन बचे जब कन कन चेतन हरि छवि नृत्य अभंग
वहै भूमि जल पवन झँकोरन जीवन रूप धर्यो पल ।।

जितनो दुर्लभ जीवन धरती "कौशल" हरि को प्रीत
हरि नित नर्तन देखि सके जेहि धरती जनम पुनीत
हरि तरसत निज रूप दिखावन जीवन चेत जन्यो थल ।।

१७३

अंग अंग सरसिज उमगाई
वसुधा अंतर अमिय चेतना कोमल प्रगट जनाई॥
तपित त्रसित ज्वालामुख भीषण पीप सरीर बहाई
अंग जकरि हिम गलित शीत तन सिकुरन नीर डुबाई॥
नर्तन अविरल थकित मलिन तन नयनन नीर बहाई
शरण शरण नित पतितन तारन धरती सुमिरि कन्हाई

१७६

नव प्रीत प्रतीत हियो रग मैं, हरि अंग बसंत श्रृंगार सँवारी
नव पुष्प श्रृंगार प्रभाव नयो, नव पाग को फेंट बनाय निखारी
हरि वेष नयो परिवेष नयो, नव प्रीत रंग्यो नव रंग खिलारी
नव अंग अनंग तरंग नयो, अनुरक्त बसंत बसंत बिहारी॥

संसृष्टि सज्यो रंगमंच नयो, नव रंग प्रतीति नयो चितकारी
नव काल चल्यो नव देस ढ़ल्यो, नव बेलि निमित्त गुँथ्यो अनुहारी
नव वेग उग्यो द्रुत सृजन चल्यो, नव अंग तरंग प्रवाह प्रसारी
गति अचल चल्यो चल जगत जन्यो, नव नाद अंग गंग लयकारी॥

रस अंग तरंग उमंग नयो, नव रंग चढ़्यो घनश्याम दुलारी
छवि अंग श्रृंगार प्रयोग नयो, मन मोहन को लखि मोहनि प्यारी
सम रूप ढ़ल्यो सम अंग नयो, सम रूप विलोकन प्रेम पुजारी
रस फाग नयो अनुराग नयो उन्माद प्रमाद प्रलोभनकारी॥

रस रूप नयो संसृष्टि रंग्यो भरि मारि मारि चेतन पिचकारी
''कौशल'' अमृत छवि रंस मंथन भीजि भिजावत होलि खिलारी
झंकृत घंटि घंटिका नूपुर घुघुँरू चपल राधिका न्यारी
धनि बसंत धनि रंग बसन्ती, छेड़्यो हरि अनुराग खिलाड़ी॥

१७७

फिर आयो मधुमय बसंत
पुनः प्रगट छवि कालचक्र चलि सुषमा अनत रूप रसवंत॥
कोकिल कूक बसीठी पलपल
बौर बौराय आम्रगुच्छ दल
धरती पीरो अनुपम अंचल
पवन मंदगति लहरन चंचल
फिर भरि माँग सुहाग मोहनी वसुधा नारि रूप रसवंत॥
पवन झँकोरन मदन मंदतर
नव कल्लोल गंध जोर भरि
प्रकृति प्रफुल्लित तन अंतरतर
सुषमा चेतन लहर रूप धरि
नव प्रमाद हट टेरि पुकार्‌यो श्री राधा गोपाल बसंत॥
फिर उन्माद रसिक रूप हरि
"कौशल" सुमन श्रृंगार अंग धरि
चंदन केसर चित्र रंग भरि
नवल वेष परिवेष धारि छवि
फिर नव फेंट पाग काछनी नव छवि प्रगट रूप छविवंत॥
रसिया वेष धारि फागुन बस
हृदय कसक प्रगटत मादक रस
दिन प्रति राधा रूप जाल फँसि
मोहित श्याम गौर अंग रस
कुंज बिहारि बिहारिन के संग नव रस केलि कलोल अनंत॥
क्यौं फिर धूमि प्रगट बसंतवर
नव तरुनाई छेड़ि अंग हरि
नव तरंग सुषमा सागर भरि
युगल प्रीत मतवारि जोरि करि
क्यौं फिर भरि रगन पिचकारा भीज्यो युगल अग रसवत

१७८

पीत वसन तन ज्योति पीत घन
पीरो चंदन अंग रंगाई
केसर तिलक वदन श्याम तन
पीरो कंज माल लहराई
कुंतल केश श्याम घन चंचल
रवि सौं पीत कमल उरझाई
पीरो पंकज नूपुर कंगन
बनज मेखला पीत सुहाई॥
पीलो नीरज बेल माल चहुँ
पीरो सरसिज छत्र धराई
पीलो पुलकि कंज धरि चरनन
"कौशल" नाचत कृष्ण कन्हाँई
किंचित किंचित हरि छवि सिंचित
श्री राधा नव रूप लजाई
पीरो सरसिज झाँकी मनसिज
पियत बँन्यो नँहिँ छवि अधिकाई॥
कुंज कुंज लहरन हरि छवि रस
चेतन नव जीवन लहराई
हरि बसंत ह्वै नच्यो चतुर्दिस
महिमा मही महाछवि छाई
पुष्प पल्लवन बसि बसंत छवि
फागुन प्रकृति जोर बौराई
नद तरंग उन्मत्त प्रीत रस
यहि बसंत बस कीँन्ह कन्हाँई॥

१७९

नव बसंत चलि देहु बधाई॥
जेहि नव चेतन जाग्रत तन मन
हरि नव रस उमगाई
जेहि बसंत बस कीन्हों अंतर
चंचल कुँवर कँन्हाई
नव जीवन नव मंथन कम्पन
छेड़्यो सृष्टि रचाई
तेहि बसंत मधु मधुर मनोरम
चलि चलि देहु बधाई॥
जेहि बसंत श्यामा श्री राधा
सजि श्रृंगार धराई
चंचल अंतर मन्मद मंथन
नव तरंग उमगाई
जेहि बसंत रस जोर घोरि छवि
छवि सागर उमड़ाई
तेहि बसंत नव आतुर चंचल
चलि चलि देहु बधाई॥
नव बसंत निज सुषमा सागर
सृजन कान्ति उमड़ाई
पल पल अंतर नव स्पन्दन
ज्योतिर्गंग बहाई
राधा संग सम मोहन लीला
रंगहि मंच सजाई
तेहि बसंत उन्माद फाग रस
चलि चलि देहु बधाई॥

नृत्य प्रेरि श्री राधा श्री हरि
तेहि नव रंग जमाई
दोउ उन्मुक्त मुक्त प्रीत रस
नव तरंग लहराई
केवल नर्तन नर्तन दर्सन
सकल सृष्टि छवि छाई
प्रेरित नव बसंत छवि ''कौसल''
चलि चलि देहु बधाई॥

१८०

सकल सृष्टि रंगमंच बन्यो नव केलि करन सुन्दर फुलवारी
बसि बसंत नव रंगन जीवन चतुर चाव चंचल चितकारी
संसृष्टि भीजि उन्मुक्त रंग हरि भरि उमंग चेतन पिचकारी
मधुर तीक्ष्ण स्वर झंकृत पंचम नव बसंत रस कीन्हिं तैयारी॥
गंध तरंग अंग लसि विचरत बौर बौराय आम की डारी
मधुमय मलय बयार झकोरन बढ़ि बसंत हरि टेरि हँकारी
थिरकि नच्यो चहुँ बस्यो बसन्ती सरसों लहरन घूँघरवारी
श्री राधा संग श्री हरि नटवर प्रगट अंग श्रृंगार सँवारी॥
पीरो पाग वसन तन पीरो, पीरो चुनरी अंग निखारी
केलि कर्यो कल्लोल प्रेम बस रंग्यो अबीर सृष्टि चितकारी
होरी खेलन एक खिलारी कृष्ण कृष्णमय संसृति सारी
सबहीं कृष्ण कृष्ण ह्वै खेल्यो अपनो रंग अंग तेहि डारी॥
गोप ग्वार श्री राधा ग्वालिनि नाचत सरगम सबहिं बिसारी
आयो नव बसंत केहि कारन फागुन स्वर बसि एक बिहारी
हरि सब पकरि रंग्यो अपनो रंग हरि सब पै रंग अपनो डारी
दई छोरन रगधार रग्यो जग कौशल अबके तुम्हरा बारी

१८१

प्रात उठ्यो हरि खेल्यो होरी
अपनो अंग सँवार सक्यो नहिँ, पकरि रंग्यो मोहन रंग रोरी॥
नयन अलसि उठि रह्यो साँवरे घेर्‌यो मन मंदिर बरजोरी
चेतन जाग्यो जग्यो कल्पना पलक पर्‌यो सुंदर छवि थोरी॥
स्वप्न प्रगट कै प्रगट स्वप्न है "कौशल" चित्त दियो झकझोरी
कैसो हरि यहि मोहनि रोरी जान्यो नहिँ कब खेल्यो होरी॥

१८२

होरी खेलन आज चलहु हरि
बरसाने जँह राधा गोरी बाट जोहती मचलि रह्यो छवि॥
राधा सरल, ग्वालि मन छलबल, जटिल लराई ठने टेक करि
"कौशल" होली एक बहानो छोहरिया बस करन चहत हरि॥
होरी को जब रंग जमै तब कौन हारि को जीत छकै छरि
हृदय उमंग प्रीत पेंच रस होली खेलन आज चलहु हरि ॥

१८३

होली खेलन कुँवर कँन्हाई
बरसाने शुभ प्रगट पधारो इत उत सुन्दर रूप दिखाई॥
सबहिँ गोपि हरि लख्यो एक टकि चित्र लिखौँ सौँ चेत गँवाई
रंग्यो सबहिँ हरि अंग अंग रंग, जेहि जेहिके सुन्दर मुख भाई॥
रूप रूप चितकारी करि हरि नव फुलवारी उमगि बसाई
इत पीरो उत अरुन बसन्ती, लखि बसन्त अन्तर हरसाई॥
दौरि तुरत हरि द्वार राधिका "कौशल" मुरली धुननि बजाई
फागुन स्वर रस टेरि पुकार्‌यो राधा राधा कुँवर कन्हाई॥
राधा लुकि गृह अंतर देख्यो हरि मोहन चंचल चतुराई
तुरत झरोखे रंग रंग भरि गागर रस हरि तन ढ़रकाई॥
भीज्यो हरि मुख रंग अलंकृत, पीरो नीलो अरुन सुहाई
हरि बस केवल एक राधिका चह्यो जाहि रंग रंग्यो कन्हाई

१८४

आज चली वृषभानु लली नव रंग रंगी हरि खेलन होरी॥
अबीर गुलाल रंग थालि भरि
पिचकारी रंग और गाढ़ि करि
"कौशल" हिय नव प्रीत बाढ़ि हरि
मद झूम चली बृजराज गली अनुराग पगी हरि खेलन होरी॥
नयन खोजि हरि खोजि निकारी
बरजोर जोर पिचकारी मारी
पकरि बाँह छवि रोरि सँवारी
बहु रंग करी, हरि रूप भली, मुसकाय चली हरि खेलत होरी॥

१८५

अंग भेदि मार्‍यो पिचकारी
मनज बान सौं धँसत हृदय मन याहि अहीर रंग की धारी ॥
ज्यौं ज्यौं भीज्यो अंग चुँनरिया लसि लसि तार तार सुकुमारी
प्रीत जग्यो दामिनि सौं कौंध्यो अंतर ज्वाला मदन निकारी ॥
प्रेम ज्वार उन्माद बह्यो सब बृज मंडल सागर मथ ड़ारी
उतरन चढ़न प्रीत स्पन्दन छुअत बूँद अंग रंगधारी ॥
कौन बचे जब होरी के दिन हाथ लगे मोहन पिचकारी
राधा प्यारी, ग्वारि बिचारी "कौशल" बृज कन कन चितकारी ॥

१८६

कैसो हरि संग खेलौं होली
कितिक बार हठ करि समझायो
छोड़त नहिं हरि व्यंग ठिठोली ॥
चक्रवात सौं घेरि घेरि तन
हटकि झटकि उरझन बरजोरी
"कौशल" नहिं रुकि टिकत एक पल
कैसो इह संग खेलौं होली ॥
रंग अंग घिसि छुअत हृदय निधि
मदन गंग बोरी रस घोली
यहि अहीर कछु और चहत मन
कैसो इह संग खेलौं होली ॥

१८७

नहिं आयो आज हाथ गिरधारी
एक बार तेहि पकरि सक्यो पर बाँह छुड़ाए भग्यो अवतारी॥
यहि कैसो हरि होली खेलन अपनो जोर दिखावत नारी
अपनो दाँव जीत जीत इन अपनो रंग रंगत बृजनारी॥
एक बार जो पकरि मिले हरि, याहि अहीर ढीट मधुचारी
ऐसो रंगौं गाढ़ि रंग चोखो, "कौशल" बिसरि जाय सुध सारी॥

१८८

खेलत ऐसो होलि कँन्हाई
जेहि होली रस रंग कलोलन सकल मृष्टि बौराई॥
जेहि फँसि भँवर तरंग तरंगनि बृज मंड़ल मँड़राई
छवि सागर भरि गागर उलचत सुषमा कुँवर कँन्हाई॥
जेहि होली करि प्रकृति अन्दोलन रंग बसंत नहलाई
हरि अरंग बहु रंग रूप भरि परम रंग बरसाई॥
जेहि बृज गोप गोपिका अंतर नव चेतन उमगाई
पानि पकरि हरि बोरि होरि रंग "कौशल" मन ललचाई॥
श्री राधा मन भ्रमित चकित तन देख्यो श्याम कँन्हाई
यहि अहीर पिचकारि रंग्यो जग रूप गंग उलचाई॥

१८९

रसिकन को ललकारि आज हरि खेलत होरी
जेहि मधु रस तरसात आज छवि सागर बोरी
सबहीं टेरि पुकारि आज बृजमंडल जोरी
झगरि पकरि मतवार आज हरि खेलत होरी ॥
"कौशल" ग्वाल गँवार अंग रंग डालो रोरी
राधा बृज की नारि डूबि रस उतरत भोरी
बांट्यो प्रीत उधार बाँधि मन रसिकन ड़ोरी
प्रमुदित जय जयकार आज हरि खेलत होरी ॥

१९०

झकझोर जोर मार्‌यो पिचकारी
भूलि गयो हरि होली खेलन को कैसो रंग को अधिकारी
अपनो रंग मारि पिचकारी गोरी भोरी ग्वालिन सारी
रंग्यो ग्वाल मुख पाग अँगरखा एकै रंग कमरिया कारी ॥
रंग्यो पुहुप, तरु, भ्रमर, सरोवर, एकै रंग भानु उजियारी
मिट्यो भेद हरि रंग पयोधर चटक चढ़्यो रंग एक बिहारी
जड़ चेतन तन "कौशल" हरिमय होरी खेलन हरि ललक
कौन बचे बिन रंगे प्रीत रस काँन्हाँ ऐसो होलि खिलारी ॥

१९१

हरि जो रह्यो अकेल आज तेहि बृज मंडल माँहि खेलत होरी
अविचल रंग चड़्यो नव चंचल केलि करत संसृत झकझोरी॥
छवि रस भरि भरि नव पिचकारी मार्‌यो चेतन धार ठगोरी
छन भरि ठिठकि नच्यो रंग हलचल संसृत नव चंचल रस बो
रंग पर्‌यो अंग चेतन जाग्यो कन कन कम्पित छवि रस घोरी
संसृत रंगन काल तरंगन बुनि निमित्त रंगि रंग करोरी॥
"कौशल" बृज हरि होरी चंचल छलबल ललकि ललकि झक
कौन बचे बिन रंगे रंग हरि यहि अहीर नहिँ मानत होरी॥
पीत लहरिया रंग चुनरिया श्री राधा गोरी रस भोरी
किंचित किंचित छवि रस सिंचित आज रंग्यो हरि अंग किशोरी॥
नव रंगन उन्माद चल्यो नव गोप ग्वाल रस रसिकन जोरी
हरि को घेरि घेरि रंग ड़ार्‌यो हरि अकेल सौं खेल्यौं होरी॥
एक ओर उन्माद लहर भरि हरि सबहीं रंग भीजत होरी
दूजे लहर उठत हरि घेरत निज रंगन हरि रंगत करोरी॥
होरी भँवर रास मंडल छवि उठ्यो ज्वार सिकुरन बरजोरी
फिर ऐसो आह्लाद लास नहिँ, खेलि सकहु तो खेलहु होरी॥

१९२

बार बार कुँवर काँन्ह सुषमा अनंत को
मारि मारि पिचकरी भीजत हैं राधिका॥
ड़ारि ड़ारि अंग रंग "कौशल" सुडंग श्याम
कारि कारि बदलि रंग पुलकत हैं राधिका॥
द्वार द्वार दौरि श्याम लुकि छुपि अखंड़ रूप
झारि झारि रंग, द्रुत पकरत हैं राधिका॥
हारि हारि जोरि पानि दया माँगत निरविकार
एक बार गिरधर धरि पावत ही राधिका॥

१९३

देखो री होली खेलि खेलि हरि कैसो रूप धरो है
परम रूपमय साँवरि सुन्दर अंगनि रंग भरो है ॥
बहुरंगी तन पीत गुलाबी गाल लाल निखरो है
आज तार बुनि साँवरि मोहिनि रंग जाल बिखरो है ॥
जबते हरि होली रंग चाख्यो चपल स्वभाव धरो है
पल पल नवल रंग कल्लोलन कर्षण चाल चलो है ॥
रंग सरोवर नयना उज्ज्वल पंकज कम्प करो है
रंगत नाँहि दृग ढ़ीट लालसी "कौशल" नयन अरो है ॥

१९४

देखहु चतुर चातुरी मोहन
सुन्दर रंगन अंग रंग्यो मुख ताकनि इत उत लोचन॥
यहि कैसो रंग आज श्याम घन
लाल पीत उज्ज्वल तन शोभन
पल पल नयो रंग छवि नूतन
अंतर दृग दुविधा कौतूहल लखि हलचल विस्मित चेतन॥
ज्यौं ज्यौं छवि हरि रंग बस्यो मन
तुरत नवल रंग प्रगट अंग तन
उतस्यो हिय पुनि नवल रूप रंग
रूप रसायन घुलन मिलन नव, नयो प्रगट रस छन छन॥
लाल लहरिया हरित लहरिया
अंग रंग नव नील लहरिया
पीत गुलाबी ज्योति लहरिया
भूल्यो क्रम दृग हृदय लालसी "कौशल" हरि अवलोकन॥

१९५

आयो आयो भरि पिचकारी मोहन खेलन होरी
हमहीं पै मड़राय रंग्यो तन जोर जोर बरजोरी॥
दाँए आयो आयो बाँए ठीट अहीर ठगौरी
तन चेतन "कौशल" रंग ड़ार्‌यो नीलो पीलो रोरी॥
सखि कब आयो कहाँ कौन विधि पलक पर्‌यो छवि थोरी
नयनन चेत जगे ते पहिले मोहन खेल्यो होरी॥
क्यौं इन अँखियन भ्रमित चेतना काँन्हा कियो ठगोरी
नयनन रस नयनन ड़रकायो तब हरि खेल्यो होरी॥

१९६

क्यों होरी सुन्दर सुखदाई
जेहि होरी हरि बदलि रूप रंग, नयो रूप दरसाई॥
श्याम रूप नहिँ नयो रंग भरि नवल स्वरूप सुहाई
पीरो अरुन हरित अंग हरि अगनित रंग नहाई॥
कितनो रंग रंग्यो मोहन छवि "कौशल" स्वांग धराई
बिगरो रूप नयो रंग निखरो सुन्दर तबहिँ कन्हाँई॥
यहि होरी हरि प्रगट अनत छवि नयन पकरि नहिँ पाई
रूप लखौं या लखौं रंग हरि बुद्धि चेत बौराई॥

१९७

दियो आपने हाथ आज मैं मनमोहन हाथन पिचकारी
भरि भरि रंगन गाढ़ि गाढ़ि हरि अंग अंग तेहि मार्यो धारी॥
जैसो चह्यो रंग्यो अपने रंग अंतर अंग चित्त चितकारी
मैं सबहीँ रंग सुखी खिलारी तुम्हँरे हाथ आज पिचकारी॥
नहिँ सकुचो बस हुलसो अंतर भीजि भीजि रस धार सुखारी
गाढ़ रंग कछु चड्यो वदन मन हिय उमंग कलकल किलकारी॥
दुई नयना बस रंगो नाँहिँ हरि, देखि सकौं तेहि रूप बिहारी
"कौशल" और जोर रंग ड़ारो तुम्हँरे हाथ आज पिचकारी॥

१९८

कब हरि कानन प्रगट विलास
जानि सक्यो नहिँ कहाँ कौन विधि कैसो लास विकास॥
मंदहिँ मंद बस्यो हरि कुंजन पावन सरल श्रृंगार
बिहँसि नच्यो रस कोमल निर्मल तरुवर बाँह पसारि
मंद ज्योति नव मंद हास भरि भोर नाद उल्लास॥

अविचल "कौशल" सरल सरोवर मंद तरंग भर्यो
अलसत विलसत कमल नयन सौं कम्पन कमल कर्यो
तरुन अरुन रवि सहज लालिमा पावन ज्योति उजास॥
मंद मंद पग धरि करि आयो पवन झकोर्यो डारि
हरि की छवि सौं छिटकि गयो चहुँ हर्षित हर सिंगार
भोर गंध उल्लास ज्योत्सना चेतन लास विलास॥
हरि छवि प्रेरित ब्रह्मवेलि नव छायो निर्मल राज
नव स्पन्दन लास चतुर्दिग चंचल रूप समाज
धरती चेतन अम्बर चेतन हरि कानन उल्लास॥

१९९

चैत्र मास नव मधुमय निर्मल रजनी प्रणय स्वरूप
मधुर मनोहर हरि छवि निर्झर सुंदर सजग अरूप॥
छनि छनि बढ़ तरु श्यामल पाती झाँक्यो धवल अकास
तेहि तन बिखरि बिखरि तारागन जहँ तहँ हँस्यो प्रकास
हरि छवि व्यापन मधुर वाहिनी निर्मल पवन अनूप॥
मौन रात्रि खरभर कदंली तन टर मंडूक तड़ाग
सर सर बोलन नीम दूर कहुँ अँमिया ढ़ोलन बाग
पंचनरायन लघुतर पाती नर्तन गुच्छ स्वरूप॥
"कौशल" बिँहसि नचत युकलिप्टस ऊँचो अंग सुड़ंग
कारो हरो झुक्यो बँसवारी लचकन कोमल अंग
लघु बबूर तन भीनी पाती झाँकत इन्दु सरूप॥
केहि दिसि नच्यो कौन रूप हरि कितनो कहाँ कलोल
भ्रमित चकित प्रतिपल हरि लीला देख्यो अँखिया ड़ोल
हरि छवि सबहिँ रूप सुन्दर नहिँ चेतन कोऊ कुरूप॥

२००

अबहीं ते हरि नाचन लागे

अरुन तरुन रवि जनम लियो नहिँ क्यौँ हरि अंतर काँपन लागे॥
तन्द्रा भरि तरु सोवत पंछी रजनी ओढ़ि कमरिया
कमल नयन सौँ अलसत अबहीँ कमलन की पंखुरियाँ

ओस बिन्दु लसि लिपटि दूब तन सपनो सुन्दर भावन लागे॥
मन्द मन्द रव चलि पुरवाई मन्दहिँ तरंग तड़ाग
मन्दहिँ ड़ोलत फूल बिहइय्या मन्द सुगंध पराग

मीन संग तन सलिल हिलत बढ़ि लहरन सौँ थल थापन लागे॥
व्यापो सघन मौन सन्नाटा जहँ तहँ हिलत पलास
वृश्चिक तन तारागन पूरब, मद्धिम सरल प्रकास

मौन चाँदनी मूँज गुच्छ कहुँ मधुर मंद गति काँपन लागे॥
रजनी तन नहिँ श्याम सिलेटी मंदहिँ धवल प्रकास
ऊषा ते पहिले नहिँ प्रगट्यो पूरब हास अकास

धरती ते नहिँ अम्बर विलग्यो क्यौं गहि दिग हरि नापन लागे॥
ब्रह्मवेलि नहिँ व्यापो "कौशल" नाँहि पुन्य संचार
धरती सोवत थकि करि अलसत, निन्द्रा अंग प्रसार
काहे को यहि हरि अकुलानों, नृतन करन अंग काँपन लागे॥

२०१

आज भोर क्यों अंतर जाग्यो हरि दरसन अभिलास
केहि विधि देखन चाहत अँखियाँ हरि छवि नवल विलास॥
अम्बर जाग्यो तरुवर जाग्यो चेतन धरती अंग
जाग्यो अंतर सरल लालसा पावन मधुर उमंग
जाग्यो रूप रंग जग सुषमा विलग्यो अवनि अकास॥
जाग्यो उज्वल तरल सरोवर इत उत दमक्यो नीर
बिहसौं सुषमा सरसिज नूतन कम्पित पवन अधीर
जागि उड़्यो बक जल तल ऊपर अम्बर धवल विलास॥
आज कौन छवि नर्तन नूतन हरि अंग कौन श्रृंगार
देखन छवि हिय आकुल अँखियाँ लीन्हौं दीठ उधार
भूलि गयो जो रह्यो काल छवि नूतन आज विकास॥
कौन भाव हरि रूप कलोलन कल्पित अंग निखार
कैसो रूप विमोहन मोहन प्रगट सृष्टि आकार
भोर भए हरि नर्तन जाग्यो जाग्यो दर्सन आस॥

२०२

नाचत चपल जगत रस रंग
सुधि नहिँ थम्ब रूप जड़ अपनो वेणुनाद लय गंग ॥
चक्रवात तारागन थिरकन धृकांग धिरकिट अंग
अणु परमाणु मौन धरि नाचन जड़ता संग तरंग ॥
नाच्यो भ्रमर नच्यो नव कलिका चंचल रसिक अनंग
नाच्यो जलथल, देस काल पल देखि कान्ह भ्रूभंग ॥
जगत विकास जीव स्पन्दन नूतन लहरि उमंग
पुनर्जन्म पुनि बीज चेतना जीवन वृत्त अभंग ॥
नतन हरि परिवर्तन बाँको बाँको चित्त अनन्द

२०३

झाँकी दिव्य रूप आदि छवि

सघन सृष्टि श्रृंगार ॥

हरि कारो संसृत छवि कारो,

कामरि कारि पसारि॥

विकट विराट कालहीन तन

जटिल सघन मौन श्याम घन

कर्षन घोर शक्ति वेग बनि

झंकृत सकल विहार॥

सृष्टि सृजन पूर्व रूप हरि

केवल कारो कारि ज्वार भरि

ना स्थिर ना चपल रूप करि

आतुर स्तब्ध अकार॥

कारि कूप इक दीप जल्यो छवि

"कौशल" चेतन शुद्ध बिन्दु धरि

अंधकार घनघोर मेटि करि

मेट्यो सकल विकार॥

कारो ज्वार दीप ज्योति तन

कर्षन करि धरि लियो अपन मन

घेरि ताहि चहुँ ओर जोर घन

जटिल जगत विस्तार॥

नवल श्रृंगार रूप नव सुन्दर

हरि बाहिर अरु हरि छवि अन्दर

विस्तृत चपल छवि रूप समुन्दर

छन छन नवल अकार॥

२०४

बिन्दु विकास कियो जग मैं हरि
ज्योति पुंज निर्मल उजियारी
तिमिर शिशिर त्यागि मौन व्रत
नव प्रकाश छवि नूतन न्यारी
तरल अकास विकास ताप नव
आदिनाद गुँजन लयकारी
नवल कल्पना नवल छंद रचि
हरि उमंग नृत कीन्हँ तैयारी ॥

नव उद्‌गार श्रृंगार चाव रस
नूतन रस उत्साह खिलारी
''कौशल'' चेतन जागृत हलचल
छवि कम्पित लय ज्योतिर्न्यारी
भीति नयो छवि रंग नयो भरि
चित्त प्रवृत्ति नयो चितकारी
काल देस नव गुंथन पल पल
रूप अरूप नव रूप निखारी ॥

नव मुद्रा नव ताल नृत्य हरि
अष्टभंग नृत अंग प्रकारी
श्री राधा उन्मुक्त प्रेम रस
नृत्य लास अविरल लयकारी
ज्योति पुंज हरि नृत्य कुंज नव
नाचत नचत सृष्टि छविधारी
केवल नृत्य नृत्यमय संसृत
नर्तन पल हरि बाँक बिहारी ॥

२०५

कारो संसृत गहन सरोवर गहन मौन आनन्द

कारो चपल प्रबल संचालन कम्पन सृजन तरंग ।।

सून्य ज्योति नभ कारो कर्षन कम्पन सनसन बोल
देस काल कर्षन करि घेर्‍यो कारि कमरिया खोल

नर्तन चक्रवात सौं कर्षन कारो घेरि भुजंग ।।
सबहिं रंग घुरि कूप धँस्यो हरि श्यामल रंग विलास
संसृति आदि रूप रंग कारो उद्गम श्याम सुहास

जैसो कारो स्वांग सँवरिया सृष्टि लिप्त आनन्द ।।
तबहिं नवल श्री राधा चंचल सुषमा रंग निखारि
झाँक्यो रवि सौं बदरी अंतर विलग्यो रूप अकार

''कौशल'' सकल व्योम नव निर्मल इंद्र सरासन रंग ।।
कम्पन अंग भेद क्रम अंतर सृजन शक्ति संचार
जड़ ते घुरि चेतन लय लहर्‍यो हरि छवि पारावार
नवल शृंगार श्याम तन शोभित, ललित राधिका अंग ।।

२०६

देख्यो चकित चारु हरि चंचल

हरि मुसकान चपल सागर छवि ड़ोलत दिगति दिगंचल॥
अम्बर चंचल धरती चंचल चंचल नखत सरीर
यमुना सलिल तरंगित चंचल, चंचल अंग समीर

श्यामल मेघराज तन चंचल, चंचल तरुवर पल पल॥
चंचल ज्योति पुंज छवि कोमल, चंचल नाद विहार
चंचल नृतन काल कल्लोलन, चंचल देस प्रसार

चंचल रूप धर्‍यो जब अविचल, मच्यो चहूँ दिसि हलचल॥
सलिल कम्प सरसिज मन चंचल, चंचल षट्‌पद गुंज
शीश मुकुट तेहि दिनकर चंचल, अरुन ज्योत चल पुंज

चंचल पवन झकोरन हलचल, निर्झर चंचल कलकल॥
सकल भुवन जब संसृत चंचल, हरि नित चपल श्रृंगार
केहि कारन हिय खोजत अविचल निश्चल शुद्ध अकार
.हरि नदिया रस चंचल अविरल, बहि जा तेहि छवि अंचल॥

२०७

हरि नित चंचल नृत्य श्रृंगार
जहँ देखहुँ तँह वहै रूप छवि
भिन्न दिव्य आकार॥
वहै रूप चहुँ व्यापो चंचल
बाहिरि तन मन अंतर अंचल
इन्द्र धनुष परिवर्तन अविरल
रंग भेद विस्तार॥
गंग तरंग तरल छवि अविरल
नित प्रवाह परिवर्तन पल पल
सबहिँ एक रस घोलत निर्मल
दूषन शुद्ध विसारि॥
हिय अंतर चेतन हरि चंचल
कन कन नर्तन दिगति दिगंचल
रूप बदलि अँखियाँ ह्वै निर्मल
देख्यो चपल प्रसार॥
वहै दृष्ट रूप हरि अविरल
वहै दृष्टि बिम्ब छवि निश्छल
ज्ञेय ज्ञान अनुमान प्रबल बल
भाव कल्पना सार॥

२०८

करत श्रृंगार भगत मन भावन

रसिकन हिय अनुरूप कल्पना अंग श्रृंगार रिझावन॥

बाल वेष छवि चपल सुकोमल सरल अंग श्रृंगार
मोर पंख इक कंज पाग सिर, उर लघु सरसिज हार

कटि लघु पीत वसन पग पैंजनि, केसर तिलक लुभावन॥

कुटिल भ्रकुटि अरु कुटिल नासिका कुटिल श्याम लटभीर
गोल कपोल गोल साँ अँखियाँ कारो पुष्ट शरीर

पीत पाग, तन पीत काछनी,प्रात श्रृंगार सुहावन॥

तरुन शरीर कंज उर माला, पंकज पाग जंजीर
बाजुबंध, तन चंदन चित्रित, गोधन हँकत अहीर

द्युतमय कारो मेघ श्याम नभ, मनु बसंत लहरावन॥

"कौशल" धरि तन पीत अंगरखा, पाग लहरिया गंग
त्रिबिध रंग फैंटि कटि पटका, सुन्दर श्यामल अंग

कसि कसि कसक निकारत हिय की रसिकन रस सरसावन॥

कबहिँ प्रणय उद्दंग नृतनागर, कबहिँ द्वारिकाधीष
हीरक जड़ित स्वर्ण उरमाला कंचन रतन किरीट
चीनांचल नव स्वर्णिम जामा, मर्यादित पहिरावन॥

२०९

हरि छवि अनत रूप निधि पावन
तैसो मधुर तरंगन प्रगटत जेहि छवि रसिक सुहावन॥
कोमल अंग भाव कोमलतर कोमल सरल सृंगार
कोमल वेणुनाद हरि नर्तन किलकन हास प्रसार
कोमल नूपुर किंकिन धुनि बुनि अनत अनंद लुभाव
नटखट नट नागर नित नूतन नचत नचावत संग
दुरत प्रगट सुरझत उरझत हरि अंग चातुरी रंग
चपल अंग अरु चपल केलि नित मिलन बिरह तरसावन॥
बाँको पाग बाँक सो पटको बाँको त्रिविध त्रिभंग
"कौशल" चाल माल उर बाँको, बाँको केलि उम
बाँको भक्ति भगत अभिलाषा बाँको रीझि रिझावन
श्री राधा संग रसिक शिरोमणि रसिकनि केलि तरंग
प्रेम पुजारी प्रीत उमंगनि युगल स्वभाव अनंग
प्रणय प्रमत्त भीजि एक रस रसिक प्रेम संचालन॥
मंथन करि हरि भक्त हृदय मंन जानि उमंग स्वभाव
पूरन करि अंतर अभिलाषा छवि धरि प्रगट प्रभाव
भावुक भाव श्रृंगार एक रस सुख समुद्र उलचावन

२१०

रूप रूप को लालसी अंग अंग श्रृंगार
रसिकन को रिझवान छवि बानक रूप बिहारि ॥
युगति कियो अंग अंग सज्यो तरुन रूप आकार
चाहत हरि रसकनि ललकि नित छवि तरसि निहारि ॥
हरि रीझैं नित रसिक मन, लखि लखि बारम्बार
रसिक रिझावन रूप नित कौशल कान्ह सृंगार

२११

जागहु प्रथम सृजन संगीत
रूप शब्द अह्लाद एक रस
　　　　　　हरि छवि परम पुनीत॥
झंकृत नूतन चंचल चेतन
　　　　　　सृष्टि सृजन रस झंकृत कन कन
काल जाल क्षण झंकृत नूतन
　　　　　　वेणु नाद हरि गीत॥
कम्पन मंथन गुंजन अविरल
　　　　　　निर्मल गहन गम्भीर सुकोमल
तीव्र तीक्ष्ण स्वर अंतर पलपल
　　　　　　आकुल शान्ति प्रतीत॥
श्रुति स्वर लय ते परे मधुरतर
　　　　　　सूक्ष्म तरंग झंकार सृष्टि भर
शुद्ध चेतना तरल सरोवर
　　　　　　अह्लाद नाद नवनीत॥
जागहु झंकृत करि अतंरतर
　　　　　　उन्मुक्त ज्वार उद्‌गार भाव भर
नूपुर मुरली ध्वनि झर निर्झर
　　　　　　हरि सौं हरि को गीत॥
हृद संगीत शुद्ध नव चेतन
　　　　　　प्रथम गीत "कौशल" करि कम्पन
तेहि सौं तेहि बस रस घुलि मंथन
　　　　　　रचहु एक रम्य गीत॥

२१२

जागहु आज मधुर संगीत
श्रुति स्वर लय ते परे अलौकिक निर्मल गीत पुनीत॥
केवल हरि छवि रस बनि गुंजन नाँचहु हृदय उम
सम संगत तेहि नर्तन अंगन चेतन गंग तरंग
एकहिँ लहर चहूँ दिसि व्यापै एकै प्रीत प्रतीत॥
पलपल हरि धुन भाव लहरिया तैसो चित्त उमंग
जैसो सूक्ष्म भाव परिवर्तन तैसो हृदय तरंग
पंकज भाव सरोवर लहरे, जेहि तरंग हरि गीत॥
एकहिँ भाव रूप रस चेतन एकै एक प्रभाव
हरि रस गुंजन हृदय किंधौँ हिय कम्पन सौँ हरि
एकहिँ चलन मिलन संचालन नर्तन गायन रीत॥
जैसो ध्वनिमय लहर रूप हरि झंकृत सृष्टि अपार
तैसो तन मन लहरन गुंजन मादक नाद प्रसार
''कौशल'' सुनि सुनि तरल मधुर धुनि नचै सृजन संगीत

२१३

जागहु मानव प्रबल प्रवीन
हरि छवि छिटकनि लखहु चतुर्दिसि चंचल सजग नवीन।
देखहु ललित रूप हरि नर्तन प्रमुदित प्रकृति प्रमो
सरल तरंगन नर्तन लहरन चेतन तरल पयोध
दिव्य माधुरी ''कौशल'' अविरल सृजन सरोवर
उठहु उठहु निज तेज लहहु करि मानस सजग प्रबुद्ध
हिय के भव्य भवन हरि नर्तन देखहु चेतन शुद्ध
मानस हिय अरु तन मन अंतर ज्योति पुंज आसीन॥
जागहु छाँड़ि निरंकुश तन्द्रा तुच्छ प्रवृत्ति प्रसंग
एक बारि उठि नाचु तरंगन मुरली निर्मल गंग
पावन प्रकृति नवल छवि निखरहिँ धुलि धुलि दो
देखहु हृदय खिल्यो नव पंकज छवि रवि उठ्यो अकास
आदि नाद हरि चेतन झंकृत निर्मल सहज विकास
जागहिँ चेतन जागहिँ जीवन हरि रस छवि तल्लीन

२१४

खोजत हौं मैं हरि को हर पल

सोवत उठत जागते ढूँढ़्यो अंतर अविरल हलचल॥
कबहिँ भोर बनि चिरिया चंचल उड़त उमंग अकास
नवल कमल रस खिलत चेतना रवि छवि देखि प्रकास

आतुर हिय हरि खोजत सुन्दर षट्पद कम्पन चंचल॥
पुष्प प्रफुल्लित पुष्प गंध रस खोज्यो दिव्य अरूप
कबहिँ धान नव धानी अंतर चपल तरंग सरूप

खोज कर्‍यो छवि रंग बसंती सरसौं लहरत अंचल॥
कारो गहन बदरिया घर्षन रिमझिम बरखा अंग
पकरि पर्‍यो कछु हरि छवि चंचल सागर सलिल तरंग

हिमगिरि सजग घेरि सन्नाटा खोज्यो सरिता कलकल॥
पायो रसिक सुराग राग कछु भैरव कबहिँ केदार
मृदंग अंग नव ताल प्रकासित नटवर नृत्य बिहारि

कबहिँ स्वरोद सितार बाँसुरी कबहिँ तीव्र स्वर कोमल॥
पल पल अंतर बढ़त पिपासा हरि हिय कर्‍यो अधीर
छवि रस नीर दिखाय दुरायो जाहि बढ़ै हिय पीर
खोजन निकलि पर्‍यो जब "कौशल" लखिहौं नर्तन चंचल॥

२१५

हरि दर्सन बिन अँखियाँ तरसी

हृदय वेदना जानि सक्यो नहिँ कैसो यहि समदरसी॥
ना जानौं छवि कहाँ कौन विधि प्रगटत दुरत खिलारि
क्यों नहिँ दृग हिय अंतर प्रगट्यो अब लगि नृत्य बिहारि

अनुरागी हिय अमित लालसा बुँदिया नयनन बरसी॥
कमल गुच्छ उर नचत सुकोमल प्रमुदित पावन रूप
भरि कम्पन छवि हरि आभासित भँवरन गुंज स्वरूप

कबहिँ धुंध हरि छवि तुषार भरि लेत हृदय को छरसी॥
हिय अनुभूति व्योम हरि नर्तन तारा पुंजन वीथि
खोज्यो कबहिँ जीन अणु अंतर फँसि फँसि तर्कन कीच

धुँधलो सौं हरि ललकि छलकि छवि विकट कबहुँ लघुतरसी॥
हिय आभास सरल मन चेतन हरि तेहि नित्य विलास
नर्तन अंतर मंद मंद पग हरि छवि करत उजास

"कौशल" हिय कल्लोलन हलचल शुद्ध प्रीत आतुरसी॥
क्यों नहिँ शुद्ध रूप हरि प्रगटत काढ़ि दुग्ध सौं नीर
क्यों नहिँ प्रगट दरस बहुरंगी मादक रूप अहीर
ताहि सरल वेष दिखरावहु जेहि छवि अँखियाँ तरसी॥

२१६

त्रसित हियो नहिँ पायो धीर

दरस बिना रस सूख्यो अँखियाँ प्यासो अधिक अधीर॥
अपनो रंग चलायो गढ़ि गढ़ि अगनित कागद नाव
थोरो सो बढ़ि घुरि तन डूब्यो बिगस्यो बनो बनाव

मास्यो हाथ पैर तैरन को गहरो सागर नीर॥
खिन्न अंग दुःख "कौशल" तन मन विचलित अंतर आस
जटिल जरा अब जास्यो अंतर सोख्यो नेह पिपास

तीखो ताप ताव पर लायो अंतर वाह्य सरीर॥
क्यों नहिँ अबहिँ दरस रूप हरि कीन्हों जतन अनेक
आभास आस जिज्ञास कल्पना निर्मल भाव विवेक

गिस्यो हताशहिँ ताश महल जब टूट्यो एक जंजीर॥
दरसन कबहिँ होयगो हरि छवि प्रमुदित अलख अगात
केहि दिन छींट परेगो छवि रस तपित हृदय इस्पात
केहि रस कमल खिलेगो अंतर ज्वाला जास्यो नीर॥

२१७

हरि छवि खोजन निकलि पस्यो तन

हिय अनंत जीव जिज्ञासा दिन प्रति प्यास बड्यो मन॥

जटिल गुणित गणित गुण गणना नापि रूप श्री अंग
घोरि घोल छवि रूप रसायन परख्यो अंग सुड़ंग

देख्यो वृहत् दूरबीन ते, लघुतर भेद कस्यो कन॥

निरख्यो पल पल नृत्य यंत्रवत जटिल काल को ताल
रूप देस संग काल जोरि तेहि बुनि बुनि कारन माल

पुनि सापेक्ष देस काल करि ज्योति प्रमान कियो घन॥

कबहिँ शक्ति सौं कबहिँ रिक्त सौं अणु संग रूप तरंग
अणु विभक्त शक्ति विस्फोन विलगन मिलन अभंग

कबहीं जीन क्रोमसम अंतर हरि छवि झलकि पस्यो

बुद्धि ज्ञान विज्ञान तर्क चढ़ि नाप्यो सागर तीर
केवल तीर नापि करि चाह्यो मापन गरिमा नीर

पट रहस्य एक ज्यौं खोल्यो दूजो निकलि पस्यो तन॥

तब "कौशल" बसि नंदगाँव हिय चख्यो रूप आन
हरि बोल्यो अंतरमन बसि क्यौं फस्यो तर्क के फन्द

मेरो अनत वास बृज वन वन देखहु रूप खरो मन॥

रस माधुर्य ललित छवि छनि छनि प्रगट्यो अंतर कुंज
हिय कपाट खुलि लख्यो सरल मन निर्मल ज्योतिपुंज

प्रमुदित बहै रूप हिय अंतर विस्तृत सृष्टि भस्यो घन॥

जैसो हरि हिय रस कल्लोलन तैसो सृष्टि अकार
गणित रसायन ज्ञान तर्क तेहि जाँचत रूप प्रसार
जो हरि छवि नव लखन लालसा रस आनन्द धरो

२१८

कैसो करूँ पूर्ण विश्वास
जो हरि कबहिँ प्रगट दरस नहिँ, तेहि सौं कौन लगावे आस ॥
जो नहिँ कबहिँ अँगुरिया थाम्यो, करहुँ समर्पन केहि विस्वास
जो नहिँ कबहिँ जगत दुःख चाख्यो, जटिल कर्म तेहि कठिन प्रयास॥
जो नहिँ हास्यो कबहिँ लराई, "कौशल" अपनो प्रियजन नास
केहि बिधि मम दुःख जाने तेहि हरि, कैसो करौं ताहि विस्वास ॥

२१९

क्यौं काँपत व्याकुल अन्तरमन
क्यौं नूतन अनिष्ट आशंका, शिथिल करत तन जीवन ॥
क्यौं नहिँ दृग खुलि उठत लखत जग, दुखिया अंतर मूँदत नयनन
क्यौं नहिँ पट अंतर दृग खोलत, इच्छित नहिँ अपनो दुःख बाँटन ॥
क्यौं पल पल मन हृदय वेदना, ले उछ्वास तरल दृग रोदन
क्यौं बिलखत मन व्याकुल पीढ़ा, काँटो चुभन घाव अन्तरमन ॥
क्यौं विश्वास करत नहिँ हरि पद, निश्चित सकल वेदना मर्दन
क्यौं नहिँ "कौशल" दुःख आशंका श्री हरि पद यहि करत समर्पन ॥

२२०

मेरो दुखड़ो अमित अपार

पल पल चिंतन करयो लिछमन अंतर रूप अकार॥
दुई पैसो को कबहिँ रोवनो मानस अंतर कष्ट
त्रासित राज समाज दुखित मन अहंभाव सौं भ्रष्ट

कबहिँ विमोहित बन्धु बांधवन त्रसित कियो परिवार॥
पतन उदय मन क्षीण बुद्धिबल सबहीँ दोष निमित्त
तन मन तरपन व्याकुल अंतर हिरदय मानस चित्त

कबहीँ अंतर भ्रमित पिपासा दुखड़ो नयो प्रसार॥
कबहीँ दीन क्षीण सौं धरती देख्यो दुखित भयो
जटलि कर्म भाव जिज्ञासा दुविधा त्रसित कियो

कबहीँ करुण भाव हिय व्याकुल कबहीँ नयो विचार॥
ज्यौं चाख्यो हरि छवि रस अमृत खोल्यो हृदय कपाट
इन्द्र धनुष हरि नृत्य लख्यो छवि लघुतर लहरि विराट

रंग रूप रस भेद एक छवि सुख दुख चेत विकार॥
कबहीँ दीन दुखी बनि नाचत कबहीँ दीन दयाल
कबहिँ पतित बनि पतितन पावन, कबहीँ मूढ़ सुजान
पाप पुन्य सुख दुख परिवर्तन केवल नृत्य अकार॥

२२१

दरस भयो नहिँ अब लगि हरि छवि

बाट जोहते अँखियाँ थाक्यो दूर पास कहुँ दीख्यो नहिँ हरि॥
ज्योतिर्बिन्दु ध्यान योगासन तर्क ज्ञान अनुमान
भेद विभेदहिँ छिन्न रूप करि हरि छवि रह्यो अजान

अंतर तान सुनाय पुकार्‍यो चढ़ि चढ़ि निर्जन हिमगिरि॥
ललित प्रीत अनुराग सबहिँ करि अंतर छाँड़ि विराग
निरस बालुका कन मन जाग्यो पल्लव पुष्प पराग

हृदय पुष्प मधु छल्क्यो अविरल प्रगट्यो नहिँ हरि छवि भरि॥
विचलित शिथिल अंग मन व्याकुल अब नहिँ धार्‍यो धीर
झुलसि ताप अश्रु अब अँखियाँ पीर सुखायो नीर

क्योँ नहिँ हरि कीन्हौं आलिंगन छिप्यो कहूँ मन छरि छरि॥
कियो नाहिँ यह तन मन अर्पन हरि रस भाव विभोर
किन्धौं जर्‍यो नहिँ अहंभावना जकरत प्रान मरोर

रसिकन "कौशल" किंधौं उरझि मन पायो नाहिँ समय हरि॥
जाहि रूप हरि दर्सन पाऊँ जाहि वेष रस भाव
करिहौं हरि रस तन मन अर्पन भरिहौं ताहि सुभाव
सिखिहौं निर्मल हरि सौँ नर्तन छवि सागर हिय भरि भरि॥

२२२

हरि क्यों नहिँ मुँहि नृत्य सिखायो
तुँम्हरो कबहिँ रह्यो लाड़लो, अब क्यों मोहिँ खिजायो
नन्हाँ सौं यहि पकरि हाथ नहिँ अपनो नृत्य नचायो
छोटो पग नहिँ बाँधि घुँघरू नर्तन ताल धरायो ॥
ले दे मुँहि इक छोट काछनी नवल नृत्य हुलसायो
पकरि लेहु मम छोट अँगुरिया नाचन सीख सिखावो
कबहिँ रह्यो तुम नन्द लाड़लो बालक हठहिँ जतायो
मैं भोलो बालक नहिँ जानौं हठ केहि बात मनावौं ॥
छन "कौशल" झकझोर प्रीत रस हरि मुँहि अंग लग
रस आनन्दित पकरि बाँह मुँहि विपिन खिलारि नचाय

२२३

जब कृपालु मोंहि कृपा कर्‍यो छन
जो कछु बन्द चित्त पट अन्तर, अपनोई आप खिल्यो मन॥
प्रथम चार पग चल्यो तर्क चढ़ि पुनि धायो अनुमान
उलटि तर्क नव पायो छाँट्यो, खोज्यो नयो प्रमान
सूधो चलि उलटे पग धायो, आगे बढ़त चल्यो तन॥
नव रहस्य उत्कलीन पल पल, लांघ्यो अन्तर द्वार
तेहि अन्तरतर गहन गूढ़तर लख्यो रहस्य अपार
पुनि रहस्य तोड़ि मर्यादा, लांघ्यो भटकि पर्‍यो छन॥
बीथी बीथी चलि हरि खोज्यो, नहिँ रहस्य को अन्त
खोजत अन्तर थक्यो बुद्धिबल, नहिँ पायो छविवंत
नित नव रूप रेख हरि गढ़ि गढ़ि, अपनो रंग भर्‍यो मन॥
तेहि छन कृपा सिंधु मोंहि चीन्हों, करि मन मानस शुद्ध
कमल मुखाकृति रूप प्रगट हिय, अंतर बुद्धि प्रबुद्ध
जो कछु उलझि रह्यो हिय गुत्थी, खुलि खुलि अलग पर्‍यो छन॥
एक एक लघु निकर्‍यो अन्तर, दुविधा मानस द्वन्द
मद मद मन कौशल व्यापो केवल रूप अनन्द
तर्क ज्ञान अनुमान एकहिँ पुष्प फर्‍यो मन

२२४

नित नव नर्तन चारहुँ ओर

सर्व व्याप्त हरि अनत रूप धरि छवि को ओर न छोर ।।
अमल कमल हरि,तरल सरोवर चंचल सरल समीर
वहै गंध हरि पवन झँकोरन भृंगी प्रीत अधीर

प्रीतम प्रिया प्रीत को बंधन, आकर्षन को जोर ।।
वहै पयोनिधि वहै पयोधर पवन चलन अनुकूल
बूँदि बूँदि करि हरि छवि बरसन नदिया भरत दुकूल

त्रसित अवनि हरि वहै पिपासा तृप्त करत झकझोर ।।
मधुर विकास विलास पुष्प हरि प्रमुदित झूलि उमंग
पावन पाहन वहै तुंगधर निर्मल शीतल गंग

वहै चन्द्रमा वहै चाँदनी आतुर चपल चकोर ।।
वहै जीव अरु जीवनलीला, जीवन शक्ति अनंत
झरत भरत अनवरत रूप धरि छवि तरंग छविवंत

वहै चित्त अरु वहै चेतना वहै चतुर चितचोर ।।
वहै आस जिज्ञास पिपासा समाधान विस्वास
वहै भाव उद्गार कल्पना पावन प्रीत विकास

हियरे अंचल हलचल चंचल भावुक भाव विभोर ।।
वहै दृष्ट अरु दृष्टि दृगन हरि मानस बिम्ब अकार
वहै बुद्धि अरु बोध ज्ञान पुनि ज्ञाता ज्ञेय प्रकार

विस्तार विचार अपार सृष्टि छवि झाँकत बुद्धि सिकोर ।।
नित्य चराचर नृतन मगन हरि चंचल लहर उदंग
"कौशल" हरि लहरन नृत लहरत हरि छवि निर्मल गंग
नित छवि डूबि नवल छवि उभरत रस आनंद विभोर ।।

२२५

नयन मूँदि बहु छवि प्रगटाई
अनत रेख पल हलचल चंचल कोटिन कोन नचाई ।।
चतुर्वर्ग नृत वृत्त रूप पल तनि त्रिकोन विलगाई
नचत अकार अनंत अनियमित मानस पटल समाई ।।
श्याम भीति तेहि ऊपर चित्रित कोटि रंग बिखराई
ढोलत द्रुत पल तरल धवल तन पीत संग इठलाई ।।
कबहिँ अरुन नव पुष्प खिलन अरु सिकुरन रंग लुभाई
भ्रकुटि बीच पल अनत मनोहर रंग गंग लहराई ।।
मंद मंद घन फट्यो सबहिँ रंग रूप रेख बिलगाई
तेहि अन्तर द्युति "कौशल" निर्मल इन्दु बिन्दु प्रगटाई ।।
छूट्यो देस काल दृढ़ बन्धन हृदय विकार नसाई
स्वयं प्रगट छवि बिन्दु मध्य हरि सुंदर कुँवर कँन्हाई ।।

२२६

एक बारि कछु दरस दियो छवि सुन्दर रूप कँन्हाई
नचत मगन तन अपनो धुन मन हरि चीन्हौं सुखदाई ॥
मिल्यो ताल सौं ताल कौन छन कहाँ कबहिँ हुलसाई
हरि सौं नृत्य लास नच्यो तन अंतर बोध गँवाई ॥
शुद्ध गंग उत्ताल तरंगन छवि रस तरल बहाई
कंगन नूपुर झनझन तन मन नव उमंग हुलसाई ॥
नाचि ताल लय रंग प्रफुल्लित निर्मल अंग नचाई
देस काल पल विपल बिसरि संग नाच्यो कुँवर कँन्हाई ॥
मैं हरि बन्यो बन्यो हरि मौंसौं भीनो भाव सुहाई
ना जानौं लीला हरि छल बल रस भरि रसिक लुभाई ॥
छवि सागर आनन्द हिलोरे अन्तर छवि मंड़राई
जो जब फँस्यो नृत्य मंडल हरि "कौसल" पार न पाई

२२७

छवि अनन्त आकार बिहारी
पल पल नर्तन नव रस अन्तर
अनत रंग श्रृंगार निखारी॥
कबहिँ ज्वार उन्माद अंग हरि
संसृत लहरि उमंग वेष धरि
दौरि नीर द्रुत उठत नमत छवि
कम्पन लहरन अंग सुखारी॥
कबहिँ अनत रसधार गंग भरि
अविरल चपल प्रवाह बहति छवि
एक दिसा लय दौरनि निर्झरि
दुई छोरन मिलि वृत्त निखारी॥
नव हिन्डोल पैंग हरि झूलनि
उठत उलटि छवि दूजे छोरनि
सिकुरन व्यापन फागुन सावन
भाटा सागर ज्वार प्रसारी॥
सृजन एक छवि अंग लुभावनि
उलटो तुरत रूप हरि मोहनि
दोऊ घुरि नव रूप सुहावनि
त्रिविध श्रृंगार त्रिभंग बिहारी॥
चंचल एक दिसा नृत्य करि
घूमि घूमि ज्यों बेल चढ़त हरि
पुनरावृत्ति उलटि बढ़त छवि
"कौशल" राधा रूप निहारी॥

२२८

हरि दर्सन अँखियाँ अभिलासी

चहुँ दिसि हरि छवि झूलन देख्यो औरे देखन प्यासी॥
श्यामल रंग रंग्यो दृग अंतर दर्सन केवल श्याम
अनत रंग घुलि संसृत लहरन एकहिँ रंग सकाम

तरल तरंगी छवि बहुरंगी श्यामल सरल सुधासी॥
प्यास बुझ्यो नहिँ रसिक हृदय मन नयनन आस लग्यो
केहि छन कैसो प्रगट हौंय हरि कैसो नृत्य जग्यो

नित्य नयो श्रृंगार चातुरी आतुर नयन विलासी॥
हरि चंचल सुषमा रस "कौशल" तैसो चित्त हुलास
हरि छवि लखि नहिँ तृप्त हृदय नित जागत नवल पिपास

कैसो छवि अभिव्यक्ति आज तेहि कैसो रस अविनासी॥
कब लगि चलन चलैगो ऐसो तरसन हृदय अकेल
शिथिल अंग अब नाचि थक्यो यहि तेरो नर्तन केलि
कब लगि आस विलास पिपासा कब लगि दृग अभिलासी॥

२२९

क्यों लखि सोच पर्‍यो हरि अंतर मेरो दुखित प्रसंग

मौसों अधिक पर्‍यो जग कितनो निर्मल काज सुढंग॥
ना छवि अधिक प्रीति रस पूरन तीखो पण्डित ज्ञान
ना दृढ़ योगिराज सौं निश्चल कर्मठ कुशल सुजान

पग फँसि चुभ्यो क्षुद्र सौं काँटो, सुमिर्‍यो अनत अभंग॥
नित कृपालु चित अमित बड़ोपन हमरी ओर निहारि
छोटो सो पग छोटो काँटो छोटो सो दुःख चारि

दौरत आयो तुरत पधारो, नहिँ आयो लाज अपंग॥
उधर पर्‍यो नव संसृत रचना तारा झुंड़ सपुंज
अबहिँ अधूरो नव छवि नर्तन कम्पन मुरली गुंज

आतुर दौरि पर्‍यो रस तजि सुनि मोरि पुकार असंग॥
ऐसो नृत्य करहु अब "कौशल" पकरि अँगुरिया जोर
पग सुधि बिसरि दुःख नहिँ काँटो नाँचहु भाव विभोर
तेरो नृत्य लास रस उरझौं ज्योतिर्पुंज तरंग॥

२३०

हरि छवि लखि हिय छलकि पर्‌यो पल
पायो मन हरि दर्सन रस, तेहि बाँटनि ललकि पर्‌यो फल ॥
हरि कल्लोल मधुर मन अंतर, रस लालित्य सरल जल
कोष रंध्र तन अंतर झंकृत मुरली श्रुति स्वर कलकल
सरल वेष रस मादक अँखियाँ, सरसिज अधर चपल दल
मुसकनि बरसनि शुचि प्रकाश द्युति खंजन अँखियाँ चंचल ॥
सीमित हृदय असीमित छवि मन बाँधत बाँध छलकि
बाँटि बाँटि हरि रूप भाव निध प्रेम अनंदित अविरल
"कौशल" हरि छवि ललकि लालसा बाँटत बढ़त जलध जल
लेन देन क्यों चलन चल्यो हरि जेहि छन पलक पर्‌यो छल
एक ओर हरि छवि रस निर्झर दूजे बाँटनि हलचल
जो कछु कवि हिय पियत बन्यों तेहि बाकी छलकि

२३१

प्रभुजी आज करहु आलिंगन
हिय पिपास स्पर्श लालसा मन उमंग हिय कम्पन॥
देखन चहौं एक छन मूरति त्रसित वेदना मर्दन
करहु कृपा मम ओर निहारहु मुखरित उज्ज्वल लोचन॥
अपनावहुँ ज्यों त्यों मनमोहन "कौशल" दुःख विमोचन
एक बार प्रभु, एक बार बस करहु प्रीत आलिंगन॥

२३२

आज नच्यो हिय मदन गोपाल
ना जानो केहि कारन कीन्हौं मुँहि पर कृपा निहाल॥
अंतरतर कल्लोलन हलचल सहस रूप छवि जाल
अपनो आप छूटि छँटि भाग्यो जगत मोह जंजाल॥
ना अपनो तन सुधि औरन को चेतन नृत्य विहाल
परम प्रीत रस तन मन व्यापो एकै रूप गोपाल॥
नयन उघारे एक श्याम रंग धरती गगन पताल
मूँदि नयन लघु रूप माधुरी छवि कल्लोल विसाल॥
केलि नृत्य करि हाथ पकरि हरि पग धरि आपनि ताल
कब हरि नर्तन दूर दूरतर कर्षन हृदय विहाल॥
पहिले छवि उरझाय फाँसि मन बाँधि प्रीत रस जाल
अब क्यों हरि मुसकात खिलारी करि "कौसल" कंगाल॥

२३३

हरि छवि नर्तन व्यापो तन मन
रोम रोम नव रूप प्रफुल्लित पुलकित पावन चेतन ॥
मूँदि मूँदि खुलि नयन लख्यो छवि कलकल मधुर विलास
अंतर मानस वसति मधुर रस शीतल तरल प्रकास
धवल कमल हिय खिल्यो सहज तेहि ऊपर हरि पद नर्तन ॥
मुरलि नाद लय हृदय कलोलन कोमल तीक्ष्ण गम्भीर
मादक अमिय मंद गंध तन अंतर वाह्य सरीर
ना जानो कब तन मन अंतर चेतन हिय परिवर्तन ॥
जेहि विधि नील गगन घिरि व्यापत श्यामल बदरी छोर
तैसो ही हरि घेर्यो तन मन "कौशल" मानस मोर

२३४

वहै रूप फिरि फिरि लखौं, वहै अंग अभिराम
अखियाँ मूँदत खुलत नव छवि देखहुँ घन श्याम॥
गृह अंतर नाचत कबहुँ, नचत बाहरे द्वार
तरु नीचे हरि ड़ोलनो, "कौशल" कुंज बिहार॥
पुरवइया पूरब चल्यो, पच्छिम ते पद्दियाव
हरि छवि लहरन घेरि चहुँ, सकल सृष्टि बौराव॥
हिय अंतर धँसि धँसि नचै, वहै रूप बृजधाम
सहज सजीलो साँवलो, ललित नृत्य अभिराम॥

२३५

नयनन को मूँदि जब ध्यायो अंग रूप हरि
मोहन की मोहिनी यौं अंतर समाई है ॥
　　नख सिख रूप छवि अंकित श्रृंगार हिये
　　कम्पन तरंग तन अंग सुखदाई है ॥
चेतन उमंग रस झनझन अंग अंग
रोम रोम झूमे जल नैन मँड़राई है ॥
　　बाँसुरी की तान अनजान हिये घूम घूम
　　रस अलसाई हिय कंज हुलसाई है ॥
रंग हिय नयना बसि "कौशल" सुश्याम हरि
नैन नहिं बाँधे ज्वार छवि अधिकाई है ॥
　　अँखियाँ उघारे छवि छलकि उलचि परै
　　अंतर ते दौरि चँहु दिग मँड़राई है ॥
केहिके कहे केलि हरि कियो हियो बावरो
कौन सुख पायो कौन रस उँमगाई है ॥
　　जाहि रह्यो आपनो हर लीन्हो ठगि चातुरी
　　जमायो पूरो राज यहि कैसो प्रभुताई है

२३६

पुरवइय्या ऐसो चल्यो चल्यो चेत झकझोर
ना जानो केहि कोन ते हृदय धँस्यो चितचोर ।।
कोन छिप्यो अतंर हियो भर्यो कौन धुन तान
हिय स्पन्दन बाढ़ि घटि लहरत प्रान अजान ।।
पकरि पकरि हरि रूप छवि बैठ्यो हृदय सम्भालि
ना जानो कब लगि बसै चपल अंग टुनिहार ।।
पुरवइय्या फिरि फिरि चलै चलै बावरो नैन
"कौशल" हिय कल्लोल नित कबहिँ न आवै चैन ।।
जानो ना कैसो करूँ तन मन भाव स्वभाय
एक बारि जेहि हिय बसो कबहिँ न निकरो पाय ।।

२३७

माधव तेरे नैन बड़े
मेरो लधु नयनन के द्वारे फँसि फँसि आनि अड़े॥
चुभत दृगन मौंहि हृदय चुभत तेहि नयन कटार खड़े
हृदय धाव पीड़ा करि व्याकुल हलचल उथलि करे॥
धँसि धँसि हृदय दोष गुण परखे चेतन स्वास चड़े
हँसि हँसि ड़ोले रोम रोम तन "कौशल" नयन बड़े॥

२३८

हरि क्यों मोसों अधिक लगाव
चाहत तुरत अपन सौं करनो तन उमंग मन भाव॥
मधुर लिप्त मुरली नित गुंजन हिय तन्द्रा झकझोर
प्रगट झलकि पल पल छवि दर्सन, कर्षन चित्त चव
मंद मंद पग बसति धँसति छवि, हिय लसि ललित
कबहूँ स्वप्न प्रगट दुई बालक श्यामल गौर सरीर
तेज पुंज उत्साह खिलारी भोजन करत अहीर
भूख लग्यो माँग्यो फिर खायो बालक सहज सुभाव॥
केहि के कहे बस्यो हिय अंतर झंकृत मुरली तान
हिय उमंग चेतन स्पन्दन विस्मित चकित अजान
जो कछु भलो बुरो सब अर्पित हरि सौं कौन दुराव
जाहि वेष हरि मोसों रीझैं ताही वेष धरूँगो
जैसो हरि हृद नृत्य लुभावै तैसो ताल धरूँगो
"कौशल" हरि सौं नचिहौं नूतन, हरि के भाव सुभाव॥

२३९

भूख लग्यो हरि माँगत खाई
हरि सम्मुख जेहि प्रगट प्रीत रस तैसो भूख जताई॥
मँइया सौं दधि माखन रोटी माँगत कुँवर कन्हाँई
गोपिन छलि चोखो रस माँखन ललकि भोग हरसा
बेझर रोट छाछ रस पुलकित झूठो ग्वालन खाई
गैयन दुहि धारोष्ण दूध हरि पियत अनत सुख पाई॥
वन वन विचरि कंद मूल फल माँगत तरुगन जाई
माँगत पियत सूर्य तनया जल अंतर प्यास बुझाई॥
ठसक ठाठ बृजराज कुँवर रस राजभोग हरसाई
चौसठ व्यंजन षट्रस सेवा पान खाय मुसकाई॥
हिय अंतर मधु सरस भावना रसिकन माँगत जाई
रूख सूख कछु माँगहुँ "कौशल" भोगहँ कुँवर कँ

२४०

ऋब यहि तन बसिहैं बृन्दावन
बिसरि ज्ञान उन्माद कर्मफल हरि अर्पन करिहै अन्तरमन ॥
हरि सम्मुख सुख हरि बिछुरन दुख दूजो और न भाव
नित उमंग दरसन अभिलाषा "कौशल" आतुर चाव
लीला कुंज बिहारि बिहारिनि नित्य नृत्य छवि मादक पल छन
आँख उघारे लखौं श्याम तन स्वप्न श्याम को ध्यान
चलन मिलन जीवन संचालन मधुर श्याम गुनगान
हरि लीला रस सिंचित तन मन भीजि भीजि प्यासो अंतरमन ॥
राधे राधे श्री हरि राधे भोर प्रथम सुर तान
याहि धुननि मन रमन करै तन मधुर रसिक रस गान
पुष्प अंग नव पल्लव हरि संग राधा छवि नर्तन नित कन कन
केलि करन गोपाल लाल नित सहज सजीलो अंग
इकटक भाव विभोर नयन भरि देखहुँ सुषमा गंग
रसिक रूप छवि छकित छलकि रस पिये अमिय अंतररस पावन ॥
सुनि सुनि रुनझुन नूपुर नर्तन हिय नित उठहिं तरंग
चंचल हलचल नाचौं पलपल हरि सौं हरि के संग
हरि संगीत उतरि अन्तरमन धुननि अंग अनुरूप मगनमन ॥

२४१

बृज साँवरिया घर जाँऊ
ताहि रूप सुख श्यामल दर्सन नयनन हृदय बसाऊँ ॥
घनश्याम हमारो सखा प्रेम निधि अपनो भाव नचाऊँ
चुनि चुनि सुमन गूँथि बन माला रस शृंगार सजाऊँ ॥
हाथ पकरि डोलि घन वन वन बाजी मारि,हराऊँ
केलि लास पग धरि धरि नर्तन नव अनंद ललचाऊँ ॥
"कौशल" झगरि रूठि लुकि तरुगन हरि सौं दीठि चुराऊँ
पुनि हरि मधुर वेणुनाद सुँने सुख दर्सन ललचाऊँ ॥
हृदय अनंदित सखा श्यामघन निसिदिन टेरि बुलाऊँ
जितनो पाय सकौं छवि अमृत साँवरिया बृज पाऊँ ॥

२४२

ज्यौं ज्यौं बरसि रह्यो घन सावन
हिय अंतर उठि ललकि लालसा
नाचौं वन वृन्दावन ।।

कुंजन कुंजन हरि स्वर गुंजन
हरि छवि नर्तन हरि रस सिंचन
देखौं सरल रूप हरि नयनन
बस एकै भाव मगनमन ।।

यहँ कहँ विचरत संग गोधन
सरल श्रृंगार दिव्य चारु तन
गावत स्वर तल्लीन मगन मन
ज्यौं मेघ हुँकारत सावन ।।

सूर मल्हार वेणु नाद स्वर
पवन झँकोरन बहत अपरतर
उलटि मेघ गुंजार मधुर कर
मधुमय कम्पन वन वन ।।

गहन मेघ छाया श्यामल वन
बादर बरसत बूँदन बूँदन
धूप छाँह कल्लोल करत घन
ज्यौं श्याम राधिका पावन ।।

वहँ कहँ बसि वास करै मन
श्री श्याम राधिका वास जाहि वन
नित हलचल हिय अंतर "कौसल"
यहि बढ़ि बढ़ि बरसे सावन ।।

२४३

क्यों हरि मोंहि लुभावत सावन
लखि लखि छल बल तुरत बुलावन
ना जानो केहि कारन॥
रस हिंडोल पैंग भरि डोलनि
नव उल्लास लास हिय घोलनि
मंद मधुर कछु अंतर बोलनि
यहि हरि लोभी रूप लुभावन॥
कबहिँ दूर स्वर टेरि पुकारयो
नव हिंडोल चढ़ि झूलि झुलायो
प्रगट अंग छवि कबहिँ दुरायो
हरि पीरा क्यों देत दुलारन॥
नाद मुरलिया लहरन अविरल
निश्चल हिय जल कम्पन पल पल
धँसि अंतर झकझोरन छल बल
रसिकन रस आनन्द सुहावन॥
"कौशल" नृत हरि जकरि लपेटन
ना छवि प्रगटन ना मन छोरन
सावन बरसन छवि रस बोरन
निठुर केलि खिलारि खिलावन॥

२४४

मेरो मन नहिँ कहुँ सुख पावै
अंतर बाँधि पकरि जोर गृह, पुलकि पुलकि पल पल बृज धावै ॥
छवि मूरति हरि मादक झाँकी इकटक रस देखन ललचावै
हरि नयनन छवि नयनन भरि भरि हिय गागर अंतर हुलसावै ॥
परम रूप छवि "कौशल" कन कन तरुवर पुष्प दूब छलकावै
ऐसो मधुर रसिक रस लीला देखन हिय पल पल बृजधावे

२४५

फिर हरि मोंहि झुलावहु सावन
जेहि झूलनि रस अलख रूप छवि लहरत वन वन क

बदली बरसन छवि रस उलचन, धरती गंध सुहावन
मधुर मल्हार मेघ आह्वाहन, वेणु गंग लहरावन
जेहि रस झूलनि नाद चेतना, झंकृत सृष्टि लुभावन
रस अनुभूति चेतना सुषमा, छवि उन्माद प्रभावन
ऐसो झूलनि बसि वृंदावन, फिर हरि मोंहि झुलावहु

धानी पाग छींट अंगरखा, पटका धानि सुहावन
घूँघर केस कंज गलमाला, पैंग तरंग डुलावन
राधा अंगन धानि चुँनरिया, गौर अंग झलकावन
झूलन पैंग हिंड़ोरे चंचल, मदन मंद मन भावन
ऐसो ललित हिंड़ोल तरंगन, फिर हरि मोंहि झुलावहु

राधा सुषमा होड़ चंचला, दूजे छोर झुलावन
पुनि समरूप रूप धरि झूलनि, मंद पैंग लहरावन
राधा सौम्य कृष्ण चंचला, उलटि स्वभाव सुहावन
रसिकन चकित चेतना पल पल, रस उमंग उलचावन
आदि रूप वृन्दावन झूलनि, फिर हरि मोंहि झुलावहु

जेहि झूलनि हरि हृदय उमंगनि प्रीत भाव ललचावन
हृद अंतर कल्लोलन झूलन, "कौशल" हृदय लगावन
जेहि झूलनि हरि जोर छोर दुई, मंथन सृष्टि झुलावन
जेहि झूलनि नित देस काल चढ़ि, बुनि निमित्त लहरावन
ऐसो वेग पैंग जोर हरि, बढ़ि बढ़ि मोंहि झुलावहु स

२४६

फिर ते नृत्य करहु नन्दनंदन
बहुत दिवस नहिँ ललित रूप हरि प्रगट अंग छवि दर्सन ॥
मुरलि नाद नहिँ सुन्यो काल बहु हृदय वेदना मंथन
यमुना तट नहिँ रास अनंदित ज्वर आह्लाद तरंगन ॥
"कौशल" नहिँ सावन मधु झूलनि, नहिँ फागुन रस बरसन
वन वन विचरन गोप ग्वाल संग नहिँ गैयन रस दोहन ॥
प्रणय पयोनिधि छल बल मंथन अमिय गंग रस बरसन
नाहिँ श्रृंगार नयो रस लीला अंग अंग आकर्सन ॥
क्यौं सब बिसरि रूप नन्दनंदन प्रणय वेदना मर्दन
मंजुल छवि फिर रूप लहहु तन नाचहु वन वृन्दावन ॥

२४७

आज भटकि बृज मंडल आयो
ललकि अंग हरि धाम
यहँ कहँ नव नृत्य करत मोंहि
दरस देहु घनश्याम ॥
हरित सघन वन धन वृंदावन
नंद गाँव सुंदर ज्योतिर्मन
पुन्य भूमि गिरिवर गोवर्धन
सुखमय नव सुषमा अभिराम ॥
जन्म पुनीत राधे बरसाने
झूल्यो गढ़ विलास मनमाने
मधुवन गोधन बसि हरसाने
सुन्दर हरि शोभित बृजधाम ॥
वेणु नाद उन्माद नृत्य हरि
गावन गहन गम्भीर नाद भरि
पुष्पमाल श्रृंगार सहज धरि
प्रभुपद नित डोलन रसधाम ॥
अजहुँ नचत बसति हरि बृजवन
हिय अनुभूति करत अंतरमन
माँनहु अबहिँ प्रगट होहिँ तन
कौशल बृजवासा

२४८

याद करहु हरि कुँवर कन्हाँई
जमुना तट जब रह्यो अकेलो मोसों प्रीत जताई ।।
दियो दरस रस अंग प्रफुल्लित परम रूप अधिकाई
दिव्य माधुरी ललितम् मधुरम् सुखद प्रीत उमगाई ।।
बिन मुरली मुरली स्वर गुंजन तरल अनंद बहाई
विस्मित चेतन नच्यो मगन मन स्वर लहरी लहराई ।।
नच्यो चेतना सकल प्रीत रस पावन गंग नहाई
अब क्यों भूलि गयो रस लीला "कौशल" कृष्ण कन्हाँई ॥
यमुना तट तेहि बाट जोहतो आवहु कुँवर कन्हाँई
युग बीते मादक रस लीला देहु अनन्द सुहाई ।।

२४९

तरल अनंद अंग हरि पल पल
वेणुनाद लय गुंजन
एक मधुर स्वर चंचल लहरन
पवन झंकोरन वन वन ।।

धरती झंकृत वेणु नाद हरि
गुंजत अम्बर मेघ जोर भरि
मोर पपीहा तीक्ष भाव स्वर
नित नाचत तरल तरंगन ।।

हरि नर्तन धुन नूपुर झनझन
श्री राधा कर झंकृत कंगन
चपला घर्षन चहुँ दिसि कम्पन
रस सकल सृष्टिलय नर्तन

बदरी बरखा बरसन निर्झर
पवन झँकोरे और जोर भर
तेहि संग थिरकन नाद चेत स्वर
तन धरती अम्बर कनकन ।।

वहै विलास आज वृन्दावन
जो संसृष्टि करत आनंद घन
यहि छवि देखि सक्यो "कौसल" छन
चित चकित चेतना तनमन ।।

२५०

कैसो मधुर रूप लखि पावन
परमानन्द प्रफुल्लित "कौशल" विचरि रह्यो वन वन वृन्दावन ।।
कौन पुराकृत पुन्य जग्यो जेहि आज लख्यो बृजधाम मँझारन
बृज मंडल बृजराज कुँवर छवि ललकन पुलकन अंग सुहावन ।।
मधु मुसकान बाल छवि चंचल बृजरज लिपटि लिपटि तन झारन
बृज वनिता कर गोद झूलनो, बिहँसि बिहँसि पल पल किलकारन ।।
ठुमकि ठुमकि चलि लरखराय पग अंग मरोरन तन इतरावन
दौरि दौरि छन रुकि रुकि साँवरि बैठि पौढ़ि वृजरज हुलसावन ।।
निज नयनन जेहि देखि सक्यो यहि परम रूप मन चेत लुभावन
तेहि तन मन नहिँ और ठौर कहुँ, पल पल पुलकि पुलकि बृज धावन ।।

२५१

हरि छवि केहि दिसि देखौं भाई
जैसो झुकि मुरि झाँकहुँ हरि तन, तुरत टेड़ ह्वै जाई॥
सूधो पग सूधो कटि ग्रीवा सूधो कृष्ण कन्हाई
देखत तेहि रसिकन दृग झाँकन, तुरत अंग मुरि जाई ॥
कछु टेड़ो कटि टेड़ो ग्रीवा, टेड़ो पग धरि जाई
टेड़ो नयन टेड़ सौं मुसकनि, टेड़ो दीठि गढ़ाई ॥
टेड़ो करि मुरली कर पकरनि, अँगुरी टेड़ नचाई
टेड़ो स्वर मंतर लय लहरनि, नमन उठनि मँढ़राई ॥
कैसो यहि टेड़ो रस लीला, वक्र विषम चतुराई
सूधो हिय टेड़ो छवि फँसि फँसि, "कौशल" निकरि न पाई ॥

२५२

झाँकि झाकिँ नित देखहुँ झाँकी
बाँको रसिक गोपाल
कन कन अंतर पल परिवर्तन
लघुतर रूप विसाल
मन छवि रसिक बाट जोहतो
नयनन प्रान विहाल
दौरि चलहु नित पान करहु छवि
छक्यो तबहिँ कंगाल ॥
मुरलि अधर धरि नृत्य लास करि
सुन्दर रूप ललाम
रस सम्मोहन लहर बावरो
नृत्य अंग अभिराम
वेग बुलावहु नूतन सिखावहु
रस पयोध घनश्याम
बृज रज रम करि दरस होय हरि
"कौशल" बसि बृजधाम

२५३

पूरन रूप नित्य अविनाशी ॥
श्री सुषमा हरि सुन्दर अविरल
संसृत सबहिँ समोहित निर्मल
प्रगट रूप वृन्दावन भूतल
गोकुल पूरक पूरन झाँकी॥
प्रीतम पूर्ण प्रीत रस सरवर
"कौशल" स्रोत प्रेम जल निर्झर
श्री राधा परिपूरक गागर
अंतर भरन प्रेम रस रासी॥
रसिकन रसिक लास परिपूरन
छलकत झरझर अविरल नूतन
बिन रसिकन रस भाव अकारन
रीझि रिझावन रूप विलासी॥

२५४

पुरवइया को रोकि इन, रोकि रोकि पद्दियाव
सून्य जगत मँहि आज हरि, मुरली फूँकि बजाव॥
बहुत सुन्यो मुरली मधुर टेरि टेरि ललकार
हृदय जीर्ण थकि शिथिल तन, अब नहिँ और पुकार॥
चेत शून्य उन्माद थकि, थक्यो कल्पना सार
हृदय बीन झंकार नँहि, कम्पन पारावार॥
अब "कौशल" बस रूप छवि, लखौँ नयन उजियार
शान्त चित्त मधु मंद रस लहर प्रेम सुकुमार

२५५

मेरो मन बसि नित वृंदावन।।

रूप पालने छलकन पल पल
तेहि कम्पन रस ललकन चंचल
दिव्य माधुरी ढ़लकन निर्मल
ड़ोलन अंतर पावन॥

प्रात उठन वन धावन ललकन
गैय्यन दौरि चरावन वन वन
वेणु नाद लहरावन कन कन
गोधन ग्वाल हँकारन॥

श्री राधा संग नर्तन निर्मल
प्रीत पैंग भरि ड़ोलन अविरल
झगरि बाँधि सम्मोहन छलबल
चेतन चित्त चुरावन।।

भीर गोप गोपिन को पावन
दरस देन नव छवि धरि आवन
"कौशल" नव श्रृंगार लुभावन
रसिकन रसिक सुहावन॥

२५६

बूझत आज कृष्ण हुलसाई
कौन रूप मन रसिक लुभायो, धरिहौं ताहि रूप सुखदाई ॥

मैंया को मैं परम लाड़लो प्यारो बालक श्री नन्दराई
ढ़ीट लंगरवा ग्वालिन वनिता, लंगर अड़ि मन प्रीत जगाई ॥

टेड़ो दाँव केलि मन भावे, ग्वाल सखा खुलि खेल खिलाई
राधा संग सखि प्रीत कल्पना, कमल गुच्छ सौं मन हुलसाई ॥

गैयन तरुगन पुष्प प्रकृति मन, तेहि अनुरूप रूप सुखदाई
बन्ध्यो आज मैं प्रीत ड़ोर जेहि, जोर खींचि अंतर उमँगाई ॥

क्यों लुकि एक ओर झुकि झाँकत, लखि लीला मुँहि दीठ गढ़ाई
जेसो रूप लुभायो "कौशल", धरिहौं ताहि रूप सुखदाई ॥

२५७

मोह्यो हरि छवि बस्यो हृदय मँहि, सरल सुमन श्रृंगार
कमल किरीट मोर पंख लघु, लहरन बारम्बार ॥
कुण्ड़ल कंज पराग पुष्प झरि, कंध कपोल निखार
उर चढ़ि नव बैजन्ती गुंजन, मादक तुलसी माल ॥
कटि नव मधुर घंटिका सरसिज, सहज मेखला हार
नूपुर कंगन दुति बहु रंगन, पुष्प घंटि आकार ॥
श्यामल अंगन केसर चंदन, सावन बसति बहार
सुध बुध हरन मुरलि नाद स्वर, सरल भाव उद्‌गार ॥
याहि वेष बसि दरस देहु हरि, याहि रूप श्रृंगार
कौशल अतर सरल भावना प्रगटहु

झूलि सकहु तो झूलहु प्यारे
''कौशल'' नयनन दीठि हिंडोले
तरल कल्पना अंतर झूले
हृदय लालसा पैंग कलोले
अमिय चेतना गंग तरंगन,
झूलि सकहु तो झूलहु प्यारे॥

स्वास स्वास स्वर कम्पन झूले
झंझन नव स्पन्दन झूले
चित्त प्राण उन्माद हिन्डोले
जीवन स्वर संगीत उमंगन,
झूलि सकहु तो झूलहु प्यारे॥